द्रव्यसहायकोंके शुभ नाम—

४२५ शा० ताराचंदजी तगाजी, चूंडा, मारवाड.
१०१ शा० छोगमलजी नथाजी, चूंडा ,,
१०१ झवेरी—केसरीचंद कल्याणचद, सुरत.
१०१ शा० जीताजी खुमाजी, कवरारा, मारवाड.
१०० शेठ किसनलालजी संपतलालजी लूणावत, पाली, मारवाड.
५१ शेठ गणेशमलजी सोभागमलजी, मुंबई
५१ शेठ भीमराजजी देवीचदजी, तींवरीवाले, मुंबई.
५१ शेठ हरखचंद शिवजी, कच्छभुज.
५१ शा० भीकमचंदजी नवलाजी, चूंडा, मारवाड
५१ शा० फोजमलजी कपूरचंदजी, शिवगंज ,,
५१ शा० केसरीमलजी नरसींगजी, गुडाबालोतरा. ,,
५१ शा० माणकचंद थावरभाइ (स्वबंधु मोहनलाल थावरभाइके स्मरणार्थे), कच्छमांडवी.
५१ शेठाणी फूलकुंवरबाई, कलकत्ता.

५० शेठ मूलचंदजी सोभागमलजी फलोधीवाले, मुंबई.
४१ शा० मोतीजी उदाजी, पादरली, मारवाड.
३१ शा० खिमाजी छगनलाल, चूंडा. ,,
२५ शा० जेरूपजी लखाजी, चांद्राई. ,,
२५ शेठ फतेचंदजी सीहाल, पाली, मारवाड.
२५ शा० शिवाजी वाघाजी, खिवाणदी ,,
२५ शा० मोणसीभाइ वीरचंद, कच्छभुज.
२१ शा० सेसमलजी हंसाजी, पादरली, मारवाड.
११ शा० पूनमचंदजी गुलावचंदजी, दूझाणा, मारवाड.
५ शा० दलीचंदजी नाथाजी, दूझाणा. ,,
५ शा० रतनचंदजी धूलाजी, गुडाबालोतरा. ,,
५ शा० फोजमलजी केशाजी, सेवाडी. ,,
४ शा० प्रतापमलजी चुनीलालजी.
३ शेठ रिद्धिलालजी, मुउनवाला.

समर्पण—

बाल्लब्धिसमलंकृत विद्वत्शिरोमणि शमदमाद्यनल्पगुणगणरत्नभंडार अनुयोगाचार्य पन्न्यासप्रवर

परमपूज्य प्रातःस्मरणीय गुरुदेव श्रीमत् केशरमुनिजी महाराज !

आपने इस बालकको आबालकालसे निरंतर अपने पास रखकर ज्ञानादिक गुणोंमें स्थिर रहनेके लिये जो अनुपम प्रयास किया, हरएक वखत विविध प्रकारकी शिक्षाओं द्वारा उन्मार्ग प्रवृत्तिसे बचाया, और पाषाणसम हृदयकोभी ज्ञानांकुरोंसे पल्लवितकर साहित्यसेवाका अनुरागी बनाया, इत्यादि असीम उपकारोंकी स्मृतिमें आपकाही संपादित व संशोधित और आपके ही अमृतमय उपदेशसे प्रकाशित होता हुआ यह ग्रंथरत्न "श्रीपाल राजाका रास" आपहीके स्वर्गीय पुण्यात्माको विनय भक्ति श्रद्धापूर्वक विनम्रभावसे सादर समर्पित है.

विनीत—

आपका चरण सेवक

बुद्धि

प्रस्तावना–

जगतमें धर्मही एक ऐसी वस्तु है कि–जिसके आराधनसे जीव संसारसमुद्रसे पार हो सकता है । धर्माराधनके विविधप्रकारोंमें नवपदआराधनभी एक है, जो सबमें प्रधानता पाया हुआ है, उस नवपदकी महिमागर्भित यह श्रीपाल राजाका रास आज पाठकोंके सामने रखा जाता है, जोकि–विक्रम संवत् १६४० के वर्ष, पाटण शहरमें श्रीखरतरगच्छगगनांगणनभोमणि शत्रुंजयमहात्म्यरास–उपमितिभवप्रपंचाकथारास आदि विविधग्रन्थोंके रचयिता कविचक्रचूडामणि महोपाध्याय **श्रीजिनहर्षजी** गणिवरका बनाया है ।

उद्देश–यद्यपि प्रस्तुत रासके शिवाय इन्हि कविवरने एक दूसराभी श्रीपालरास बनाया है, जो अत्यंत संक्षिप्त है, परंतु प्रस्तुत 'रास'का वाच देह अतिविस्तृत या अतिसंक्षिप्त न होनेसे ओलीके दिनोंमें सुखपूर्वक समाप्त किया जा सकता है, एवं कृतिभी बहुत सरल और भाववाहि रोचक है, इसकी पहली आवृत्ति रायबहादूर बाबू धनपतसिंहजी दूगड मुर्शिदाबाद निवासीने छपवाइ थी, उसमें बहुत अशुद्धियां थीं और टाइपभी कलकत्तेके थे, जिससे वांचनेमें बडी असुविधा थी और वह प्रति अब मिलतीभी नहीं, इत्यादि कारणोंसे इसकी पुनरावृत्ति छपवानेकी भावना स्वर्गस्थ पूज्य गुरुदेवके हृदयमें जागृत हुइ ।

तत्पश्चात् छपी हुइ प्रति परसेही यथाशक्ति संशोधन करके प्रेसकॉपी तयार करवाइ, बादमें एक प्रति हस्तलिखित बीकानेर निवासी इतिहासप्रेमी साहित्यसेवक सुश्रावक अगरचंदजी नाहटा द्वारा मिली, जोकि ज्यादा अशुद्ध नहींथी, उसके आधारपर कॉपीका संशोधन किया गया और पूज्य गुरुदेवकी देखरेखमेंही रास छपभी गयाथा, सिर्फ प्रस्तावना तथा ओलीकी विधि एवं चित्रादिका काम बाकी

रहा था. उसके विचारमें एवं अन्यान्य कार्योंकी व्यग्रतामें कुछ टाइम निकल गया, इतनेमें **"श्रेयांसि बहुविघ्नानि"** इस नियमानुसार संवत् १९९३ के कार्तिक शु० ६ के रोज परमपूज्य गुरुदेवका अकस्मात् स्वर्गवास होजानेसे इसके प्रकाशनमें अधिक विलंब हुआ।

पहले विचार रहा था कि—कठिन शब्दोंके अर्थ टिप्पनीमें देदिये जॉय और पहले फारममें क्रियाभी वैसाही, परंतु संयोगकी प्रतिकूलताके कारण आगे वैसे न करके केवल मूलही छपवाया है।

[illegible] होनेके कारण कविवरका परिचय यहां नहीं दिया गया. जाननेकी अभिलाषावाले वांचक गण देवचंद लालभाइ जैन पुस्तकोद्धार फंड सुरत द्वारा प्रकाशित "आनंदकाव्यमहोदधि" मौक्तिक चोथेकी प्रस्तावना आचार्य श्रीबुद्धिसागरसूरिजी लिखित, तथा मोहनलाल दलीचंद देसाइ सोलीसिटर लिखित "गुर्जर कविओ" नामकी पुस्तक देखलें।

इसके प्रकाशनमें पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय स्वर्गस्थ गुरुदेवके अमृतमय उपदेशसे जिन जिन महानुभावोंने उदार चित्तसे द्रव्य सहायता देके अपनी न्यायोपार्जित लक्ष्मीको सफल करी है, जिनके नाम टाइटलपेजके मुखपृष्ठपर दिये गये हैं, उन सबको यहां धन्यवाद दिया जाता है, अन्य धनवानोंकोभी ऐसे साहित्यसेवाके शुभकार्यमें इनका अनुकरण अवश्य करना योग्य है।

अंतमें—यद्यपि इसका मुद्रण व संशोधन कार्य स्वर्गस्थ पूज्य गुरुदेवके करकमलोंसे बडी सावधानीके साथ हुआ है, तथापि छाद्मस्थिक स्वभावानुसार दृष्टिदोषसे या प्रेसके कर्मचारियोंकी गफलतसे जो कोई अशुद्धि दृष्टिगत हो तो सज्जनोंसे नम्र प्रार्थना है कि—वे सुधारके पढें।

[illegible] अनुयोगाचार्य विद्वत्शिरोमणि परमपूज्य गुरुदेव पंन्यासजी—श्री १००८ **श्रीकेशरमुनिजी** महाराज इस श्रीपालरासके संपादक व संशोधक हैं अतः उचित है कि उनका कुछ जीवनपरिचय करादिया जाय, इस लिये उनका संक्षिप्त जीवनपरिचय यह आगे दिया जाता है—

इस ग्रंथके संपादक विद्वत् शिरोमणि अनुयोगाचार्य स्व० पंन्यासप्रवर **श्रीमत्केशरमुनिजी** महाराजका

संक्षिप्त जीवनपरिचय—

मारवाड देशकी राजधानी **जोधपुरसे** दक्षिणमे २० कोशके फासले पर **चूंडा** नामका एक सुरम्य गाम है, वहांपर वि० सं० १९३२ के माघ वदि अमावसको आधीरातके समय शुभलग्नमे आपका जन्म हुआथा, पिताका नाम **शाह रतनाजी** एवं माताका नाम **रंभादेवी** था, आपका खुदका नाम गृहस्थपनमे **केसरमलजी** था, वाल्य अवस्थासे ही ज्ञानाभ्यास तथा धार्मिक क्रियाओंकी तरफ रुचि अच्छी थी।

संवत् १९४६ मे आप **मुंबई** आकर व्यापारमे जुडे और थोडेही दिनोंमे अपने बुद्धिवलसे व्यापार क्रियामे कुशलता प्राप्त करके एक सराफी दुकान उपर भागीदारीमें स्वतंत्र व्यापार करने लगे जिससे आर्थिक लाभ अच्छा होने लगाथा, इधर **मुंबईमें** सबसे पहले सविज्ञसाधुओंका विहारद्वार खोलनेवाले शांतस्वभावी जगत्पूज्य शासनप्रभावक **खरतरगच्छगगनांगणदिनमणि क्रियोद्धारक श्री १००८ श्रीमोहनलालजी** महाराजका पधारना **मुंबईमे** पहले प्रथम संवत् १९४७ मे हुआ, व्याख्यानादिमें आते जाते **केसरमलजीको** महाराजसाहेवका कुछ परिचय हुआ त्योंही कुछ वैराग्यवासनाभी प्रगटी, जबकि १९५१ के वर्ष दूसरी वख्त महाराजसाहेवका पधारना **मुंबईमे** हुआ तबसे महाराजजीके परिचयमें **केसरमलजी** विशेष आने लगे, ज्यों ज्यों अधिक परिचय होता गया त्यों त्यों आपकी धार्मिक रुचि वढने लगी, वह इतनेतक बढी कि जो इस असार संसारको सर्वथा त्यागकर दीक्षित होजानेकी भावनामे परिणत होगइ, परंतु वह भावना **मुंबइमें** सफल होनी मुश्किलथी, कारणकि— सगे संबंधी भाइ बंधु आदि तमाम कुटुंबियोंकी मौजूदगीमे मोहनीयकर्मकी प्रवलतासे अनेक विघ्न आनेकी संभावना थी, अतः आपने अपनी भागीदारीका फैसला पहले करलिया, वादमे परम-

पूज्य श्री १००८ श्रीमोहनलालजी महाराजकी रजासे मालवेमें जाकर रतलामके निकटवर्त्ति वांगरोद गाममें महाराजके ही विद्वान् शिष्य श्रीमान् राजमुनिजी महाराजके शुभ हस्तसे विक्रम सं० गुजराती १९५२ तदनुसार हिंदी १९५३ के आषाढ सुद पंचमीके शुभ दिनको भागवती दीक्षा अंगीकार करी और पूज्यपाद श्रीमान् मोहनलालजी महाराजकी आज्ञानुसार श्रीहेममुनिजी महाराजके शिष्य बने ।

पहला चौमासा रतलाममें हुआ, पूज्य श्रीमान् राजमुनिजी महाराजकी अध्यक्षतामें अध्ययन शुरु किया, क्रमशः प्रतिक्रमणादिकी पढाइ पूरी करके दूसरेही वर्ष, जबकि आपका चौमासा दीक्षा गुरु श्रीमान् राजमुनिजी महाराजके साथ सादडी (मारवाड)में था, व्याकरण पढना शुरु करदिया, चौमासा उतरे बाद महाराजसाहेबकी आज्ञासे आपने विहार किया और अहमदाबाद पधारकर पूज्य श्रीमोहनलालजी महाराजके दर्शनामृतसे अपने आत्माको पवित्र किया, यहांपर स्वर्गस्थ पूज्य आचार्य श्रीजिनयशःसूरिजी, उसवख्तके श्रीमान् यशोमुनिजी महाराजके पास आपने वडी दीक्षाके योगोद्वहन किये और पेथापुरमें उन्ही महाराजके शुभहस्तसे आपकी वडी दीक्षा हुइ ।

तीसरा चौमासा अहमदाबादमें पूज्य श्रीमान् यशोमुनिजी महाराज आदिके साथमें और चौथा पांचवाँ चौमासा जामनगरमें पूज्य श्रीदेवमुनिजी महाराजके साथमें हुआ, इतनेतकमें व्याकरणादिका अभ्यास आपके ठीक होगयाथा, यहींपर आपने कल्पसूत्रकी टीका सुबोधिका व्याख्यानमें वांचनी शुरु करीथी, छट्ठा सातवाँ चौमासा सुरत-मुंबईमें महाराज साहेबके साथ हुआ, गुरुजीकी अभ्यासकी तरफ लक्ष्य अच्छाथा, अन्यके साथ फजूल वातचीत आदि प्रपंचमें प्रवृत्ति कमथी, अतः दिनोदिन अभ्यास बढता गया, थोडेही वर्षोंमें व्याकरणमें सारस्वत चंद्रिका तथा सिद्धांतकौमुदी, न्यायमें तर्कसंग्रह मुक्तावली तथा स्याद्वादमंजरी आदि एवं काव्य कोष तथा सिद्धांतकाभी ज्ञान अच्छा संपादन किया ।

विनश्वर शील औदारिक शरीरको त्यागकर आप स्वर्गको सिधारगये, बस फिर क्या कहनाथा, यह दुःखद समाचार थोडीही देरमें विजलीके वेगसे आखी मुंबईमे एवं तारद्वारा अन्यत्रभी सब जगह फैलगये, उसी समयसे दर्शकोंकी जो भीड शुरु हुइ वह रात्रिको ११ वजेतक एवं दूसरे दिन सवेरे पांच वजेसे ९ वजेतक एकसरखी लगी रही।

सप्तमीके दिन आपके देहको वालकेश्वर लेजानेके लिये ठीक ९ वजे हजारों मनुष्योंकी मेदिनीके साथ संस्कार यात्रा निकाली गयी, रस्तेमें कइ फोटु लिये गये, एक अमेरिकन तो गिरगामसे साथ हुआ सो वालकेश्वर संस्कारभूमितक पैदल चला, रस्तेमें ५–६ फोटु उसने लिये, अंतमें फोटु लेनेमे किसी तरहकी रुकावट न करनेकी वावत संघका महान् उपकार मानता हुआ १० रु० धर्मादेमें देकर अपने स्थानको गया।

ठीक ११ वजे आपके देहको लेकर सब लोक वालकेश्वर वाणगंगाके पास समुद्रके किनारे हिंदुस्मशानभूमिमें पहुंचे, वहां योग्य स्थानपर हजारों मनुष्योंके समक्ष केवल चंदनसे आपका अग्निसंस्कार किया गया, उस दिन **मुंबई** के बहुतसे वाजार बंध रहेथे।

आपहीने इस ग्रंथका संशोधनादि किया है अतः पाठकोंकी जानकारीके लिये आपका कुछ जीवन परिचय देना उचित समझा गया, तदनुसार जो कुछ वना यथा ज्ञात जीवनपरिचय यह उपर दिया गया है, स्थलसंकोचके कारण हालतो इतनेसेही विराम लेताहुं, इति शम्।

संवत् १९९३, मौन एकादशी
महावीर जिन मंदिर, मंडोवर खरतर उपाश्रय, पायधुनी, मुंबई.

नम्र प्रार्थी–
अनुयोगार्य–श्रीमत् केशर मुनिजी गणिवर चरणाब्ज चंचरीकांतेवासि
बुद्धिसागर

[illegible] श्रीमल्लब्धिमुनिजी महाराज रचित समराविन पञ्चप्रस्थानमयसूरिमन्त्र श्रीखरतर गच्छकी वर्त्तमान संविग्नशाखाके आचाचार्य

श्रीजिनयशःसूरीश्वर स्तुत्यष्टक—

[illegible], खरतराख्यगणं सुतपस्विनं । सुविहितासजिनेश्वरमार्गगं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ १ ॥ मरुधरस्थितयो-
[illegible], खरतराख्यगणं सुतपस्विनं । सुविहितासजिनेश्वरमार्गगं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ २ ॥ स्वजनकार्पित जेठमलाभिधं, सं
[illegible] । करकुनन्दकुवत्सरजन्मकं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ३ ॥ सुमुनिमोहनमोहनशिष्यकं, प्रवचनाष्टकमातृविशोभितं ।
[illegible] । [illegible]यशोमुनिनामकं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ४ ॥ समययोगसुयोगविधायकं, गजशरांककुवत्सर पं० पदं । सकलसूत्रविदं मुनिसत्तमं,
[illegible], प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ५ ॥ गगनसांककुसूरिपदं गत, प्रवरसूरिगुणौघविशोभित । प्रशमशान्तदमञ्च जितेन्द्रिय, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे
[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible], सकलजीवनिकायविपालकं । खरतर दशधा यतिधर्मपं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ७ ॥ खमुनिवेदविधौ
[illegible], [illegible] नरे । अनशनं प्रविधाय दिनं गत, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ८ ॥ पठति यः सुगुरोरिदमष्टकं, प्रतिदिनं
[illegible] । [illegible] परन न, स लभते वरकीर्तियशःसुखम् ॥ ९ ॥

संवत् १९५९ का **मुंबईका** चौमासा पूरा हुए बाद महाराजसाहेबकी आज्ञासे पंन्यासजी श्रीमान् **यशोमुनिजी** महाराज आदि ८ साधुओंने मारवाडकी तरफ विहार किया उनमें आपभी शामिलथे, संवत् १९६० का चौमासा गुरुदेव **श्रीमोहनलालजी** महाराजकी आज्ञासे अन्य दो साधुओंके साथ आपने **शिरोहीमें** किया, यह सबसे पहला स्वतंत्र चौमासा आपकाथा, इसके बाद प्रायः अधिकांश चौमासे आपके स्वतंत्रही हुए ।

आपकी व्याख्यान शैली बहुत प्रशंसनीयथी, हरएक वस्तुका प्रतिपादन करतेहुए इसतरह भिन्न भिन्न करके समझातेथे कि मूर्खसे मूर्खभी वस्तुस्वरूपको भलिप्रकार समझ सकताथा। वादशक्तिभी ऐसीहीथी, प्रश्नकार चाहे जैसे जटिल प्रश्न क्यों न करले, परंतु आपकी तरफसे युक्ति व प्रमाण पूर्वक ऐसा उत्तर मिलताथाकि—जिससे प्रश्नकारको आगे कुछ बोलनेका अवकाशही नहीं रहता, लेखन कलाभी कुछ कम नहीथी, इस वातकी सावीतिके लिये आपके बनाये ग्रंथ **प्रश्नोत्तरविचार, प्रश्नोत्तरमंजरी, हर्षहृदयदर्पण** आदि विद्यमान हैं, जिनका प्रत्युत्तर युक्ति व प्रमाण पूर्वक आजतक किसीसे नहीं दिया गया, इसप्रकार आपकी योग्यताके कारणही खरतर गच्छकी वर्त्तमान संविज्ञशाखाके प्रथम आचार्य श्रीमान् **जिनयशःसूरिजी** उसवख्तके पंन्यासजी **श्रीयशोमुनिजी** महाराज कि, जिनका फोटु इसी पुस्तकमे आपकी दहेनी तरफ दिया गया है, उन्होंने संवत् १९६६ के वर्ष **लश्कर** (गवालियर) में **भगवती** पर्यंत सूत्रोंके योगोद्वहन कराके आपको गणिपद तथा पंन्यास पदसे अलंकृत कियेथे, उन्हि पूज्य गुरुदेवके साथमें आपने सम्मेत शिखरजी आदि तीर्थोंकी यात्रा करीथी।

आपने चालीस वर्षसे कुछ अधिक समयतक निर्मल चारित्र पाला, इस दीर्घकालीन श्रामण्य पर्यायमें कच्छ दक्षिण और पंजाबके शिवाय प्रायः सभी देशोंमें ज्यादा कम आपका विहार हुआ है, आगे लिखे जानेवाले स्थलोंमें आपके चौमासे इस प्रकार हुए हैं—

[illegible] श्रीमद्वृद्धिमुनिजी महाराज रचित समराधित पञ्चप्रस्थानमयसूरिमन्त्र श्रीखरतर गच्छकी वर्त्तमान सविज्ञशाखाके आचाचार्य

श्रीजिनयशःसूरीश्वर स्तुत्यष्टक—

[illegible], खरतरगच्छगण [illegible] । सुविहितागतजिनेश्वरमार्गग, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ १ ॥ मरुधरस्थितयो-[illegible], [illegible] । करकुनन्दकुवत्सरजन्मकं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ २ ॥ स्वजनकार्पित जेठमलाभिधं, सं [illegible] । [illegible]यशोमुनिनामकं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ३ ॥ सुमुनिमोहनमोहनशिष्यकं, प्रवचनाष्टकमातृविशोभितं । [illegible], प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ४ ॥ समययोगसुयोगविधायकं, गजशरांकेकुवत्सर पं० पदं । सकलसूत्रविदं मुनिसत्तमं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ५ ॥ [illegible]सूरिपदं गत, प्रवरसूरिगुणैर्विशोभितं । प्रशमशान्तदमञ्च जितेन्द्रिय, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ६ ॥ [illegible], [illegible]जीवनिकायविपालकं । खरतरं दशधा यतिधर्मपं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ७ ॥ खमुनिवेदविधौ [illegible], [illegible] रे । अनशनं प्रविधाय दिनं गतं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ८ ॥ पठति यः सुगुरोरिदमष्टकं, प्रतिदिनं [illegible] । [illegible] न, स लभते वरकीर्तियशःसुखम् ॥ ९ ॥

विनश्वर शील औदारिक शरीरको त्यागकर आप स्वर्गको सिधारगये, बस फिर क्या कहनाथा, यह दुःखद समाचार थोडीही देरमें विजलीके वेगसे आखी मुंबईमे एवं तारद्वारा अन्यत्रभी सब जगह फैलगये, उसी समयसे दर्शकोंकी जो भीड शुरु हुइ वह रात्रिको ११ बजेतक एवं दूसरे दिन सवेरे पांच बजेसे ९ बजेतक एकसरखी लगी रही।

सप्तमीके दिन आपके देहको वालकेश्वर लेजानेके लिये ठीक ९ बजे हजारों मनुष्योंकी मेदिनीके साथ संस्कार यात्रा निकाली गयी, रस्तेमे कइ फोटु लिये गये, एक अमेरिकन तो गिरगामसे साथ हुआ सो वालकेश्वर संस्कारभूमितक पैदल चला, रस्तेमें ५–६ फोटु उसने लिये, अंतमें फोटु लेनेमें किसी तरहकी रुकावट न करनेकी बाबत संघका महान् उपकार मानता हुआ १० रु० धर्मादेमें देकर अपने स्थानको गया।

ठीक ११ बजे आपके देहको लेकर सब लोक वालकेश्वर वाणगंगाके पास समुद्रके किनारे हिंदुस्मशानभूमिमें पहुंचे, वहां योग्य स्थानपर हजारों मनुष्योंके समक्ष केवल चंदनसे आपका अग्निसंस्कार किया गया, उस दिन मुंबई के बहुतसे बाजार बंध रहेथे।

आपहीने इस ग्रंथका संशोधनादि किया है अतः पाठकोंकी जानकारीके लिये आपका कुछ जीवन परिचय देना उचित समझा गया, तदनुसार जो कुछ बना यथा ज्ञात जीवनपरिचय यह उपर दिया गया है, स्थलसंकोचके कारण हालतो इतनेसेही विराम लेताहुं, इति शम्।

संवत् १९९३, मौन एकादशी
महावीर जिन मंदिर, मंडोवर खरतर
उपाश्रय, पायधुनी, मुंबई.

नम्र प्रार्थी–
अनुयोगार्य–श्रीमत् केशर मुनिजी गणिवर चरणाब्ज चंचरीकांतेवासि
बुद्धिसागर

[illegible] श्रीमल्लब्धिमुनिजी महाराज रचित समराधित पञ्चप्रस्थानमयसूरिमन्त्र श्रीखरतर गच्छकी वर्त्तमान संविज्ञशाखाके आद्याचार्य

श्रीजिनयशःसूरीश्वर स्तुत्यष्टक—

[illegible] खरतराख्यगणं सुतपस्विनं । सुविहितात्तजिनेश्वरमार्गगं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं-स्तुवे ॥ १ ॥ मरुधरस्थितयो-
[illegible], [illegible] । करकुंनन्देकुवत्सरजन्मकं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ २ ॥ स्वजनकार्पित जेठमलाभिधं, सं
[illegible] । सगुरुदत्तयशोमुनिनामकं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ३ ॥ सुमुनिमोहनमोहनशिष्यकं, प्रवचनाष्टकमातृविशोभितं ।
[illegible], प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ४ ॥ समययोगसुयोगविधायकं, गजेशरांकेकुवत्सर पं० पदं । सकलसूत्रविदं मुनिसत्तमं,
प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ५ ॥ लोगरसांकेकुसूरिपद गत, प्रवरसूरिगुणौघविशोभितं । प्रशमशान्तदमञ्च जितेन्द्रियं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे
॥ ६ ॥ [illegible], सकलजीवनिकायनिपालकं । खरतरं दशधा यतिधर्मपं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ७ ॥ खंमुंनिवेदविधौ
[illegible], [illegible] नरे । अनशनं प्रविधाय दिवं गतं, प्रवरसूरियशःसुगुरुं स्तुवे ॥ ८ ॥ पठति यः सुगुरोरिदमष्टकं, प्रतिदिनं
[illegible] । [illegible] परत्र च, स लभते वरकीर्तियश सुखम् ॥ ९ ॥

कवित्वलब्धिसंपन्न **श्रीमल्लब्धिमुनिजी** महाराज रचित वादिगजकेसरी विहितसकलागमयोगानुष्ठान अनुयोगाचार्य पंन्यासप्रवर

श्रीकेशरमुनिजी गणिवर स्तुत्यष्टक—

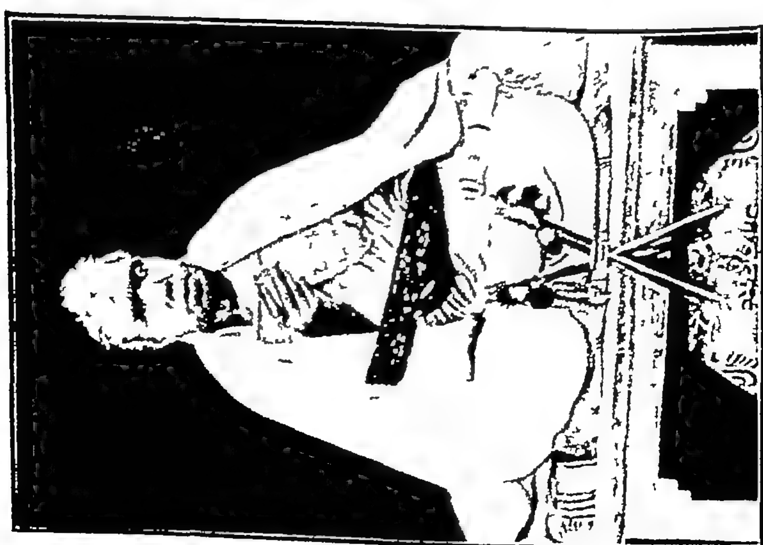
यस्याभवन्मरुधरस्थसुरम्यचूण्डा—ग्रामे मुनेः कर[2]—गुणा[3]—ङ्कशशाङ्क वर्षे । जन्म प्रशान्तवदनस्य जितेन्द्रियस्य, पन्न्यास **केशरमुनिः** सुगुरुः स जीयात् ॥ १ ॥ यो मालवस्थितजनाकुलवाङ्गरोद—ग्रामेऽग्नि[3]—बाण[5]—खग—भूमिगृहीतदीक्षः । वैराग्यरङ्गसुतरङ्गितभावतोऽभूत्, पन्न्यास **केशरमुनिः** सुगुरुः स जीयात् ॥ २ ॥ योऽभूल्लसत्खरतरामलशिष्टि*रक्तो विद्वद्वरः सुविहितोऽवग[1]मक्रियावान् । श्रीआर्य **मोहनमुनि**प्रवरप्रशिष्यः, पन्न्यास **केशरमुनिः** सुगुरुः स जीयात् ॥ ३ ॥ पन्न्यासयुग्गणिपदं प्रवराय गोप—द्रङ्गे[2] शरीर[6]—रस[6]—नन्द[9]—शशाङ्क वर्षे । यस्मै प्रदायि गुरुणा प्रविधाप्य योगान्, पन्न्यास **केशरमुनिः** सुगुरुः स जीयात् ॥ ४ ॥ येनार्हतीयसमये कथित यथार्थ—सत्यस्वरूपममलं मुनिना प्रदर्श्य । स्पष्टीकृ**तः प्रबलसाग-रिकप्रपञ्चः, पन्न्यास **केशरमुनिः** सुगुरुः स जीयात् ॥ ५ ॥ विद्वत्तयोर्जित[3]कुपक्षगणान्निरस्य[4]—हेच्छिटिकृत्खरतरीयगणोऽखिलोऽपि । वाचंयमेन च जजा[5]गरितो यत्नेन, पन्न्यास **केशरमुनिः** सुगुरुः स जीयात् ॥ ६ ॥ **प्रश्नोत्तरा**दिबहवो रचिता वरिष्ठा, ग्रन्थाः शिवार्थिभविबोधकरेण येन । सत्पञ्चदुर्धरमहाव्रतधारकेण, पन्न्यास **केशरमुनिः** सुगुरुः स जीयात् ॥ ७ ॥ संवद्गुणा[3]ङ्कखगर्भूमिसमे च मुम्बा—**पुर्यां** सुरालयमगात्सुसमाधिपूर्वं । ध्यायँश्च पञ्चपरमेष्ठिनमस्कृतिं यः, पन्न्यास **केशरमुनिः** सुगुरुः स जीयात् ॥ ८ ॥ सद्बुद्धिदं गुरुगुणौघपवित्रितं यः, श्रद्धालुरष्टकमिदं प्रपठेत्सदैव । उत्पद्यते झटिति सुन्नतरत्न**लब्धि**—[6]श्रीबुद्धिसागरतरङ्गगणश्च तस्य ॥ ९ ॥

---

* आज्ञा । (१) ज्ञान । (२) पुरे । ** प्रकटीकृत. । (३) प्रवल । (४) निराकृत्य । (५) सावधानीकृत । (६) लक्ष्मी ।







श्रीमोहनलालजी महाराजके मुख्यशिष्य-[illegible]-
[illegible] प्रथम आचार्य-

श्रीजिनयशःसूरीश्वरजी महाराज.

जन्म	दीक्षा	गणि-पं० पद	सूरिपद	स्वर्ग
१९१२	१९४०	१९५[illegible]	१९६०	१९७०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पावापुरी

[illegible] जो, मान्य थे [illegible]
[illegible] गुणवान थे, [illegible] ।
[illegible] मोहन-लालजी [illegible]
[illegible], यश का पुञ्ज [illegible] ॥ १ ॥

[illegible] प्रथम सूरीश थे,
[illegible] के ईश थे ।
पावापुरीमें [illegible], [illegible] स्वर्गमन है
[illegible] जिनयशः-सूरीश मेरी शरण है ॥ २ ॥

(मास्टर [illegible] मोहनलाल)

श्रीसिद्धचक्र या नवपद मण्डल.

(श्रेष्ठी-जीवणचंद [illegible] के सौजन्यसे सम्प्राप्त)

कुष्ठादिरोगशमकं भवसिन्धुपोतम्,
दुष्टाष्टकर्मतृणवन्हिमचिन्त्यशक्तिम् ।
सम्यक्करं परमयोगिनतं नमामि,
श्रीसिद्धचक्रपदमक्षयधामदातृ ॥ १ ॥

सर्वज्ञ-सिद्ध-गणि-पाठक-साधु-सम्य-
क्त्व-ज्ञान-सद्व्रत-तपोऽङ्कपदानि सन्तु ।
मे श्वेत-लोहित-सुपीत-हरित्-सुनील-
श्वेतादिवर्णरुचिराणि लसत्सुखाय ॥ २ ॥

(कविवर्य श्रीलब्धिमुनिजी महाराज)

नि मा प्रेस

श्रीखरतरगच्छगगनाङ्गणनभोमणि-जगद्गुरु-श्रीमोहनलालजी
महाराजके प्रशिष्यरत्न-वादलब्धिसम्पन्न-अनुयोगाचार्य-
पंन्यासप्रवर

श्रीकेशरमुनिजी महाराज.

जन्म	दीक्षा	गणि-पं० पद	स्वर्गगमन
१९३२	१९५३	१९६६	१९९३
चूडा	वागरोद	लश्कर (गवालियर)	मुंबई

जो विश्वमें बहुमान्य मोहन-लालजी मुनिराज थे;
उन पूज्यके विद्वान सुन्दर, शिष्यके भी शिष्य थे ।
निजधर्मके निन्दक न क्यों, हो वे भले सबसे बड़े,
उन वादिगजके सामने थे, केसरी रहकर खड़े ॥ १ ॥

फिर धर्मके आक्षेपको, करते सदैव सुदूर थे,
प्रेमी क्रियाके थे तथा शुभ, शान्तरस भरपूर थे ।
ऐसे महा मुनिराज हमको, छोड़कर जाते रहे;
पंन्यास श्रीकेशरमुने !, तुम नमन वारंवार है ॥ २ ॥

(मास्टर-विजयचंद मोहनलाल)

ॐ श्रीसिद्धचक्राय नमः

श्रीखरतरगच्छनभोमणि आचार्य श्रीजिनचंद्रसूरीश्वर वाचक श्रीसोमगणि-
शिष्य महोपाध्याय श्रीशांतिहर्ष गणि शिष्य कविवर महोपाध्याय
श्रीजिनहर्ष गणिकृत श्रीनवपद महात्म्य गर्भित

श्रीपाल राजाका रास.

दूहा–श्रीअरिहंत अनंतगुण, धरीये हीयडे ध्यान। केवल ज्ञान प्रकाश कर, दूर हरण अज्ञान ॥ १ ॥ चउद राज ऊपर रहे, सिद्ध अनंत समृद्धि। मुगति युवति सुख भोगवे, दायक अविचल सिद्धि ॥ २ ॥ आचारिज पय युग नमूं, पाले पंचाचार। गुण छत्रीस विराजता, आगम अरथ भंडार ॥ ३ ॥ कर जोडी नित प्रति नमूं, चोथे

पद उवज्झाय । द्वादशांग सुख उपदिसे, भवियण जण सुखदाय ॥ ४ ॥ अढी द्वीपमांहे नमूं, साधु सकल गुणवंत । सुमति गुपति सूधी धरे, राखे जगना जंत ॥ ५ ॥ पंच परमेष्ठि नमी करीं, आणी भाव विसाल । श्रीश्रीपाल नरिंदनो, रचसुं रास रसाल ॥ ६ ॥ मंत्र यंत्र जडि ओषधी, आछे अवर अनेक । पिण नवकार समो न को, जोवो आणि विवेक ॥ ७ ॥ सिद्धचक्र आराधीये, गुणीये श्रीनवकार । भवसायर तरीये सुगम, जईये मुगति मझार ॥ ८ ॥ नवपदनो महिमा कहूं, सांभलजो नर नार ! । सांभलतां सुख पामसो, सफल हुसे अवतार ॥ ९ ॥

ढाल १ ली. चोपईनी—जंबू नामे द्वीप विसाल, दक्षिण भरत छे तास विचाल । देस कह्या बत्रीस हजार, मगधदेस रिद्धिवंत अपार ॥ १ ॥ वीर जिणेसर आव्या घणुं, सकल देशमें उत्तम भणुं । राजगृही नगरी गुणभरी, जाणे रची

महियल[1] सुरपुरी[2] ॥ २ ॥ कूआ वावि सरोवर घणा, विवहारीयानी नहीं कांई मणा[3]। न्याये पाले नरवर[4]
तिण नयरी श्रेणिक नरनाह, जिणवर आण धरे उच्छाह ॥ ३ ॥ न्याये पाले नरवर
राज, सारे सहुना वांछित काज । मंत्रीसर छे अभयकुमार, च्यारे बुद्धिनो धारणहार
॥ ४ ॥ किणिहिक अवसर त्रिभुवनस्वामि[5], राजगृहीने पासे गामि । समवसर्या तिहां
आवी करी, सहु हरख्या मन आणंद धरी ॥ ५ ॥ गौतमने दीधो आदेस, जाओ
राजगृही सुविसेस । तव गौतम आव्या तिहां वही, लोक सहु हरख्या गहगही ॥ ६ ॥
वांदण आव्या श्रेणिक राय, नगर लोक पिण वांदण जाय। आपे प्रभु गणधर उपदेस,
सजल[6] जलद[7] अनुहार[8] विसेस ॥ ७ ॥ अहो भव्य प्राणी ! तुम्हे सुणो, ए मानव भव
दुर्लभ गिणो । आर्य क्षेत्र उत्तम कुल जाणि, ते पिण दुर्लभ छे मन आणि ॥ ८ ॥

१ जमीन उपर । २ देव नगरी । ३ कमी । ४ राजा । ५ तीनलोकके स्वामी वीरप्रभु । ६ पाणी सहित । ७ मेघके । ८ समान ।

कण कंचणसुं भरी रे लाल, जाणे अलका[1] नाम महा०, ए० ॥ ७ ॥ लोक तिहां सहु को सुखी रे लाल, साधे त्रिणे वर्ग महा० । पाले जिनवर आगन्या (आज्ञा) रे लाल, जेथी पामे स्वर्ग महा०, ए० ॥ ८ ॥ राजा राजे तिणे पुरी रे लाल, प्रजापाल इणे नाम महा० । न्याय निपुण पुहवी तिलो[2] रे लाल, रूपे जाणे काम[3] महा०, ए० ॥ ९ ॥ तास घणी अंतेउरी रे लाल, तेहमें दोइ अत्यंत महा० । रूप अधिक रलियामणी रे लाल, सोभागिणी गुणवंत महा०, ए० ॥ १० ॥ पहिली सोहग[4] सुंदरी रे लाल, सोहग तणो निधान महा० । बीजी पिण अधिकी वली रे लाल, रूपसुंदरी अभिधान[5] महा०, ए० ॥११॥ रूपे रंभा[6] हरावती रे लाल, सुख विलसे सुकमाल महा० । बीजी 'जिन हरखे' कही रे लाल, अलबेलानी ढाल महा०, ए०॥१२॥ सर्व गाथा ३५ ॥

१ अलकापुरी नामकी देवनगरी । २ पृथ्वीके तिलक तुल्य । ३ कामदेव । ४ सौभाग्य । ५ नाम की । ६ नामकी अप्सरा देवी ।

दूहा–पहिली मिथ्यात्वी कुले, अवर जैन कुल जाणि । जैन शास्त्र रूपसुंदरी, भणी सुधारसवाणी ॥ १ ॥ समकित गुण निर्मल धरे, जाणे अरथ विचार । धरम थकी चूके नहीं, जो हुवे लाख प्रकार ॥ २ ॥ शिवशासन विद्या भणी, सोहगसुंदरी नार । मिथ्या मति राती रहे, चाले निज आचार ॥ ३ ॥ सोकि[3] पणे वे सुंदरी, पिण अत्यंत सनेह । आप आपणा धर्मसुं, रंगे राती जेह ॥ ४ ॥ प्रीति परस्पर अतिघणी, एक जीव तनु दोइ । पिण निज निज मतने विषे, विसंवाद नित होइ ॥ ५ ॥

ढाल ३ जी. "धन धन संप्रति राजा साचो" एहनी अथवा "सेत्रुंजे साधु अनंता सीधा" एहनी– जोवो दृष्टिराग अति गिरुओ, छूटे दोहिलो एह रे । दृष्टिराग रांता नर नारी, किमहि न समझे तेह रे, जोवो० ॥१॥ दृष्टिराग करी सोहगसुंदरी, उत्थापे

१ चीजी । २ अमृत । ३ एकही पतिकी दो स्त्रियां, जिसको शोक कहते हैं । ४ शरीर । ५ समतका राग–प्रेमबंधन ।

धरम तणी सामग्री लहीं, श्रीजिनधर्म करो ऊमही । इण भव पामे रिद्धि समृद्धि, परभव पामे अविचल सिद्धि ॥ ९ ॥ इम गौतम दीधो उपदेस, सांभलियो नर नारि नरेस । पहिली ढाल एही अटकलो, कहे 'जिनहर्ष' हिवे सांभलो ॥ १० ॥ सर्व गाथा १९ ॥

दूहा—दान सील तप भावना, भेद धरमना च्यार । इह भव परभव एहथी, लहीये सुख श्रीकार ॥ १ ॥ दान सील तप मांहि जो, चोथो भाव भिलंत । तो कारज सीझे सहू, वंछित सकल मिलंत ॥ २ ॥ निश्चल मन राखी करी, परिहरि मननो ताप । भाव विशुद्ध हीयडे धरी, जपीये नवपद जाप ॥ ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ सूरीस वर ३, उवज्झाया ४ मुनिपति ५ । दंसण ६ नाण ७ चरित्त ८ तप ९, इणसुं धरीये चित्ति ॥ ४ ॥

ढाल २ जी. अलबेलानी— ए नवपद आराधीये रे लाल, आणी निरमल भाव महाराजा रे । एहथी सहु सुख संपजे रे लाल, भवसायरनी नाव महा०, ए० ॥ १ ॥

नवपद संघाते जपे रे लाल, सिद्धचक्र (सह्) चउ साल महा० । ते लहे मंगल मालिकारे लाल, जिम लह्यां नृप श्रीपाल महा०, ए० ॥ २ ॥ श्रेणिक कहे भगवन ! कहो रे लाल, कुण ते नृप श्रीपाल महा० । किम पामी सुख संपदा रे लाल, किम लह्यां भोग रसाल महा०, ए० ॥ ३ ॥ गौतम कहे मगधेसने रे लाल, आराध्यो सिद्धचक्र महा० । रोग गयां वंछित लह्यां रे लाल, जाणे अभिनव शक्र महा०, ए० ॥ ४ ॥ श्रीगौतम ! मुझने कहो रे लाल, एहनो सहु अधिकार महा० । सांभलवा मन ऊमह्यो रे लाल, सुणसे सहु नर नार महा०, ए० ॥५॥ दक्षिण भरते दीपतो रे लाल, मालव देस विख्यात महा० । दुरभिक्ष न पडे जिहां कदी रे लाल, केही कहीये वात महा०, ए० ॥ ६ ॥ तिणे देसे नयरी भली रे लाल, उज्जेणी अभिराम महा० । धण

१ साढे चार वर्ष । २ राजा । ३ मगधदेशके स्वामी श्रेणिक । ४ नवा उत्पन्न हुआ इंद्र । ५ दुकाल । ६ क्या । ७ कहें । ८ मनोहर ।

कण कंचणसुं भरी रे लाल, जाणे अलका[1] नाम महा०, ए० ॥ ७ ॥ लोक तिहां सहु को सुखी रे लाल, साधे त्रिणे वर्ग महा० । पाले जिनवर आगन्या (आज्ञा) रे लाल, जेथी पामे स्वर्ग महा०, ए० ॥ ८ ॥ राजा राजे तिणे पुरी रे लाल, प्रजापाल इणे नाम महा० । न्याय निपुण पुहवी तिलो[2] रे लाल, रूपे जाणे काम[3] महा०, ए० ॥ ९ ॥ तास घणी अंतेउरी रे लाल, तेहमें दोइ अत्यंत महा० । रूप अधिक रलियामणी रे लाल, सोभागिणी गुणवंत महा०, ए० ॥ १० ॥ पहिली सोहग[4] सुंदरी रे लाल, सोहग तणो निधान महा० । बीजी पिण अधिकी वली रे लाल, रूपसुंदरी अभिधान[5] महा०, ए० ॥११॥ रूपे रंभा[6] हरावती रे लाल, सुख विलसे सुकमाल महा० । बीजी 'जिन हरखे' कही रे लाल, अलबेलानी ढाल महा०, ए०॥१२॥ सर्व गाथा ३५ ॥

१ अलकापुरी नामकी देवनगरी । २पृथ्वीके तिलक तुल्य । ३ कामदेव । ४ सौभाग्य । ५ नाम की । ६ नामकी अप्सरा देवी ।

दूहा—पहिली मिथ्यात्वी कुले, अवर जैन कुल जाणि । जैन शास्त्र रूपसुंदरी, भणी सुधारसवाणी ॥ १ ॥ समकित गुण निर्मल धरे, जाणे अरथ विचार । धरम थकी चूके नहीं, जो हुवे लाख प्रकार ॥ २ ॥ शिवशासन विद्या भणी, सोहगसुंदरी नार । मिथ्या मति राती रहे, चाले निज आचार ॥ ३ ॥ सोकि[3] पणे वे सुंदरी, पिण अत्यंत सनेह । आप आपणा धर्मसुं, रंगे राती जेह ॥ ४ ॥ प्रीति परस्पर अतिघणी, एक जीव तनु दोइ । पिण निज निज मतने विषे, विसंवाद नित होइ ॥ ५ ॥

ढाल ३ जी. "धन धन संप्रति राजा साचो" एहनी अथवा "सेत्रुंजे साधु अनंता सीधा" एहनी— जोवो दृष्टिराग अति गिरुओ, छूटे दोहिलो एह रे । दृष्टिराग राता नर नारी, किमहि न समझे तेह रे, जोवो० ॥१॥ दृष्टिराग करी सोहगसुंदरी, उत्थापे

१ गीर्जी । २ अमृत । ३ एकही पतिकी दो स्त्रियां, जिसको शोक कहते हैं । ४ शरीर । ५ समतका राग—प्रेमबंधन ।

वरस पांचनी ते थई, दीठां परम प्रमोद ॥ ४ ॥ भणिवा सारिखी थई, बुद्धितणो भंडार। मातपिता देखी करी, इणपरि करे विचार ॥ ५ ॥

ढाल ४ थी. "हरीया! मन लागो" एहनी, कन्या दोइ भणावीये, भणिवा अवसर एह रे, दोइ कन्या (भणावीये) भणे। बालपणे सहु आवडे, नाण विन्नाण अछेह रे, दो० ॥१॥ सुभदिन सुभ मुहूरत घडी, भणिवा ठवी बे बाल रे, दो० । सुरसुंदरी सिवभूतिने, मयणा सुबुद्धि नीसाल रे, दो० ॥ २ ॥ प्रथम सुता पंडित कन्हे, भणे सदा चित लाइ रे, दो० । गणित लिखित लक्षण कला, तर्क[2] साहित्य[3] सहाइ रे, दो० ॥ ३ ॥ ज्योति(ष)क वैद्यक सहु भण्या, भरह[4] संगीत पुराण रे, दो० । मंत्र जंत्र जडी ओषधी, थई सिवसास्त्रनी जाण रे, दो० ॥ ४ ॥ रागरंगे सहु रीझवे, गावे वीण बजाइ रे, दो० ।

१ शरीरमें रहे चक्र आदि । २ न्यायशास्त्र । ३ काव्यशास्त्र । ४ भरत नामका नाटक ग्रंथ । ५ अढारे पुराण शास्त्र ।

रसीयाना मन मोहती, दीठी आवे दाइ रे, दो० ॥ ५ ॥ जोवन रूपे आगली, अणीयाला दोइ नैण रे, दो० । मुखडे जीत्यो चंद्रमा, श्रवे सुधारस वैण रे, दो० ॥ ६ ॥ रूप अधिक सोहे वली, चतुराई गुणमेलि रे, दो० । सोवन मुद्रा मणि जडी, दूधे साकर मेलि रे, दो० ॥७॥ भणी गुणी चोसठ कला, अपछरने अणुहार रे, दो० । पहिले गुण-ठाणे थई, गुरु संगति सुविचार रे, दो० ॥ ८ ॥ मिथ्यात्वी सिरसेहरो, सिवभूति पंडित तेह रे, दो० । शिष्यणी पिण सुरसुंदरी, तेहवी कीधी तेह रे, दो० ॥ ९ ॥ मिथ्यामत थापे घणुं, तत्त्वथकी विपरीत रे, दो० । काने पिण न गमे सुण्यो, जैनधर्म सुं प्रीत रे, दो० ॥ १० ॥ हवे बीजी कन्यातणो, सुणो पठन अधिकार रे, दो० । शास्त्र भण्या जिनमततणा, आगम अरथ विचार रे, दो० ॥ ११ ॥ चोसठ महिलानी कला, जाणे गुरु सुपसाय रे, दो० । अवसरे धर्म करे वली, प्रणमे जिनवर पाय रे, दो० ॥ १२ ॥

॥ ११ ॥

जिनधर्म रे । मलिन कुचेल[1] नहीं पवित्राई, स्युं ते ओडे कर्म रे, जोवो० ॥ २ ॥ रूपसुंदरी कहे सांभलि बहिनी !, कसिये कंचण जेम रे । कीजे धर्म परीक्षा करीने, आल[2] न जपीये[3] एम रे, जोवो० ॥ ३ ॥ धरम धरम सहु कोई भाषे, पिण अंतर असमान रे । साकर लूण सरीखा दीसे, काच पाँच[4] समवान रे, जोवो० ॥ ४॥ सूरज खजूये जिवडो अंतर, अंतर राजा रंक रे । अरक[5] दूध गोदूधे अंतर, अंतर सुख आतंक[6] रे, जोवो० ॥ ५ ॥ चंदन आक धत्तूरे अंतर, अंतर विष पीयूष[7] रे । जैन धर्म (समो नहीं कोई) मोटो जगमांहे, जेहथी जाये दूष रे, जोवो० ॥ ६ ॥ धरम अनेक अछे जगमांहे, पिण ते हिंसा मूल रे, धरम जैन अधिको जोवंतां, जीवदया अनुकूल रे, जोवो० ॥ ७ ॥ एक धरमथी शिव[8] सुख लहीये, दहीये कर्म कठोर रे । एक थकी

१ खराब (मलिन) वस्त्र । २ झूटा कलंक । ३ बोलना । ४ मणि । ५ आकका दूध । ६ कष्ट-दुःख । ७ अमृत । ८ मोक्ष

धरमतणी चरचा मांहोमांहे, पिंड पापे भराये, ल्हीये नरक अघोर रे, जोवो० ॥ ८ ॥
प्रीति रीतिसुं वे वे सुंदरी, पाले पूरो प्रेम रे, जोवो० ॥ ९ ॥ करे अहोनिसि[2] एम रे।
विषयतणा सुख विलसे[4] बहुपरि, मुखे समाधे इणपरि रहती, धरती पिउसुं[3] रंग रे।
काल न जाणे किमही जातो, पिंड प्रिया दिनदिन अति उछरंग रे, जोवो० ॥ १० ॥
कहे 'जिनहर्ष' ढाल ए त्रीजी, गावो आस्या राग रे, जोवो० ॥ ११ ॥ इक राग रे।

दूहा—सुख विलसंती बे जणी, जनमी पुत्री दोइ। राय करे उच्छव घणो, हीयडें हरपित होइ ॥ १ ॥ राणी सोहगसुंदरी, दरीभरी गुणप्रेम। तासु सुता सुरसुंदरी, नाम बुलावी तेम ॥ २ ॥ रूपसुंदरी बीजी प्रिया, तेहनी पुत्री जेह। मयणासुंदरी तेहनो, नाम ठव्यो गुणगेह ॥ ३ ॥ पांच धाइ पालीजतां, करतां ख्याल विनोद।

---

१ शरीरमें रहा आत्मा। २ रात दिन। ३ पतिसे। ४ भोगवते हैं। ५ उल्लसित मनसे। ६ स्त्रीभर्तार। ७ गुणगुफा। ८ प्रेमपोषक।

वरस पांचनी ते थई, दीठां परम प्रमोद ॥ ४ ॥ भणिवा सारिखी थई, बुद्धितणो भंडार। मातपिता देखी करी, इणपरि करे विचार ॥ ५ ॥

ढाल ४ थी. "हरीया! मन लागो" एहनी, कन्या दोइ भणावीये, भणिवा अवसर एह रे, दोइ कन्या (भणावीये) भणे। बालपणे सहु आवडे, नाण विन्नाण अछेह रे, दो० ॥१॥ सुभदिन सुभ मुहूरत घडी, भणिवा ठवी बे बाल रे, दो०। सुरसुंदरी सिवभूतिने, मयणा सुबुद्धि नीसाल रे, दो० ॥ २ ॥ प्रथम सुता पंडित कन्हे, भणे सदा चित लाइ रे, दो०। गणित लिखित लक्षण कला, तर्क[2] साहित्य[3] सहाइ रे, दो० ॥ ३ ॥ ज्योति(ष) क वैद्यक सहु भण्या, भरह[4] संगीत पुराण[5] रे, दो०। मंत्र जंत्र जडी ओषधी, थई सिवसास्त्रनी[1] जाण रे, दो० ॥ ४ ॥ रागरंगे सहु रीझवे, गावे वीण बजाइ रे, दो०।

१ शरीरमें रहे चक्र आदि। २ न्यायशास्त्र। ३ काव्यशास्त्र। ४ भरत नामका नाटक ग्रंथ। ५ अढारे पुराण शास्त्र।

रसीयाना मन मोहती, दीठी आवे दाइ रे, दो० ॥ ५ ॥ जोवन रूपे आगली, अणीयाला
दोइ नेण रे, दो० । मुखडे जीत्यो चंद्रमा, श्रवे सुधारस वैण रे, दो० ॥ ६ ॥ रूप
अधिक सोहे वली, चतुराइ गुणमेलि रे, दो० । सोवन मुद्रा मणि जडी, दूधे साकर
भेलि रे, दो० ॥७॥ भणी गुणी चोसठ कला, अपछरने अणुहार रे, दो० । पहिले गुण-
ठाणे थई, गुरु संगति सुविचार रे, दो० ॥ ८ ॥ मिथ्यात्वी सिरसेहरो, सिवभूति पंडित
तेह रे, दो० । शिष्यणी पिण सुरसुंदरी, तेहवी कीधी तेह रे, दो० ॥ ९ ॥ मिथ्यामत
थापे घणुं, तत्त्वथकी विपरीत रे, दो० । काने पिण न गमे सुण्यो, जैनधर्म सुं प्रीत रे,
दो० ॥ १० ॥ हवे बीजी कन्यातणो, सुणो पठन अधिकार रे, दो० । शास्त्र भण्या
जिनमततणा, आगम अरथ विचार रे, दो० ॥ ११ ॥ चोसठ महिलानी कला, जाणे
गुरु सुपसाय रे, दो० । अवसरे धर्म करे वली, प्रणमे जिनवर पाय रे, दो० ॥ १२ ॥

जैन भाव सघला लहे, निश्चयने विवहार रे, दो० । कहे 'जिनहर्ष' चोथी थई, ढाल इणे अधिकार रे, दो० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ६९ ॥

दूहा–जिनमत धर अध्यापके, कुमरी भणावी जेह । मिथ्यामत राचे नही, धरम रंगाणी देह ॥१॥ एकज सत्ता दुविध नय, काल त्रिण गति च्यार। अस्तिकाय पांचे छए, द्रव्य सात नय धार ॥ २ ॥ आठ करम नव तत्त्व तिम, दसविध मुनिवर धर्म । पडिम इग्यारस बार व्रत, जाणे एहवा मर्म ॥ ३ ॥ मूलुत्तर कम्मपयडि, इगसो अट्ठावन्न । कर्म-बंधना हेतु पिण, जाणे सत्तावन्न ॥ ४ ॥ बंध उदय उदीरणा, सत्ता जाणे तेह । सुहुम विचार सवे लहे, प्रवचन भाख्या जेह ॥ ५ ॥

ढाल ५ मी. "इडर आंबा आंबली रे"एहनी–सुंदरि ए सुरसुंदरी रे, जोवन पहूंती जोर । भणी गुणी सगली कला रे, चतुरपणे चित्त चोर ॥ १ ॥ सुगुणनर ! जोवो

श्री पाल राजा का रास



अभ्यंतर सभामें बैठा हुआ राजा प्रजापाल अपनी दोनों राज पुत्रीयोके विद्याभ्यासकी परीक्षा ले रहा है।



(पत्रांक १३)

पुण्यविशेष, पुण्ये लहीये रिद्धि अशेष, पुण्ये लहीये प्रभुता पेखि, वारू पुण्यतणा
फल देखी, सु० ॥ २ ॥ रूपवंत गुण लवणिमा रे, विद्या प्रभुता सार । मदना कारण
छे सहू रे, पिण मद न करे लिगार, सु० ॥ ३ ॥ इक दिन अभ्यंतर सभा रे, बेठो राय
उल्लास । बोलावी बे निज सुता रे, साथे पाठक तास, सु० ॥ ४ ॥ विनयवती निज
तातने रे, आवी कीधी सलाम । चकित थई सगली सभा रे, रूप निरखी अभिराम,
सु० ॥ ५ ॥ खोले बेसारी सुता रे, राजा धरिय विवेक । बुद्धि परीक्षा कारणे रे, दीधी
समस्या एक, सु० ॥ ६ ॥ राइ कह्यो पद छेहलो रे, "पुण्ये लहीये एह" । गुणवंती
सुरसुंदरी रे, बोली ततखिण तेह, सु० ॥ ७ ॥ धन यौवन डाहापणो रे, रोगरहित
निज देह । मनवल्लभ मेलावडो रे, "पुण्ये लहीये एह", सु० ॥ ८ ॥ रलियायत राजा
थयो रे, सांभलि तास वचन । कुमरी अध्यापक भणी रे, लाख गमे दीधो धन, सु०

॥ ९ ॥ लोक खुस्याल सहू थया रे, रंज्या राणी भूप। सहु को लोक कहे इसूं रे, एतो सरसति रूप, सु० ॥ १० ॥ तुह्मे पिण मयणासुंदरी ! रे, समस्या पूरो एह । अनुमति लहि निज तातनी रे, कहे कुमरी गुणगेह, सु० ॥ ११ ॥ विनय विवेक प्रसन्नता रे, सीलसुं निर्मल देह। शिवपदनो मेलावडो रे, "पुण्ये लहीये एह", सु० ॥ १२ ॥ मात पिता हरषित थया रे, हरख्या लोक न जात। प्राये मिथ्यात्वी भणी रे, न गमे उत्तम वात, सु० ॥ १३ ॥ उत्तमने उत्तम गमे रे, नीचने नीच सुहाइ । ढाल थई ए पांचमी रे, कहे 'जिनहर्ष' बनाइ, सु० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ८८ ॥

दूहा—कुमरीनी इणपरि करी, बुद्धि परीक्षा राय। आगलि जे थाये हिवे, ते सुणज्यो चितलाय ॥ १ ॥ कुरुजंगल देसे अछे, संखपुरी इण नाम । नगरी तेहनो राजवी, दमितारि अभिराम ॥ २ ॥ उज्जेणी राजातणी, नितप्रति सारे सेव । निज बदले एकण

वरस, मूंक्यो अंगज हेव ॥ ३ ॥ नाम तास छे अरिदमन, अरि दमि कीधा जेर ।
जाणे सूरति कामनी, नारि रहे नित घेर ॥ ४ ॥ भमरो केतकि गंधसुं, मांडि रहे
जिम मोह । तिम सुख पामे नारियां, कुमर निहाली सोह ॥ ५ ॥

ढाल ६ ठी. "मुजरो मानो हे जालम जाटणी" ए जाटणीना गीतनी—मदन मनोहर
कुमर कलानिलो, देखी जोवन वय सुकमाल, कुमरी मोही हो कुमर सुजाणसुं। सुरसुंदरी
मुख पंकज भाल, नयणे जोवे हो फिर फिर कुमरने, पामे सुख मुख तास निहाल, कु०
॥ १ ॥ दीठां हीयडो हेजे उलसे, दीठां पाखे अंदोह, कु० । एतो अणखाधे पाणी रसो,
एहवो पापीरे मोह, कु० ॥ २ ॥ ढांक्यो न रहे किम ही नेहलो, जो करे कोडि उपाय,
कु० । आग छिपाई घास पलालमें, परगट ते खिणमांहे थाय, कु० ॥ ३ ॥ चोवा चंदन
कुसुमनी वासना, छानी धरीये छिपाय, कु० । तो हि खिणमांहे परगट हुवे, तिम ए नेह

दिखाय, कु० ॥ ४ ॥ बापे जाण्यो नेह सुतातणो, पुंत्री! सांभल तूं सुविचार, कु० । जे मन माने जेहसुं प्रीतडी, ते परणावूं भरतार, कु० ॥ ५ ॥ हीयडे हरखी कुमरी इम कहे, लोक तणी तजि लाज, कु० । वांछ्यो वर पासुं तो एहने, परणावो महाराज!, कु० ॥ ६ ॥ अथवा तुह्मे मुझने परणावसो, माहरे तेह प्रमाण, कु० । बाप दीयो वर कन्या वरे, ते सुकुलीणी सुजाण, कु० ॥ ७ ॥ तुमथी लहीये वंछित बापजी!, तुमथी सुख लहीये श्रीकार, कु० । पोतानी जाणी सुखिणी करो, तुह्मे माहरे किरतार, कु० ॥ ८ ॥ इण वचने राजा तूठो कहे, जाणी अंतरभाव, कु० । ए अरिदमन कुमर पुत्री! वरो, जुगतो सरल सभाव, कु० ॥ ९ ॥ सहु कोने मन मानी वातडी, भलो कह्यो महाराय, कु० । सरीसा सरीसी ए जोडी मिली, आवी सहु कोने दाय, कु० ॥ १० ॥ लोक सहु को राजाने कहे, होस्ये इहां रंगरोल, कु० । एह जमाई सोभे तुह्म घरे, जिम मुख सोभे

तंबोल, कु० ॥ ११ ॥ राजा पिण रलीयायत थई करी, कीधो वचन प्रमाण, कु० । छट्ठी ढाल सगाइ नृप करी, कहे 'जिनहर्ष' सुजाण, कु० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ १०५ ॥

दूहा—हिवे मयणाने पूछीयो, पिण बोले नहीं तेह । नीची दृष्टि निहालती, मुखडे लाज करेह ॥ १ ॥ पुनरपि राजा पूछीयो, पुत्री ! मुझने भाष । ताहरा मनमांहे हुवे, वरनी जे अभिलाप ॥ २ ॥ वार वार इम पूछतां, कुमरी थई सलाज । मुख मुलकी कहे तातने, पूछणसुं स्यो काज ? ॥ ३ ॥ चतुर विचक्षण छो तुम्हे, जाणो छो सहु नीति । कुलकन्याने पूछीये, एह नहीं जुगती रीति ॥ ४ ॥ कुलवंती कहो किम कहे ?, मुझ परणावो एह । मात पिता जेहने दीये, तेहिज वरसुं नेह ॥ ५ ॥ निश्चयसुं जो जोईये, ते पिण बाह्य निमित्त । सुख दुख पामे प्राणीयो, निज निज पूरवकित्त ॥ ६ ॥

ढाल ७ मी. "मया मोहि दिखणी आणि मिलाइ" एहनी—मयणा कहे सुणो तातजी !

रे, पूरव लिखित प्रमाण । ते सघलो आवी मिले, होजी केहो इहां विन्नाण ? ॥ १ ॥
पिताजी!, कर्म सबल जगमांहि, कर्म करे तेहिज हुवे, होजी सुख दुख अरति उच्छाहि,
पि० ॥ २ ॥ जिण वेलाये जेहवा रे, जीवे कीधा कर्म । उदय थया तिण अवसरे, होजी
लहीये फलनो मर्म, पि० ॥ ३ ॥ रंक फेडी राजा करे रे, राजा फेडी रंक । एहवो कुण ?
फेडी सके, होजी कर्म लिख्या जे अंक, पि० ॥ ४ ॥ राय कहे पुत्री ! सुणो रे, तुं मुझ
प्राण आधार । वार वार तुझने कहूं, होजी मांगो वंछित भरतार ॥ ५ ॥ सुताजी !, हुं
सबलो जगमांहि, मुझ तूठे सहु संपजे, होजी सुख दुख अरति उछांहि, सु० ॥ ६ ॥
माहरी आस्या सहु करे रे, निबलाने बलवंत । हूं तूठो दालिद्र गमूं, होजी रूठो जाणि
कृतंत, सु० ॥ ७ ॥ रंक प्रते राजा करूं रे, राय भणी करुं रंक । सबला ते पिण माहरी,
होजी माने मनमां संक, सु० ॥ ८ ॥ करण मते ते हूं करूं रे, सुख दुख माहरे हाथ ।

रूठो जमघर मोकलुं, होजी तूठो करुं नरनाथ, सु० ॥ ९ ॥ वलतूं मयणा वीनवे रे,
तात! सुणो मुझ वत्त । तुमने पिण करमे किया, होजी राजन! राज निमित्त, पि०
॥ १० ॥ ॥ १० ॥ जेहने पोते पुन्य छे रे, तेहने तूसे राय । पुन्य विना तूसे नहीं, होजी जो
करे लाख उपाय, पि० ॥ ११ ॥ छोरू पिण मोटा तणा रे, सुखीया दुखीया होइ ।
कारण छे सहु कर्मनो, होजी गरव म करज्यो कोइ, पि० ॥ १२ ॥ थाप्यो कुमरी कर्मने
रे, उत्थाप्यो नृप वैण । रीसवसे थयो आकरो, होजी कीधा राता नैण, पि० ॥ १३ ॥
गरव करे खोटो जिके रे, तेहमें किसो सवाद?। ढाल थई ए सातमी, होजी 'जिन हरष'
सुता नृप वाद, पि० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ १२५ ॥

दूहा—रीसाणो नृप इम कहे, रे रे मूढ गमार!। तूं लीला सुख भोगवे, ते सहू मुझ उपगार ॥ १ ॥ ॥ १९ ॥ पहिरे कंचण आभरण, नव नव वेस बणाय । खाणा पीणा खेलणा,

ते सहू मुझ पसाय ॥ २ ॥ मयणा कहे सुणो तातजी!, हूं तुम्ह कुल उत्पन्न । में पामी सुख साहिबी, ते मुझ पोते पुन्न ॥ ३ ॥ मयणा इणिपरि भाषतां, राजा थयो कृतंत । जिम पावक घृत सींचीयो, वाधे झाल अत्यंत ॥ ४ ॥ भाग्यहीण ए दीकरी, दीसे छे परतक्ष । कह्यो न माने माहरो, लीयो न मेल्हे पक्ष ॥ ५ ॥ क्रोध वसे थयो रातडो, धमधमीयो नरनाह । सगपण बेटी बापनो, भागो मन उच्छाह ॥ ६ ॥

ढाल ८ मी. नायकानी—मयणा कहे सुणो तातजी! रे, इवडी म करो रीस मोरा तातजी! रे, । जाण तुह्मे सहु वातनारे लाल, तुह्मे मोटा अवनीस मो०, मयणा० ॥ १ ॥ फोगट गरव न कीजीये रे, गरवे सहु गुण जाइ मो० । इंद्र नरेंद्र पिण गर्वथीरे लाल, लघुता पणो लहाइ मो०, म० ॥ २ ॥ तुह्मे कहो जे हूं करूं रे, सुखीया दुखीया लोक मो० । करता हरता हूं सहीरे लाल, ते तो इमही फोक मो०, म० ॥ ३ ॥ तुह्म सेवाथी

जो हुवे रे, सुखीया सहु जगमांहि मो०। तुझ सेवा करता नथीरे लाल, ते तो सुखीया कांहि ? मो०, म० ॥ ४ ॥ राय कहे रूठो थको रे, तूं निरधन वर जोगरे दुहागिणि!। ए मतिसारू नवि मिलेरे लाल, तुझने उत्तम भोगरे दु० ॥ ५ ॥ मयणा! सुण मुझ वातडी रे, ताहरे पोते पापरे दु० । तो सूझे तुझ एहवूंरे लाल, पामिस बहु संतापरे दु०, म० ॥ ६ ॥ हठमाती पोतातणे रे, जाणे हूं बुद्धिवंतरे दु०। समझावी समझे नहींरे लाल, अवगुण एह महंतरे दु०, म० ॥ ७ ॥ राती निज गुण ज्ञानमें रे, मूरख निगुण निटोलरे दु० । लेखवती केहने नथीरे लाल, मूढ न जाणे बोलरे दु०, म० ॥ ८ ॥ हूं जाणूं सुखिणी करूं रे, परणावूं वर साररे दु०। पिण माहरो न करे कह्योरे लाल, थाइस दुःख भंडाररे दु०, म० ॥ ९ ॥ मयणा कहे तुझने रुचे रे, ते परणावो नाह मोरा तातजी! रे । मुझ पोते पुन्य जो हुस्येरे लाल, तो मुझ होस्ये उच्छाह मो०, म० ॥ १० ॥ गाढेरो

रीसावीयो रे, सांभल(संभलावी) एहवा बोलरे दु० । मोटा बोली दीकरीरे लाल, मुझ लेखव्यो तृण तोलरे दु०, म०॥११॥मुझने इणे उत्थापीयो रे, थाप्यो वखत सहायरे दु० । कहे 'जिनहरष' सहू सुणोरे लाल, आठमी ढाल कहायरे दु०, म०॥१२॥ सर्व गाथा १४३ ।

दूहा–रोषातुर नृप देखिने, मंत्री चिंते एम । ठारूं वयण सुधारसे, सीतल थाये जेम ॥ १ ॥ महाराय! रयवाडीये, रमवानो छे लाग । जईये रमवा आज प्रभु!, फूल रह्यो छे बाग ॥ २ ॥ अंतरगत दाझी रह्यो, क्रोधागनि विकराल । ऊठ्यो तुरत उतावलो, मानि वचन भूपाल ॥ ३ ॥ चरवादार प्रते कहे, करो तुरंग तइयार । हुकम सुणी आण्यो तुरी, सपलाणो तिणवार ॥ ४ ॥ चतुरंगसेना परिवर्यो, राय थयो असवार । हिवे आगलि जे नीपजे, ते सुणज्यो अधिकार ॥ ५ ॥

ढाल ९ मी. "रे हमीरीयारे रहि वैरी नैण झकोलतो"एहनी–राय रयवाडी संचर्यो,

आगलि उडे खेह मंत्रीसर!। राजा चकित थई कहे, आवे छे कुण एह मं०, रा० ॥ १ ॥
आडंबर करता थका, न धरे किसि प्रवाह मं०। कोलाहल हलबोलसुं, मंत्री कहे सुणि नाह!
राजेसर!, रा० ॥ २ ॥ ए पेडो कोढी तणो, सात सयां परिवार राजेसर! । कोढी
सहु भेला थया, व्याप्यो रोग अपार रा०, रा० ॥ ३ ॥ राजकुंवर एक नान्हडो, आवी
मिलीयो मां(य)हि रा० । ते पिण कोढी फरसथी, उंबर रोग लहाय रा०, रा० ॥ ४ ॥ उंबर
रोग थकी थयो, उंबर राणो नाम रा० । ते आवे छे ए चल्यो, ए असमाधिनो ठाम
रा०, रा० ॥ ५ ॥ असवारी वेसर तणी, परिवरीयो परिवार रा०। गतनासा चामर धरे,
गलित त्वचा छत्रधार रा०, रा० ॥ ६ ॥ घंटा हाथे झालिने, मुहर चले गत कर्ण रा० ।
लोकांने त्रीहावतो, भूंडो जेहनो वर्ण रा०, रा० ॥ ७ ॥ कोढ मंडल अंग ओलगू,
गलितांगुलि मंत्रीस रा० । सर्व गलित कोटवालछे, तेहमें उंबर ईस रा०, रा० ॥ ८ ॥

द्रादमंडल कोढे गल्या, दीसंता विकराल रा० । सेवक तास दोहागीया, राध रुधिर परनाल रा०, रा० ।९। देसाधिप पासे लीये, मननो मान्यो माल रा० । ना कोई न कही सके, एहवी एहनी चाल रा०, रा० ॥ १० ॥ तेह भणी बीजी दिसे, चालो श्रीमहाराय! रा० । जावा द्यो ए कोढीया, जिम दरिसण नावि थाय रा०,रा० ॥ ११ बीजी दिसि राजा चल्यो, मारग छोडी जाम रा० । कोढीवृंदे निरखीयो, हूकल करता ताम रा०, रा० ॥ १२ ॥ आव्या ते ऊतावला, नृप साम्हा तिणवार रा० । तब राजा एहवूं कहे, सुण मंत्री ! सुविचार मं०, रा० ॥ १३ ॥ परचावो पासे जई, मुह मांग्यो द्यो माल मं० । पिण दूरे रहाविज्यो, करिज्यो मुख लालमपाल मं०, रा० ॥ १४ ॥ हुकम दीयो मुहुताभणी, बीहंते भूपाल मं० । कहे 'जिनहरष' पूरी थई, नवमी ढाल रसाल मं०, रा० ॥ १५ ॥

दूहा—गलितांगुलि ऊतावलो, उंबरनो परधान । ते पहिली आवी कहे, सांभल हो

| २५ ॥ राजान ! ॥ १ ॥ उंवरराणो अम्हतणो, साहिव छे सुपराण । माने सहु को तेहने, कोई न
लोपे आण ॥२॥ मणि माणिक कंचण रयण, भोजन कूर कपूर । उंवर राणो हुकमसुं, मंगावे
भरपूर ॥ ३ ॥ अम्हे सहू सेवक नफर, सुखीया तास पसाय । कमी नहीं किण वातनी, पिण
सांभळ महाराय ! ॥ ४ ॥ राणी नहीं राजातणे, ए छे मोटी खोड । इक कन्या द्यो अमभणी,
जिम पहुंचे मन कोड ॥ ५ ॥

ढाल १० मी. "वात म काढो हो व्रततणी" एहनी– राय कहे किम दीजिये, निज कन्या
गुणवंतो रे । रोगी नरने आपतां, जगमें अपजस लहंतो रे, रा० ॥ १ ॥ वलतुं गलि-
तांगुलि कहे, ताहरो जस जग गाजे रे । मांग्यो द्ये मालव धणी, एह विरुद तुझ छाजे रे, ॥ २५ ॥
रा०॥२॥ के तो कीरति हारीये, के दीजे निज कन्या रे । जेहवी तेहवी अम्हभणी, मानीस्ये
ते धन्या रे, रा०॥३॥ पडीयो राय विचारणा, अजुगति वात सुणाई रे । किमही दुरस पडे

नहीं, दोतड पडीयो भाई रे, रा० ॥ ४ ॥ नृपने मयणा सांभरी, कन्या ए वर जोगी रे। अविनयनो फल जिम लहे, थाये दुखिणी रोगी रे, रा० ॥ ५ ॥ कीरति कहो किम हारीये, दोहिली जे जगमांहे रे। कन्या देतां जस रहे, तो जस गमीये काहे रे, रा० ॥ ६ ॥ मुझ मंदिर तुम्हे आवज्यो, इम कही पाछो वलीयो रे। राय गृहांगण आवीयो, सासीनो हलफलीयो रे, रा० ॥ ७ ॥ तेडी मयणा सुंदरी, राय कहे सुण बेटी ! रे। हूं तुझने सुख चिंतवूं, तूं अवगुणनी पेटी रे, रा० ॥ ८ ॥ बाप सुकरमी जो हुवे, वंछित वर परणावूं रे। हठ परिहर सठ बालिका !, दोहग दूरे गमावूं रे, रा० ॥ ९ ॥ जो आपकरमी तूं हुवे, तो वर उंबर राणो रे। तुझ करमे ए आणीयो, परणेवानो टाणो रे, रा० ॥ १० ॥ मयणा मुलकीने कहे, वखत लिख्यो वरराजो रे। ते मुझ सिरनो सेहरो, माहरे तेहसुं काजो रे, रा० ॥ ११ ॥ राये ते तेडावीयो, सपरिवारसुं आयो रे। करमसंयोगे नृप कहे, तूं वर मयणा पायो रे,

रा० ॥ १२ ॥ उंबर कहे ए राजवी !, वात न जुगती दीसे रे । दसमी ढाल पूरी थई, कहे 'जिनहरष' जगीसे रे, रा० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ १८१ ॥

दूहा–वायस कंठे कनकनी, जिम सोभे नहीं माल । जोडी नहीं बग हंसली, तिम मुझने ए बाल ॥१॥ राय कहे ए दीकरी, कह्यो न माने मुझ । आप करम माने सही, तिण आपूं छूं तुझ ॥२॥ मुझ दीधो वर आदरे, तो परणावूं जोय । करम मांहि तूंहिज लिख्यो, मुझने दोस न कोय ॥ ३ ॥ दया न आणी चित्तमें, नाण्यो नेह लिगार । लोक कहे ए स्यूं थयो, करे अधम आचार ॥ ४ ॥ उत्तम कोप करे नहीं, करे ते मान प्रमाण । पिण ए जुगतूं नवि करे, कोपे चढ्यो अयाण ॥ ५ ॥

ढाल ११मी. वांगरीयानी–उंबर कहे सुण राजवी! रे, माहरी ए नहीं जोडिरे गुणवंता ! । हूँ कोढी रोगे भर्यो रे, रतन लगाडूं खोडिरे गु० ॥ १ ॥ मुझ सोभे नहीं ए कांता, में पातक

कीया अनंता गु० । मुझ देखी सहू बीहंता, तिण एहनो नहीं मुझ कोडरे गु० ॥ २ ॥ जो मुझने देवा करे रे, तो कोई मुझ जोगरे गु० । जेहवी तेहवी आपीये रे, हसे नहीं जिम लोगरे गु०॥३॥ ए कन्या ने हूं किहां रे, ए हंसी हूं कागरे गु० । सरिखे सरिखो जो मिले रे, तो सोभे महाभाग ! रे गु० ॥ ४ ॥ अविचार्युं जो कीजिये रे, लोक हसे घर हाणि रे गु० । तुमने एहवूं नवि घटे रे, अपजसनी ए खाणि रे गु० ॥ ५ ॥ तूं द्ये पिण हूं ल्यूं नहीं रे, थाओ तुझ कल्याण रे गु० । बीजी ठामे मांगस्यूं रे, उंबरनी ए वाण रे गु० ॥६॥ राय कहे हूं स्यूं करूं रे, एहनो एहवो भाग रे गु० । वांक न को तुझ मुझ तणो रे, ए कन्या तुझ लाग रे गु० ॥ ७ ॥ मयणा निसुणी एहवूं रे, ऊठी तुरत तिवार रे गु० । ए वर लिखीयो भागमें रे, तो हिवे किसो विचार रे गु० ॥ ८ ॥ उंबर कर निज कर ग्रह्यो रे, मयणा धरीय विवेक रे गु० । कोढी वर पिण आदर्यो रे, छोडी नहीं निज टेक रे गु०॥९॥

उमराउ सामंत जे रे, मंत्रीसर परधान रे गु०। अंतेउर वारे सहू रे, वले नहीं राजान रे
गु० ॥ १० ॥ लोक सहू जोइ रह्या रे, दुखभर रोवे सेण रे गु०। मुखमें घाली आंगुली रे,
इण परि भाषे वेण रे गु० ॥ ११ ॥ एह अजुगतूं नृप करे रे, कीडी ऊपरि घाव रे गु०।
पिण कोई न कही सके रे, राजा वदे सो न्याव रे गु० ॥ १२ ॥ ए थई ढाल इग्यारमी रे,
कोप्यो राय अपार रे गु०। कहे 'जिनहरष' हिवे सुणो रे, आगलि जे अधिकार रे गु०॥१३॥

दूहा—रोवंतां इणपरि सहू, कहे अधम ए भूप। रयण अमूलक कन्यका, किम नांखेछे कूप
॥ १ ॥ छोरू कुछोरू जो हुवे, तोही पहिडे नहीं मावीत। भोलपणे एहवो कह्यो, तो ही राजा
चाले नीत ॥२॥ छोरू वेचे बाप जो, तो कुण आडो थाय। जोर न चाले रायसुं, सहू करे हाय
हाय ॥३॥ दुर्लभ दरसण देखतां, मयणा मोहन वेलि। आंबा एरंड पाखति, रोपे छे गुणगेलि
॥४॥ सगले कीधी वीनती, सहू कह्यो समझाय। कहणा मांहे केहनी, बाकी न रही कांय ॥५॥

ढाल १२ मी. "सुगुण सनेही मेरे लाला!" एहनी—मयणा निजमन काठो कीधो, जो मुझ वखते ए वर दीधो। तो माहरे ए उंबर राणो, इण भव एहिज प्रीतम जाणो ॥ १ ॥ इहां कोईनो नहीं छे चारो, वांक न कोई इहां (अछे) पितारो। दाय उपाय अनेक विचारो, करम सबल जगमांहि अ(व)तारो ॥ २ ॥ मन दृढ देखी कुमरी केरो, राय बल्यो मनमांहि घणेरो। सती शिरोमणि सत्त्व न चूके, लीधो पख सापुरस न मूंके ॥३॥ सायर मरजादा जो लोपे, क्षमावंत मुनिवर जो कोपे। शेषनाग मुख जो विष उलटे, तो पिण उत्तम वयण न पलटे ॥४॥ पवन डुलायो मेरु न डोले, मोटा दीन वचन नवि बोले। आपद संपद मांहि सरीखा, ते नर बावन वीर सरीखा ॥ ५ ॥ करमायत्त सहू ए दीसे, कुमरी निजमन मांहे हींसे। एहवुं देखी राय परणावी, उंबर राणाने मन भावी ॥ ६ ॥ उंबर कुमरी वेसर चडीया, निज डेराने पंथे ख(प)डीया। नगर लोक सहू ऊभा जोवे, करे कोलाहल डसके

रोवे ॥ ७ ॥ एक कहे धिग धिग ए राजा, एहना खोटा थया दिवाजा । कोई कहे ए कुमरी अयाण, राय वचन न कियो परमाण ॥ ८ ॥ कोई कहे मा भूंडी कीधी, निजकन्याने सीख न दीधी । केई पाठक अवगुण काढे, जिनमतने केई दूषण चाढे ॥ ९ ॥ मयणा चाली उंबर संगे, हीयडे हरख धरी उछरंगे । जैन धरम मींजी भेदाणी, किम पलटे तेहनी कहो वाणी ॥ १० ॥ बारमी ढाल थई ए जाणो, कुमरी परण्यो उंबर राणो । करमतणी 'जिनहरख!' कहाणी, ज्ञानी विण नवि जाये जाणी ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ २१५ ॥

दूहा—हिवे बीजी कन्या तणो, जोडेवा वीवाह । तेडावी सिवभूतिने, इम भाषे नरनाह ॥ १ ॥ लगन अनोपम जोइवो, निरदूषण श्रीकार । सुरसुंदरी परणावीये, करी महोच्छव सार ॥ २ ॥ लगन शुद्ध छे असुकदिन, एहवा लगन न कोइ । ज्योतिष शास्त्र निहालतां, एहवूं कदीक होइ ॥ ३ ॥ जोसी वचन प्रमाण करी, मांड्यो राय वीवाह । परणावूं सुरसुंदरी, अधिको करीउच्छाह ४

ढाल १३ मी. "करडो तिहां कोटवाल" एहनी–प्रीति धरी मनमांहि, राय तेडाव्या हो साजन आपणा । सगा सणीजा लोक, प्रीति वधारण हो आव्या अतिघणा ॥ १ ॥ राजवीयांने साथि, आव्या हो राजकुमर रलीयामणा । अमरपुरी अवतार, नगर विराजे हो मनुष्य सुहामणा ॥२॥ डेरा तंबू ताणी, मंडप रचीया हो नव नव भांतिना । रंग मंडप रंगावि, कारण कीधा हो सगला खांतिना ॥ ३ ॥ लौकिक विधि सहु कीध, तेहनो स्यूं कहीये हो लोक जाणे सहू । आव्यो लगन सुदीस, आरिम कारिम कीधा तिहां बहू ॥ ४ ॥ हिवे अरिदमणकुमार, सुंदरवागा हो अंग बणावीयो । पुरुषतणा सिणगार, कीधा हो सहुकोने मन भावीयो ॥ ५ ॥ चंचल चपल तुरंग, सोवन साकत (पलाण) हो चढीयो नचावतो । जाणे देवकुमार, मुखडे तंबोल सुरंगा चावतो ॥६॥ चवरी मंडपमांहि, कुमर आवीने हो बेठो तिण समे । बेठा सहू भूपाल, वेह वणावी कंचन कलसमे ॥७॥ सोले ही सिणगार, कुमरी

वणाया हो सुंदर मनरली । आवी चवरीमांहि, वादलमांहे हो जाणे चमकी वीजली ॥ ८ ॥ वेठी वरने पास, सोहे जाणे करि श्रीपति रुकमणी । सोभा अधिक सुहाय, जाणे इंद्राणी इंद्र कन्हे वणी॥९॥फिरीया फेरा च्यारि, च्यारे चवरीमां मंगल वरतीया । कन्या वर कंसार, मांहो मांहे मिली आरोगीया॥ १० ॥वर कन्या वीवाह, करि परणाव्या हो ढोल घुरावीया । रंगिड धुं धुं धुं घुर्यारे निसाण, भेरि भुंगल वाजा वजडावीया ॥११॥ थयो सुरंग वीवाह, रंग सुरंग रह्यो वेवाहीयां । ऊभा चारणभाट, विरुदभणे मनडे ऊमाहीयां ॥१२॥ हथलेवो तिणवार,जोसी जोडाव्यो रूडी जुगतसुं।एथई तेरमीढाल, कहे 'जिनहरष'जाणज्यो विगतसुं१३

दूहा—कर मेलहावे नृप दीया, सोवन रयण भंडार । सुंदर घोडा हाथीया, दासी दास अपार ॥ १ ॥ वहु मौलिक वागा दीया, रतन जडित सिणगार । सोवन पाए ढोलीया, सउडि(सोडि) तलाई सार ॥२॥ दीधो सवलो दायजो, कहतां नावे पार। प्रीती तिहां देतां

थकां, न करे कोई विचार ॥३॥ राजा राणीनो घणो, पुत्री ऊपर प्रेम । माल अमा(पो)मो आपीयो, प्रीति जणावी एम ॥४॥ कीधी बहु पहिरावणी, राजवीयांने रंग । रस राख्यो जस संग्रह्यो, वाध्यो प्रेम अभंग ॥ ५ ॥

ढाल १४मी. "राजा जो मिले" एहनी—लोक लुगाई मिलीया अछेह, वात करे माहो मांहि तेह, पुन्ये सहू मिले, पुन्ये मनना मान्या सहू मिले । पुन्ये उत्तम सयण संयोग, पुन्ये लहीये परिघल भोग, पु० ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर रमणि विलास, पुन्ये पहूंचे मननी आस, पु० । जोवो कुमरीनो पुन्य प्रकास, वंछित वर लह्यो लील विलास, पु० ॥२॥ देव-कुमर सरीखो वरराज, कुमरी अपछरने सिरताज, पु० । सरीखी जोडि जोडी जगदीस, सुख भोगवस्ये ए निसिदीस, पु० ॥३॥ करसे रूप सफल हिवे देह, जोवन सफल लेस्ये गुणगेह, पु० । एहवो वर घर रिद्धि पंडूर, लहीये जो हुवे पुन्य अंकूर, पु० ॥४॥ भाग्य-

वती कुमरी ए धन्य, एह सरीखी नहीं कोई अन्य, पु० । एक वापनी पुत्री दोय, परतिख
पुन्य पटंतर जोय, पु० ॥ ५ ॥ एक कहे वारू कर्यो राय, राजा तूठे स्यूं नवि थाय, पु० ।
एक कहे कुमरी बुद्धिवंत, वाप खुसी करी वरीयो कंत, पु० ॥ ६ ॥ अध्या (पकने) रूने हाथे
सिद्धि, भणी गुणी पामी वलि रिद्धि, पु० । एक कहे परतिख फल जोइ, शैव धरमथी स्यूं
नवि होइ, पु० ॥७॥ पाछली भवे इणि पूजी गोरि, फल लहिस्ये आगे एतो मोरि, पु० ।
लोक मिली इण परि करे वात, जीतानावेली कहि वात, पु० ॥ ८ ॥ मयणाने पोते नहीं
पुन्य, पुन्य विना किम थइये धन्य, पु० । राजवीयांसुं करीय उपाधि, तो जोवो तेहना फल
लाधि, पु० ॥९॥ इम निज निज मुख बोले बोल, समझ विहूणा निगुण निटोल, पु० ।
कहे 'जिनहरष' ए चउदमी ढाल, पाणी पाणीने जास्ये ढाल, पु०॥१०॥ सर्व गाथा ॥२४७॥

दूहा—हिवे राजा ताजा प्रघल, विविध भांति पकवान । असन पान खादिम प्रमुख,

जुगते जिमाडी जान ॥ १ ॥ ऊपर दीधा अति प्रबल, पान लविंग मुखवास । जस लीधो जीमाइने, सहू कहे साबास ॥ २ ॥ सगा सहू संतोषिया, खर्च्यो माल अपार । पुत्री हिवे वोलाइवा, राजा थयो तयार ॥ ३ ॥ हय गय रथ पायक प्रघल, निहस पडे नीसाण। कुमरीने माता दीये, सीख भली हित आण ॥ ४ ॥

ढाल १५मी. "इतला दिन हूं जाणती रे हां" एहनी–हिवे ते सोहगसुंदरी रे हां, पुत्रीने दीये सीख, बाई! सांभलो। सासरीया संतोषिजे रे हां, हलवे भरजे वीख, बा०॥१॥ तूं छे चतुर सुजाण रे हां, तूं मुझ आतम प्राण, बा० । विद्या विनयनी खाणि रे हां, तुझ मुखे मधुरी वाणि, बा० ॥ २ ॥ विनय करे परीयण तणो रे हां, स्वजन तणो सुविशेष, बा० । कुवचन म कहिसे केहने रे हां, किणसुं म करिसे द्वेष, बा० ॥ ३ ॥ देव तणी परि मानिजे रे हां, भगति करे भरतार, बा० । कह्यो म लोपे पिउ तणो रे हां, उत्तम संगति

पडिजे सहूने पाय, वा० । सुसरानी सेवा करे
धार, वा०॥४॥ सासू नणद जेठाणीयां रे हां, जीमे नाह जीमाडि, वा० ।
रे हां, सहूने आवे दाय, वा० ॥ ५ ॥ सूईजे नाह सूतां पछे रे हां, आवे कोई मांगिवा रे हां, न
भोजन वेला घरतणा रे हां, मेल्हे वार उघाडि, वा० ॥६॥ भरजे सुजस भंडार, वा० ॥ ७ ॥
करे तास नाकार, वा० । पर कर ऊपरि कर करे रे हां, सुपीहरी कहराविजे रे हां,
रूडो घर देखाडिजे रे हां, चलिजे चतुर आचार, वा० । करिजे करुणा सदीव, वा०।
करिजे सहूनी सार, वा० ॥८॥ भूख्या दुखीया देखिने रे हां, निसनेहणि मत थाईजे
दोलति हत्थी थाईजे रे हां, कठिण करे मत जीव, वा० ॥ ९ ॥ सुख लहीये देखी देख,
रे हां, लिखि मोकलिजे लेख, वा० । पुत्री! प्रीतम माणसां रे हां, कहे 'जिनहरष'
वा० ॥ १० ॥ जीवथकी तूं वालही रे हां, तूं अम्ह प्राण सरीख, वा० ।
सहू भणी रे हां, पनरमी ढाले सीख, वा० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ २६२ ॥

दूहा—मातपिता पाय लागिने, कुमरी चली पिउ साथ। हय गय पायकसूं हिवे, वोलावे नरनाथ ॥ १ ॥ ए मंदिर ए मालीया, ए नगरी आहीठाण। मुझने वीसरिस्ये नहीं, रात दिवस सुप्रमाण ॥ २॥ सीख करी सहु लोकसुं, नयणे नीर प्रवाह। हीयडो फाटे मायनो, उलट्यो विरह अथाह ॥ ३ ॥ गले लागी पुत्रीतणे, माइ करे आक्रंद। प्रेम तणे परवस थई, है है!! मोह नरिंद ॥ ४ ॥ आंसू कुमरी लोयणे, जलधर जिम संजोई। हत्थालि छाला पड्या, चीर निचोइ निचोइ ॥ ५ ॥ रोतां मृग रोवरावीया, वाट वटाऊ लोक। जातां जीव वहे नहीं, वीछडवानो सोक ॥ ६ ॥ कुमरी चाली सासरे, हिलिमिलि सीख करेह। फिरि फिरि जोवे पाछले, डब डब नयण भरेह ॥७॥ हिवे (मयणा) उंबर राणा तणो, सांभलज्यो अधिकार। मनमां निश्चय राखीयो, न धरे दुख्ख लिगार ॥ ८ ॥

ढाल १६मी. "बिंदली तो नणद गमाई, म्हारे ल्हौड्ये देवर पाई हे नणदल बिंदली ल्ये"

म्हनी–उंबर कहे सुण कुमरी !, तूं तो रूपे जाणे अमरी हे सुंदर वयण सुणो । राय अजु-
गति कीधी, मुझ कोढीने तूं दीधी हे सुं० ॥ १ ॥ वयण सुणो मृगनयणी, मृगराजकटी
ससिवयणी हे सुं० । विधिना रूप नीपायो, देखी पोते सुख पायो हे सुं० । ए जोवन तुझ
नीको, सहु नारि तणे सिर टीको हे सुं० ॥ २ ॥ मुझ आणा सिर धारी, कोई पुरुष अवर
सुविचारी हे सुं० । भोगवि तिणसुं भोगा, मन गमता सरस संयोगा हे सुं० ॥ ३ ॥ हुकम
धणीनो होई, इम करतां दोष न कोई हे सुं० । नारि रयण तूं हीरा, हूं नरमें काच कथीरा
हे सुं० ॥ ४ ॥ तूं तो उत्तम हंसी, हूं वायस जाणि कुवंसी हे सुं० । मुझ हीयडे दुख झाझूं,
राय करणी देखी दाझूं हे सुं० ॥ ५ ॥ ते माटे हठ छोडी, मुझ हुकमे करि कांइ जोडी हे
सुं० । मुझ पासे ते रहिस्ये, तुझसुं सुखफल भोगविस्ये हे सुं० ॥ ६ ॥ उंबरनी ए वाणी,
सुणि मयणा दुखभराणी हो प्रीतम ! वयण सुणो । नयणे नीर प्रवाहा, कर जोडी कहे

दूहा—मातपिता पाय लागिने, कुमरी चली पिउ साथ। हय गय पायकसूं हिवे, वोलावे नरनाथ ॥ १ ॥ ए मंदिर ए मालीया, ए नगरी आहीठाण। मुझने वीसरिस्ये नहीं, रात दिवस सुप्रमाण ॥ २ ॥ सीख करी सहु लोकसुं, नयणे नीर प्रवाह। हीयडो फाटे मायनो, उलट्यो विरह अथाह ॥ ३ ॥ गले लागी पुत्रीतणे, माइ करे आक्रंद। प्रेम तणे परवस थई, हे हे!! मोह नरिंद ॥ ४ ॥ आंसू कुमरी लोयणे, जलधर जिम संजोई। हत्थालि छाला पड्या, चीर निचोइ निचोइ ॥ ५ ॥ रोतां मृग रोवरावीया, वाट वटाऊ लोक। जातां जीव वहे नहीं, वीछडवानो सोक ॥ ६ ॥ कुमरी चाली सासरे, हिलिमिलि सीख करेह। फिरि फिरि जोवे पाछले, डब डब नयण भरेह ॥७॥ हिवे (मयणा) उंबर राणा तणो, सांभलज्यो अधिकार। मनमां निश्चय राखीयो, न धरे दुख्ख लिगार ॥ ८ ॥

ढाल १६मी. "बिंदली तो नणद गमाई, म्हारे ल्हौड्ये देवर पाई हे नणदल बिंदली ल्ये"

॥ ३८ ॥

एहनी—उंबर कहे सुण कुमरी !, तूं तो रूपे जाणे अमरी हे सुंदर वयण सुणो । राय अजुगति कीधी, मुझ कोढीने तूं दीधी हे सुं० ॥ १ ॥ वयण सुणो मृगनयणी, मृगराजकटी ससिवयणी हे सुं० । विधिना रूप नीपायो, देखी पोते सुख पायो हे सुं० । ए जोवन तुझ नीको, सहु नारि तणे सिर टीको हे सुं० ॥ २ ॥ मुझ आणा सिर धारी, कोई पुरुष अवर सुविचारी हे सुं० । भोगवि तिणसुं भोगा, मन गमता सरस संयोगा हे सुं० ॥ ३ ॥ हुकम धणीनो होई, इम करतां दोष न कोई हे सुं० । नारि रयण तूं हीरा, हूं नरमें काच कथीरा हे सुं० ॥ ४ ॥ तूं तो उत्तम हंसी, हूं वायस जाणि कुवंसी हे सुं० । मुझ हीयडे दुख झाझुं, राय करणी देखी दाझुं हे सुं० ॥ ५ ॥ ते माटे हठ छोडी, मुझ हुकमे करि कांइ जोडी हे सुं० । मुझ पासे ते रहिस्ये, तुझसुं सुखफल भोगविस्ये हे सुं० ॥ ६ ॥ उंबरनी ए वाणी, सुणि मयणा दुखभराणी हो प्रीतम ! वयण सुणो । नयणे नीर प्रवाहा, कर जोडी कहे

सुणो नाहा ! हो प्री० ॥ ७ ॥ चरणे सीस लगावी, कहे सी ए वात सुणावी हो प्री० । मनमां जाणी रहिज्यो, फिरि बीजी वार म कहिज्यो हो प्री० ॥ ८ ॥ अधम जनम नारीनो, मेलो जाणे कुंडगारीनो हो प्री० । तजीये सील अमोलो, तो कांजी कोही तूलो हो प्री ०॥ ९॥ सीयल विभूषा कहीये, सीले जस महीयल लहीये हो प्री० । इणि भव प्रिय तूं मोरे, हूं चेडी सरणे तोरे हो प्री० ॥ १० ॥ काम न कोई बीजे, तुझने देखी मन रींझे हो प्री० । वाल्हेसर तूं मन माहरे, बलिहारी प्रीतम ! ताहरे हो प्री० ॥ ११ ॥ ए निश्चय मुझ जोवो, होणहार हुवे ते होवो हो प्री० । सोलमी ढाल सुहावे, 'जिनहरष' सहु सुख पावे हो प्री० ॥ १२ ॥

दूहा—सती सिरोमणि मन सुदृढ, निरमल सील सुहाय । इकतारी इम राखतां, अनुक्रमे रयणि विहाय ॥ १ ॥ प्रहविहसी पूरव दिसे, उदय थयो आदीत । मानुं मयणा सुंदरी, देखवा सुपवीत ॥ २ ॥ चिहुं दिसि चिडीयां चह चही, बोल्या पंखीवृंद । मानुं मयणाने

॥ ४० ॥

कहे, चिरंजीव चिरनंद ॥ ३ ॥ मयणा वयण कहे हिवे, सुण प्रीतम ! सुसनेह । जईये उल्लट भावसुं, श्रीरिसहेसर गेह ॥ ४ ॥ मयणा उंबर आवीया, वांद्या रिषभ जिणंद । मयणा स्तुति इणपरि करे, हीयडे धरि आणंद ॥ ५ ॥

ढाल १७ मी. "आदर जीव ! क्षमा गुण आदर" एहनी—जय जय रिषभ जिणेसर साहिब, शिव संपत्ति दातार जी । नाम थकी नवनिधि सिद्धि लहिये, त्रिभुवन जन आधार जी, जय० ॥१॥ तूं करुणा सागर गुण आगर, महीयल महिमावंत जी । सुर नर नायक पाय नमे नित, दंसण नाण अनंत जी, जय० ॥२॥ अजर अमर अविचल अविनासी, न लहे कोई सरूप जी । ज्योतीरूप अरूपी अरिहंत, त्रिभुवन नाथ अनूप जी, जय० ॥३॥ सयंभूरमण बिंदु जल-केरी, संख्या कहे कोई तास जी । तुझ गुण संख्या न लहे कोई, जो सारद मुखवास जी, जय० ॥ ४ ॥ तूं परतिख सुरतरु अवतारी, वलिहारी तुझ नाम जी । तूं सहु जंतु तणो

उपगारी, भव भमतां विश्राम जी, जय० ॥ ५ ॥ तुझ नामें पामे वांछित फल, तुझ नामे बहु बुद्धि जी। तुझ नामे लहीये जस निरमल, तुझ नामे कुल सुद्धि जी, जय० ॥६॥ शक्र चक्रधर पदवी लहीये, तिणमे किसो विचार जी। मोक्षतणी पदवीनो दाता, तुझ गुण अधिक अपार जी, जय० ॥७॥ बोधि बीज तुझथी पामीजे, तुझथी लहीये धर्म जी। लब्धि सिद्धि तुझ नामे थाये, तूटे सगला कर्म जी, जय० ॥८॥ ताहरी ज्योति सकल त्रिभुवनमें, गावे सगला संत जी। केवल ज्ञान करीने देखे, लोकालोक अनंत जी, जय० ॥ ९ ॥ रोग सोग तुझ नामे नासे, तुझ नामे समृद्धि जी। तुझ नामे लहे काया निरमल, तुझ नामे रिद्धि वृद्धि जी, जय० ॥१०॥ आस्या पूरे चिंता चूरे, दूर गमे कलेस जी। पुन्य पसाये दरिसण पाम्युं, पाप गया सुविसेस जी, जय० ॥ ११ ॥ मयणा इणि परि स्तवना कीधी, भाव भगति सुविसाल जी। कहे 'जिनहरष' थई ए पूरी, भली सतरमी ढाल जी, जय० ॥१२॥

दूहा—इम स्तवना करतां थकां, अंतर भाव विसाल । जिन कंठेथी ऊछली, कुसुम माल ततकाल ॥ १ ॥ माला साथे ऊछल्युं, जिनवर कर फल जाम । उंबर मयणा वयणथी, ते फल लीधुं ताम ॥२॥ माला मयणा संग्रही, वचन कहे तिणवार । स्वामी ! ताहरा देहनो, रोग गयो निरधार ॥३॥ आपणसुं सुप्रसन थया, कृपावंत भगवंत । रोग मिटीने सुख हुस्ये, सही जाणेज्यो कंत ! ॥ ४ ॥ वंदी ऊळ्या भावसुं, धरता मन आंणंद । भाव भगति बहु जुगतिसुं, वांद्या श्रीमुनिचंद ॥ ५ ॥ मीठी अमृत सारिखी, सीतल चंदन जाणि । आगलि बेसी सांभले, श्रीगुरु केरी वाणि ॥ ६ ॥

ढाल १८ मी. "रहो ४ वालहा" एहनी— मुनिवर इणिपरि उपदिसे, धरम करो चित लाइ भवियण ! । आउ अथिर जिनवर कह्यो, अंजलि जल जिम जाइ भ०, मु० ॥ १ ॥ जीवतणी जयणा करो, संजम तप श्रीकार भ० । एहथी सिवसुख पामीये, नर सुर सुख

॥ ४३ ॥

दातार भ०, मु० ॥ २ ॥ इणपरि दीधी देसना, ऊठ्यां सहु नर नार भ० । मयणा मुनिवर ओलखी, पूछे गुरु तिणवार भवि०, मु० ॥ ३ ॥ ए नर कुण तुझ संगते, सुभ लक्षण गुण-वंत भ० । मयणा भाषे रोवती, सगलो निज विरतंत भ०, मु० ॥ ४ ॥ ते तो दुख मुझने नथी, पिण सांभल मुनिराय! भ० । एह सबल दुख मुझ भणी, जिनसासन निंदाय भ०, सतीय सिरोमणि इम कहे ॥ ५ ॥ सिव सासन उत्तम कहे, असमझ मूरख लोक भ० । जिनसासन परभावना, थाये तो जाये सोक भ०, स० ॥ ६ ॥ ते माटे मुझने कहो, कोइक दाय उपाय भ० । तुम्हसूं छांनो क्यूंही नहीं, उपगारी मुनिराय भ०, स० ॥ ७ ॥ दुष्ट व्याधि मुझ पति तणो, जो किमही ए जाय भ० । तो अपजस सगलो टले, जिन-सासन दीपाय भ०, स० ॥ ८ ॥ गुरु कहे सांभल श्राविका!, अमचो नहीं आचार भ० । सावद्य सेवुं नहीं अम्हे, मंत्रादिक परिहार भ०, मु० ॥ ९ ॥ धरम थकी सुख पामस्यो,

धरमे भोग संयोग भ० । धरमे सिवपद संपदा, धरमे देह निरोग भ०, मु० ॥ १० ॥ निरवद्य एक उपाय छे, चउदे पूरव सार भ० । जेहथी सहु सुख पामीये, नवपद श्रीनवकार भ०, मु० ॥ ११ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ सूरिसरू ३, उवज्झाया ४ सहुसाध ५ भ० । दंसण ६ नाण ७ चरण ८ वली, तप ९ नवपद आराध भ०, मु० ॥ १२ ॥ मयणाने मुनिवर कह्यो, नवपदनो अधिकार भ० । ढाल अढारमी एतले, थई 'जिनहरष' विचार भ०, मु० ॥१३॥

दूहा-ए नवपद संपददियण,उद्धारण त्रयलोय। जिनसासननो सार ए,एहथी चिंतित होय१ मंत्र यंत्र एथी अधिक, कोई नहीं संसार। कल्पवृक्षथी ए अधिक, भव भव सुख दातार॥ २ ॥ जे सिद्धा जे सीझस्ये, सीझे छे वलि जेह। ते नवपदना ध्यानथी, एहमां नहीं संदेह ॥ ३ ॥

ढाल १९ मी. "चतुर सनेही मोहनां" एहनी–ए नवपद महिमा सांभलो, ए सम अवर न कोई रे । एहनी मोटिम महियले, दिन दिन अधिकी होई रे, ए० ॥ १ ॥ ए नवपदथी

नीपजे, सिद्धचक्र सुविचारो रे । सकल सिद्धि दायक कह्यो, ज्ञानी शास्त्र मझारो रे, ए० ॥ २ ॥ चोवीसे जिन थापिये, षोडश विद्या देवी रे । शासन देवी देवता, ग्रहगण उचित ठवेवी रे, ए० ॥ ३ ॥ खेत्रपाल दिगपाल जे, सपरिवार थापीजे रे । यंत्र करी विधि पूजिये, तउ(तो)वंछित फल लीजे रे, ए०॥४॥ उत्तम तप संजम धरी, त्रण योग थिर राखी रे । निरमल ध्यान धरी करी, ध्यावे जिनवर साखी रे, ए० ॥ ५ ॥ थाये ततखिण निर्जरा, अनुक्रमे केवल लहीये रे । मोक्ष एहना जापथी, करम कठिन निरदहीये रे, ए० ॥ ६ ॥ संसारी सुख पिण सहू, लहीये एहने जापे रे । भव भवनां पातिक कीया, प्राणी पलमां कापे रे, ए० ॥ ७ ॥ परमोत्तम तुझने कह्यो, ए सिद्धचक्र सरूपो रे । समता रस मनमां धरी, ए आराधि अनूपो रे, ए० ॥ ८ ॥ निरमल सील धरी करी, मन पर द्रोह निवारी रे । सुजस सुभावे विस्तरे, जापे एह जयकारी रे, ए० ॥ ९ ॥ आसू चैत्र सातम थकी, आंबिल

करी नव दिवसो रे । अष्टप्रकारे पूजीये, ध्यान धरी जगदीसो रे, ए० ॥ १० ॥ पंचामृत पूजा करे, नवमे दिन मनरंगो रे । पचखे आंबिल गुरु मुखे, पामे सौख्य अभंगो रे, ए० ॥ ११ ॥ ढाल कही उगणीसमी, सिद्धचक्र अधिकारो रे । मयणा सुख लहिस्ये हिवे, कहे 'जिनहरप' अपारो रे, ए० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ३३३ ॥

दूहा—नवओली आंबिल कीयां, पूरो ए तपहोई । ऊजमणूं उचित करे, पामे नवनिधि सोइ १ मयणा कहे करजोडिने, भगवन! पूछूं तुझ । ऊजमणानी विधि कहो, समझावीने मुझ ॥ २ ॥ मुनि कहे सांभल श्राविका!, एहनी विधिछे भूरि । नाम मात्र तुझने कहूं, पामिस सुख भरपूरि ॥ ३ ॥

ढाल २० मी. "आश्रव कारण ए जग जाणीये" एहनी—तप ऊजमणुं रे मुनिवर दाखवे, मयणाने हित आण । तप फल ऊजमणाथी पामीये, पूरण तप सुप्रमाण, त० ॥ १ ॥ सालि प्रमुख पंचवरण तणा घणा, ढोवे धान प्रधान । सिद्धचक्रनी तिहां करे थापना, धारी निर-

मल ध्यान, त० ॥ २ ॥ अरिहंतादिक नवपद आगले, ठावे श्रीफल गोल । गौघृत उज्जल खंड मिश्रित करी, जेथी होइ रंगरोल, त० ॥ ३ ॥ अरिहंतपदे धवलो गोलो ठवे, कर्केतन अठ रयण । चोत्रीस हीरारे वली मांहे ठवे, वंछित संपत्ति लयण, त० ॥ ४ ॥ सिद्धपदे इकत्रीस प्रवालडा, राता माणिक अष्ट । रक्त चंदन लेपित गोलक धरे, टले उपद्रव कष्ट, त० ॥५॥ पंच मणी गोमेद छत्रीसनो, सूरिपदे ठवे गोल । पंचवीस ठावे पाठकपदे, नील रतननीरे ओल, त० ॥ ६ ॥ रिष्ट रतन सगवीसे मुनिपदे, सतसठि एकावन्न । सित्तरने पंचास उलाससुं, मुगता सेस सुमन्न, त० ॥ ७ ॥ निज निज वरणे रे वस्त्रादिक ठवे, नवपद तणे समेलि । खाजा दोठारे नुकती लाडुआ, झाझी साकर भेलि, त० ॥ ८ ॥ खारिक खुरमारे द्राख सोपारीयां, निमजाने नालेर । इत्यादिक नव नव आगलि धरे, पामे मोटिम मेर, त० ॥ ९ ॥ इम ऊजमणुंरे मनरंगे करे, आणी भावविसाल । कहे 'जिनहरष'

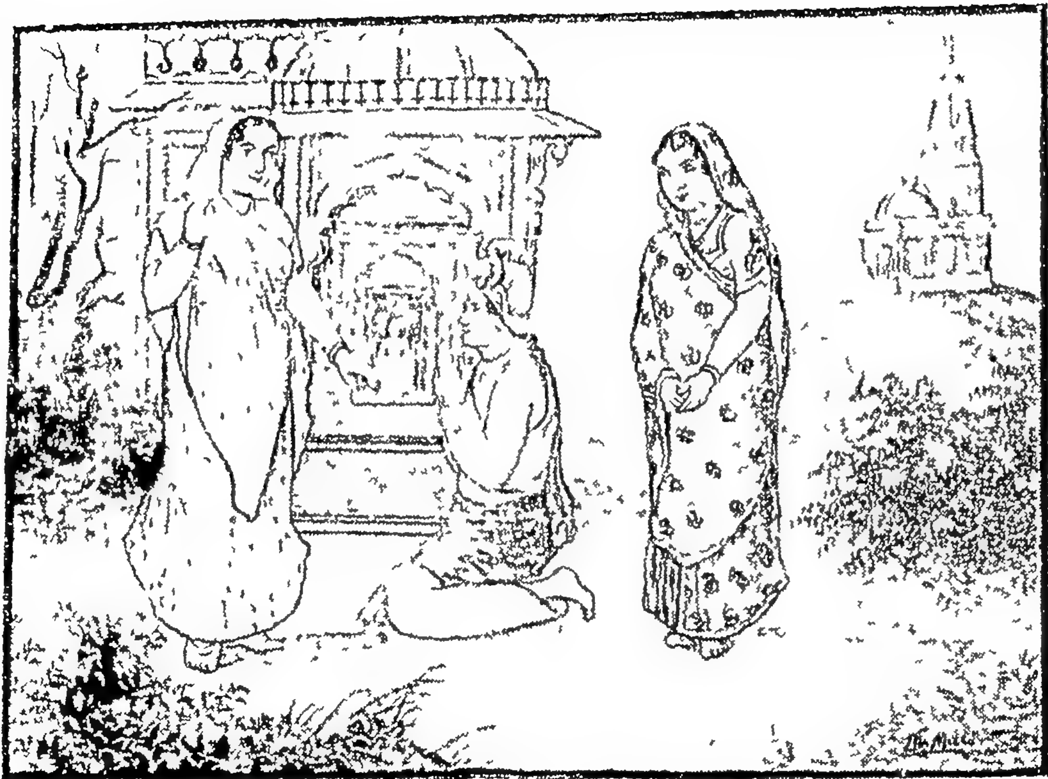
लहे सिवसंपदा, ए थइ वीसमी ढाल, त० ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ३४६ ॥
दूहा—इणपरि जे ए तप करे, दुष्ट कुष्ट क्षय खास। रोग सोग दालिद्र दुख, थाये सहुनो नास ॥१॥ दोहागिण वंध्यापणुं, विसकन्यादिक दोष। स्त्रीने ए थाये नहीं, पुन्य तणुं होइ पोष ॥२॥ संग्रभणी गुरु उपदिस्युं, ए नर लक्षणवंत। जिनशासन दीपावस्ये, भगति करो मनखंत ॥३॥ सात खेत्र जिनवर कह्या, श्रावक पुन्य पवित्र। साते सचवाये सही, साहमी भगति विचित्र ४ इम निसुणी सहु को करे, उंबर भगति अपार। रहिवा मंदिर आपीया, धन कण कंचन सार ५
ढाल २१ मी. "सोझितरो सिकदार" एहनी—हिवे उंबर निज नारि वयण मनमां धरी हो लाल व०, सद्गुरु हितउपदेस हीयामें अनुसरी हो लाल ही०। सिद्धचक्रनी पूजा सीखी गुरुसांनिधे हो लाल सी०, जाणे बुद्धिप्रमाण सुजाण भली विधे हो लाल सु० ॥ १ ॥ आव्यो आसु मास महूरत सुभ दिने हो लाल म०, सिद्धचक्रनो तप आरंभ्यो

सुभमने हो लाल आ० । तन मन वचन पवित्र करी जिनमंदिरे हो लाल क०, पूजा श्रीजिनराय अपाय दूरे करे हो लाल अ० ॥ २ ॥ सिद्धचक्रनी पूजा कि आठ प्रकारनी हो लाल कि०, मयणा उंबर दोइ करे विस्तारनी हो लाल क० । आंबिलनो पचखाण करे मन ऊमही हो लाल क०, सुगुरु वचन सुप्रमाण हीयामे गहगही हो लाल ही० ॥ ३ ॥ दिन दिन ओछो रोग हुवे इण जापथी हो लाल हु०, तूटे करम कठोर विछूटे पापथी हो लाल वि०। नवमे दिवस विसेस न्हवण पंचामृते हो लाल न्ह०, सिद्धचक्रनी पूजा रचे सुभमन हिते हो लाल र० ॥ ४ ॥ स्नात्र करी मन रंग न्हवण जल छांटीयो हो लाल न्ह०, रोग गयो ततकाल नीरोगी तनु थयो हो लाल नी० । जाणे रतिपति रूप अनूप विराजीयो हो लाल अ०, नवपद महिमा अधिक जगतमां गाजीयो हो लाल ज० ॥ ५ ॥ सिद्धचक्रने न्हवणे अवर सहु रोगीया हो लाल अ०, कंचण वरणी देह थया

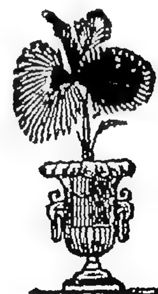
॥ ५० ॥

श्री
पा
ल
रा
जा
का
रा
स





श्रीपाल कुमर और मयणासुंदरी जिनमंदिरसे अपने स्थानको जाते हुए सामनेसे आती हुइ अपनी माताको देखके श्रीपाल कुमर माता के चरणोमें नमस्कार कर रहा है।



AMRUT SAGAR PRESS BOMBAY 3

नीरोगीया हो लाल थ० । मयणा पतिनो रूप निहाली इम कहे हो लाल नि०, गुरुनो ए उपगार सुजस महीयल लहे हो लाल सु० ॥६॥ उंबर देवकुमार सरूपे आगलो हो लाल स०, सहुना टलीया रोग धरम थयो ऊजलो हो लाल ध० । फलीय मनोरथ माल कुमर मयणा तणी हो लाल कु०, कीरति वाधी लोक मझार घणुं घणी हो लाल म० ॥७॥ महिमा श्रीजिनधर्म सुगुरुनो निरखीयो हो लाल सु०, देव धरम गुरु भक्ति कुमर करे हरखीयो हो लाल कु० । जिनगृहथी इक दिवस नीसर्या दंपती हो लाल नी०, साह्मी आवि नारि ओलखी सुभमती हो लाल ओ० ॥८॥ पाये लागे तास कुमर हरखेकरी हो लाल कु०, हीयडे हेज अपार सजल आंख्यां भरी हो लाल स० । मायडी पुत्र वियोगसुं वेदन उपसमी हो लाल वे०, ढाल थई 'जिनहरष' कहे इकवीसमी हो लाल क० ॥९॥ सर्व गाथा॥ ३६०॥

दूहा–कुमर कहे सुण मातजी!, वहु दिवसे मिलीयाह । ऊमाहो सफलो थयो, दुख-

नीरोगीया हो लाल थ० । मयणा पतिनो रूप निहाली इम कहे हो लाल नि०, गुरुनो ए उपगार सुजस महीयल लहे हो लाल सु० ॥ ६ ॥ उंबर देवकुमार सरूपे आगलो हो लाल स०, सहुना टलीया रोग धरम थयो ऊजलो हो लाल ध० । फलीय मनोरथ माल कुमर मयणा तणी हो लाल कु०, कीरति वाधी लोक मझार घणुं घणी हो लाल म० ॥ ७ ॥ महिमा श्रीजिनधर्म सुगुरुनो निरखीयो हो लाल सु०, देव धरम गुरु भक्ति कुमर करे हरखीयो हो लाल कु० । जिनगृहथी इक दिवस नीसर्या दंपती हो लाल नी०, साह्मी आवि नारि ओलखी सुभमती हो लाल ओ० ॥८॥ पाये लागे तास कुमर हरखेकरी हो लाल कु०, हीयडे हेज अपार सजल आंख्यां भरी हो लाल स० । मायडी पुत्र वियोगसुं वेदन उपसमी हो लाल वे०, ढाल थई 'जिनहरष' कहे इकवीसमी हो लाल क० ॥ ९ ॥ सर्व गाथा ॥ ३६० ॥

दूहा—कुमर कहे सुण मातजी!, वहु दिवसे मिलीयाह । ऊमाहो सफलो थयो, दुख-

दोहग टलीयाह ॥१॥ मयणा सासू जाणिने, पायपडी तिणवार। माता! तुझ वहुअर थकी, हूं नीरोग विचार ॥ २ ॥ माय कहे वहुअर सहित, जीवे कोडिवरीस। अविचल जोडी तुम्हतणी, इम दीधी आसीस ॥ ३ ॥ आलिंगन देई करी, पूछे कुसल सरीर। माता! तुझ परसादथी, हूं थयो आज सधीर ॥ ४ ॥ इतला दिवस किहां हुता?, मात! कहो मुझ वात। जणणी कहे सुत आगले, पूरवला अवदात ॥ ५ ॥

ढाल २२ मी. "म्हारो लाल पीये रंग छोतरा" एहनी—तुझने पूंछी पुत्र! हूं चली, उज्जेणीथी कोसंबी पहूंती रे। मुनिवर दीठो एक देहरे, वांदी मनमां गहगहती रे, तु० ॥ १ ॥ में दाख्युं मुनिने एहवूं, इण नगरी वैद्यनो वासो रे। आवी पुत्र रोग पडींगणो, पूछवा तेहने पासो रे, तु० ॥२॥ भगवन! कहो पुत्र कहीये हुस्ये?, निराबाध मुनि तव भाँखे रे। तुझ सुत कोढी टोले मल्यो, निजनाथ करीने राखे रे, तु० ॥ ३ ॥ उंबर राणा नामे कर्यो, परण्यो मालवपति

वेटी रे । मयणासुंदरी नामे भली, सीलवंती गुणमणि पेटी रे, तु० ॥ ४ ॥ सदगुरु वचने दंपति, भावे सिद्धचक्र आराधे रे । कंचणवरणी काया थई, निज (जिन) धर्म भली परि साधे रे, तु० ॥ ५ ॥ उज्जेणीमें सुखसुं रहे, इम सुणि थई हरष सनाथो रे । इहां आवी हूं मिलवा भणी, तुझने दीठो वहू साथो रे, तु० ॥ ६ ॥ सासू वहू पुत्र सुखे रहे, करता जिनधर्म उमेदे रे । इक दिन जिनवर पूजा करी, अंग अग्र भली विहुं भेदे रे, तु० ॥ ७ ॥ एहवे अवसर हिवे सांभलो, मयणासुंदरीनी माता रे । राणी रूपसुंदरी गुणभरी, नृपसुं रीसावी जाता रे, तु० ॥ ८ ॥ जई वेठी निजभाई घरे, पुन्यपाल कृपाल कहावे रे । दुख सोक घणो मनमां करे, मयणा विण खिण न सुहावे रे, तु० ॥ ९ ॥ कितलेक दिवसे दुखतजी, जिन-धर्म करे मनरंगे रे । आवी जिनवर दरसण भणी, तव देखे कुमरसु रंगे रे, तु० ॥ १० ॥ एतो अमर कुमर रूपे भलो, फिरि फिरि ते साह्मो जोवे रे । जोतां जोतां तिण ओलखी,

एतो मयणा पुत्री होवे रे, तु० ॥ ११ ॥ पुत्री पासे कोई ए नवो, राणी मनमां भरमाणी रे। 'जिनहरष' कहे सहु आगले, बावीसमी ढाल वखाणी रे, तु०॥१२॥ सर्व गाथा ३७७॥

दूहा—कोढी पति छोडी करी, अवर पुरुषसुं प्रीत । तजि आचार सतीतणो, कीधो इण विपरीत ॥ १ ॥ एहवी एह न जाणीये, मयणा जिनमत जाण। रजनी करवा किम घटे?, दिवस करे जे भाण ॥ २ ॥ अथवा बलीयो कर्म छे, करमे दुरमति होइ । रूडा भूंडा स्यूं करे, पहूंचे जोर न कोइ ॥ ३ ॥ कुल निकलंक कलंकीयो, जिनसासन दूखाय । पुत्री मूई दुख नहीं, पिण दुख सह्यो न जाय॥ ४॥ माता इणि परि दुख करे, मयणा केडे बेसि। कांपे पुत्री कृत अधम, हीयडामांहि पेसि ॥ ५ ॥

ढाल २३ मी. "ईढोणी चोरी रे" एहनी—मयणा निसुणी बोलडा मा मोरी रे, संका आवी मनमांहि सुता हूं तोरी रे। चैत्यवंदन पूरुं करी मा मोरी रे, वंद्या जिनवर उच्छांहि

सुता हूं तोरी रे ॥ १ ॥ करवंदन मायने करी मा मोरी रे, सांभल माहरा अवदात सुता हूं तोरी रे। तुम्हने दुख करवुं नहीं मा मोरी रे, एहवी किम करीये वात सुता हूं तोरी रे॥२॥ साह्यो हरख वधारीये मा मोरी रे, पुत्री वर देखी सरीर सुता हूं तोरी रे। रोग गयो जिन-धर्मथी मा मोरी रे, म करो मन दिलगीर सुता हूं तोरी रे ॥ ३ ॥ माठुं थाये नहीं कदे मा मोरी रे, तुझ पुत्रीथी निरधार सुता हूं तोरी रे। पूरव तजि पश्चिम दिसे मा मोरी रे, किम ऊगे? कहो दिनकार सुता हूं तोरी रे ॥ ४ ॥ अजी लगे छोडे नहीं मा मोरी रे, सायर अपणी मरजाद सुता हूं तोरी रे। हरख विनोद हीये धरो मा मोरी रे, परिहरि मन विखवाद सुता हूं तोरी रे॥५॥ एहवे कुमरनी मायडी मा मोरी रे, बोली मुखे मीठी वाणि सुता ए तोरी रे। मुझ सुत नीरोगी कीयो मा मोरी रे, उत्तम गुणनी खाणि सुता ए तोरी रे ॥ ६ ॥ धन धन ताहरी कूखडी मा मोरी रे, उपनी मयणा जिहां आय सुता ए तोरी रे।

सीले सीता सारिखी मा मोरी रे, इणमें खोडि न कांय सुता ए तोरी रे ॥ ७ ॥ तुम सुता बाई! जगतमां मा मोरी रे, निरमल पाम्यो जसवास सुता ए तोरी रे। संतति जेहने एहवी मा मोरी रे, जनम जीवित धन तास सुता ए तोरी रे ॥ ८ ॥ मिली वेवाहिण बे तिहां मा मोरी रे, रूपसुंदरी मिट्यो संदेह सुता ए तोरी रे। धन धन मयणासुंदरी मा मोरी रे, जिण पाल्यो सील निरेह सुता ए तोरी रे ॥ ९ ॥ निरमल कुल दीपावीयो मा मोरी रे, धरम उतार्यो आल सुता ए तोरी रे। कहे 'जिनहरष' पूरी थई मा मोरी रे, ए त्रेवीसमी ढाल सुता ए तोरी रे १०

दूहा—रूपसुंदरी मयणा प्रते, पूछे धरीय सनेह। तुझपति नीरोगी थयो, ते मुझ संभलावेह १
सावद्य देहरे बोलतां, थाये निसिही भंग। मुझ घरे जई कहिसुं सहू, चालो धरि मनरंग ॥२॥
मंदिर आवी आपणे, कही सगली ही वात। सिद्धचक्र आंबिल तणो, ए महिमा विख्यात ॥३॥
कुमर तणी माता प्रते, पूछे मयणा माय। वंसादिक तुम्ह पुत्रनो, बाई! मुझ सुणाय ॥ ४ ॥

दाल २४ मी. "केकेई वर लाधो" एहनी–हिवे कहे कुमरनी मायडी, अंगदेस सुरंग विख्यात रे, वेवाहिण! तुम्हे सुणो। नगरी चंपा तिहां अतिभली, नरनारी सुखी दिनरात रे, वेवा० ॥ १ ॥ सिंहरथराजा तिहां राजीयो, परजा पाले सुत जेम रे, वेवा० । कमलप्रभा पटरागिनी, कुंकण नृप वहिनी प्रेम रे, वे० ॥ २ ॥ बहु देवी देव आराधतां, सुत जायो रूपे काम रे, वे० । नृपलखमी लीला पालस्ये, श्रीपाल दीयो तसु नाम रे, वे० ॥ ३ ॥ सुत दोइ वरसनो ते थयो, राजा सूले पीडाय रे, वे० । तिण रोगे मृत्यु लह्यो सही, हाहारव नगरी थाय रे, वे० ॥ ४ ॥ मतिसागर मंत्री बुद्धिनिलो, सैसव वय आपे राज रे, वे० । श्रीपाल भूपालनी आ (ज्ञा) गन्या, मंत्रीस चलावे काज रे, वे० ॥ ५ ॥ राज्य करंतां केइक दिन थया, काको श्रीपालनो ताम रे, वे० । अजितसेन नामे अछे, राज्य लेवानो थयो काम रे, वे० ॥ ६ ॥ द्वेप धरे मंत्री रायसुं, सामंत साथे करे भेद रे, वे० । दोइ जणने हणिवा

कारणे, करे मंत्रणा करिवा छेद रे, वे० ॥ ७ ॥ मंत्री जाणी ते वातडी, संभलावी मुझने तेह रे, वे० । मंत्रीसर कहे राणी ! सुणो, जतने राखो सुत एह रे, वे० ॥ ८ ॥ जीवस्ये तो राज्य हुस्ये वली, सुत एकज ए दही दूध रे, वे० । तिण कारणि ए लेई करी, जाओ तुम्हे आस्या लुध रे, वे० ॥ ९ ॥ केडेथी अम्हे पिण जाइस्यूं, नाठां विण कुसल न होइ रे वे० । मंत्रीना वयण सुणी इसा, नाठा हूं ने सुत दोइ रे, वे० ॥ १० ॥ एकलडी हूं राते चली, छानी नवि जाणी केण रे, वे० । नंदन कडीए पंथ चालवुं, कांटा भागे पाएण रे वे० ॥११॥ धरती ऊंची नीची घणुं, अथडाउं तनु सुकमाल रे, वे० । दुख एक हतो पति मरणनो, राज्यभ्रष्ट थया सुत बालरे, वे० ॥१२॥ वयरीनो भय मनमां घणो, इम चलतां रात विहाइ रे, वे० । एतले थई ढाल चोवीसमी, 'जिनहरष' कही चितलाइ रे, वे० ॥१३॥ सर्व गाथा ४०९ ॥

दूहा—दुखभर इणपरिचालतां, नीठथयो परभात । कोढीनो टोलो सबल, आगलि एकदिखात

॥१॥कमला ते देखी करी, मनमां थइ भयभ्रांत। कडीए बालक एकली, न लहे चित्त निरांत ॥२॥रोवे जोवे दह दिसे, कोढी करुणावंत। दुखिणी देखी मुझभणी, पूछे सहु वृतंत ॥३॥ ए बंधव सहु ताहरा, तूं अम्ह बहिन सरीख। पूछी वात कही सहू, आपी रूडी सीख ४

ढाल २५ मी. देशी मांनां दरजणरी—देइ इम आसासना रे, निरभय कीधी जाम। वर वेसर वेसारिने,ओढाडी चादर ताम रे॥१॥ सांभलज्यो आगे वात रे,जिम मीठी लागे, भागे रे भागे मनना दुख, दोहग भागे, ए आंकणी, इण अवसर केडे थकी रे, आव्या अरि असवार। रोस भर्या आयुध धर्या रे, मुख बोलंता मार मार रे, सांभल० ॥ २ ॥ पेडाने आवी कहे रे, तुम्हे दीठी इक नार। पासे सुंदर दीकरो, रूपे रतिपति अवतार रे, सांभल० ॥ ३ ॥ पेडो कहे तुम्हे सांभलो रे, अम्ह पासे छे पाम। ते तुम्हने आपुं अम्हे, आवे जो कोई काम रे, सांभल० ॥ ४ ॥ सुभटे जाण्युं रोगीया रे, कोई न दीसे पास। इहां ऊभां जुगतो नहीं, रोग भये

दूरे गया नास रे, सांभल० ॥ ५ ॥ उंबर रोगे पीडीयो रे, अंग थयो बिदरंग। पुत्रपडींगणो पूछती, हूं गई कोसंबी द्रंग रे, सांभल० ॥ ६ ॥ तिहां जईने लोकने रे, पूछ्यो वैद्यनो गेह। लोक मुखे में सांभल्यो, तीरथ भणी पहुंतो तेह रे, सांभल० ॥ ७ ॥ हूं रही तिहां वासर घणा रे, जोती वैद्यनी वाट। साधु थकी सुध लही सहू, मननो मिटीयो उचाट रे, सांभल० ॥ ८ ॥ हूं आवी इहां पूछती रे, अंगज मिलिवा काज। हूं कमला ए माहरो, सुत जाणज्यो सिरताज रे, सांभल० ॥ ९ ॥ कमलाने वचने करी रे, राणी थई निसंक। पुत्री गुणवंती सती, एहने किम लागे ? कलंक रे, सांभल० ॥ १० ॥ निरखि जमाई सामुहो रे, तृपति न पामे लेस। मुझ पुत्रीनो जोईज्यो, फलीयो कांइ भाग्य विसेस रे, सांभल० ॥ ११ ॥ रूपसुंदरी सुख पामीयो रे, उलसीया सहु अंग। ढाल थई पचवीसमी, 'जिनहरष' थया उछरंग रे, सांभल० ॥ १२ ॥

दूहा—पुन्यपालने सहु कह्यो, रूपसुंदरी जई गेह। मामे तेडी निज घरे, आण्या घणे सनेह १

सुंदर मंदिर आपीया, आपी धननी कोडि। पंच विषय सुख भोगवे, वे जण प्रेम सजोडि ॥२॥
एक दिन राजा नीसर्यो, पासे कुमर आवास। दीठी मयणा कुमरसुं, करती विविध विलास ॥३॥
मयणा कोई बीजो कर्यो, सुंदर पुरुष सरूप। कोढी परिहरियो परो, इम मनचिंते भूप ॥४॥
पहिलो क्रोधवसेण में, काम अजुगतो कीध। बीजो मयणा मयणवसि, लंछण मुझ कुल दीध ५

ढाल २६ मी. "पीछोलारी पाले आंबा दोइ मोरीया म्हारा लाल आंबा०" एहनी–पुन्यपाल ततकाल जणावे रायने म्हारा लाल ज०, भाणेजीनी वात सहू समझायने म्हारा लाल म०। आव्यो नृप आवास कुमरने ऊमही म्हारा लाल कु०, प्रणमे मयणा कुमर चरण मन गहगही म्हारा लाल च० ॥ १ ॥ लज्जावंत नरिंद कहे वाई! सुणो म्हारा लाल क०, में तुझने मतिहीण दीयो छे दुख घणो म्हारा लाल दी० । मुझ अविनय अपराध असाध्य विसारजे म्हारा लाल अ०, उत्तम गुण गुणवंत! हीयामें धारजे म्हारा लाल ही० ॥ २ ॥

मयणा विनय महंत मधुर वयणे कहे म्हारा लाल म०, दोस न को तुम्ह तात! करम फल सहू लहे म्हारा लाल क०। सुख दुख करम संयोग सहू आवी मिले म्हारा लाल स०, करम महा बलवंत न टाल्यो ही टले म्हारा लाल न० ॥३॥ इम जाणी तुम्हे तात! जिणेसर धर्मसुं म्हारा लाल जि०, नव तत्त्व राचो राय! म राचो भर्मसुं म्हारा लाल म०। इम निसुणी नरनाथ धरम अंगीकर्यो म्हारा लाल ध०, अपकारे उपकार सुता ते आचर्यो म्हारा लाल सु० ॥४॥ वाल्हीने वलि विनय वहे गुण संग्रहे म्हारा लाल वहे०, धर्म पमाडे जेह जगतमें जस लहे म्हारा लाल ज०। कुमरी सम श्रीपाल जमाई निरखीयो म्हारा लाल ज०, ऊलट अंग न माइ हीयामें हरखीयो म्हारा लाल ही० ॥ ५ ॥ कीधो वांको राय कहे थयो पाधरो म्हारा लाल क०, मूंग मांहे जाणे घीय ढुल्यो थयो ए खरो म्हारा लाल ढु०। पुत्री ए पुन्यवंत फल्यो पुन्य एहने म्हारा लाल फ०, श्री जिनधर्म पसाय थया सुख जेहने म्हारा लाल थ०

श्री पाल राजा का रास



श्रीपालजीको हाथीपर बैठाके धामधूमसे प्रजापाल राजा अपने राजदरबारमें ले जा रहा है।



(पत्रांक ६३)

AMRUT SAGAR PRESS, BOMBAY 3

॥ ६ ॥ गज ऊपरि आरोपि जमाई पुत्रिका म्हारा लाल ज०, लेई गयो निज गेह करी आरात्रिका म्हारा लाल क० । गोरी गावे गीत नगारा वाजीया म्हारा लाल न०, आडंबर उच्छाह गुणी जन गाजीया म्हारा लाल गु० ॥७॥ धण कण कंचण माल महेल नृप आपीया म्हारा लाल म०, सारी नगरी मांहि सुजस थिर थापीया म्हारा लाल सु० । कुमर चड्यो रयवाडी रमवा किणि समे म्हारा लाल र०, देखे लोक अपार सहुने मन गमे म्हारा लाल स० ॥ ८ ॥ पूछे मांहो मांहि कुमर ए कुण अछे म्हारा लाल कु०, एक कहे नृप धूअ धणी वीजो न छे म्हारा लाल ध० । वचन सुण्यो श्रीपाल विच्छाय थयो घणूं म्हारा लाल वि०, छावीसमी 'जिनहरप' ढाल इण परि भणूं म्हारा लाल ढा० ॥ ९ ॥ सर्व गाथा ४३९ ॥

दूहा—रयवाडी जई आवीयो, पिण मनमें दिलगीर । जननी पूछे आज तूं, एहवो किम ? कहे वीर ! १ चिंता मनमांहे किसी, पुत्र ! कहो मुझ तेह । चिंता कारण मायने, कुमर कहे ससनेह २

माहरे गुणे न ओलखे, तात गुणे नवि कोइ। मात गुणे न पिछाणीये, तिण मुझ चिंता होइ ३
सुसरा नामे ओलखे, सुसराथी परसिद्ध। तिहां रहिवो जुगतो नहीं, शास्त्रे कह्यो निसिद्ध ४
माय कहे मुझने गम्युं, सैन्य सजी ल्ये राज। अरिदल जीपो आपणा, वंस वधारो लाज ५
कुमर कहे माता! सुणो, सुसराने बल राज। लेवुं मुझने नवि घटे, करसुं निजबल काज ६

ढाल २७ मी. "मन मधुकर मोही रह्यो" एहनी– परदेसे जाई करी, लाऊं लच्छि कमाय रे। भुजबल लेस्युं बापनो, राज्य अरि समझाय रे, पर०॥१॥ माता कुमर भणी कहे, तूं वच्छ! नान्हो बाल रे। वाट विषम परदेसनी, अटवी नदीयां नाल रे, पर० ॥ २॥ कुमर कहे कायर भणी, दोहिलो छे परदेस रे। मनमां सापुरसां तणे, भय नावे लवलेस रे, पर० ॥ ३ ॥ मयणासुंदरी वीनवे, काया छाया जेम रे। हूं तुम्ह साथे आवसुं, तुम्ह पाखे रहुं केम रे, पर० ॥ ४॥ तूं पगबंधन कामिनी!, भमवुं मुझ निसदीस रे। कामकरूं के जालवुं, दुक्कर विसवा वीस रे,

श्री पाल राजा का रास



भरूच आते हुए रस्तेमें पहाडके नज्दीक श्रीपालजीको विद्याधरसे मिलाप हुआ, इनके उत्तरसाधक होनेसे उसकी विद्या सिद्ध हुइ, विद्याधरने प्रसन्न होके दो औषधियां श्रीपालजीको दी, दोनों जने आगे चले, पहाडके उपर धातुर्वादी (सुवर्णरस सिद्ध करनेवाले) मिले, यहांभी श्रीपालजीके उत्तरसाधक होनेसे सुवर्णरस सिद्ध होगया, तयार हुआ सुवर्ण लेनेके लिये धातुर्वादी लोक हाथ जोडके श्रीपालजीको प्रार्थना कर रहे हैं।

(पत्रांक ६५)

AMRUT SAGAR PRESS BOMBAY 3

पर० ॥ ५ ॥ जाया जणणी वे भणी, समझावी श्रीपाल रे । नवपद ध्यान धरी करी, चाल्यो लेइ करवाल रे, पर० ॥६॥ गामागर पुर पेखतो, पहुंतो इक वन मांय रे । दीठो वेठो पुरुषने, तरु तले वदन विच्छाय रे, पर० ॥ ७ ॥ कुमर कहे तूं कुण अछे ?, किम वेठो दिलगीर रे । विद्याधर छूं ते कहे, सांभल साहस धीर! रे, पर० ॥ ८ ॥ गुरुदत्त विद्या मुझ कन्हे, विधे जपी वहु वार रे । उत्तरसाधक वाहिरो, सिद्ध न थाये विचार रे, पर० ॥ ९ ॥ तूं उत्तरसाधक हुवे, तो सीझे मुझ काज रे । कुमर सहाये तेहने, विद्या सीधी साज रे, पर० ॥ १० ॥ विद्याधर दोइ ओपधी, कुमर भणी तव दीध रे । उपगारे उपगारडो, सिद्ध पुरुष पिण कीध रे, पर० ॥ ११ ॥ गुण सांभल जल तारणी, एक जडी छे एह रे । वीजी शस्त्रनिवारणी, महिमा तास कहेह रे, पर० ॥१२॥ आदर करि तेडी गयो, विद्याधर निज गेह रे । सोवन सिद्धि रस कूंपिका, कुमर सहाय्य करेह रे, पर० ॥ १३ ॥ ढाल कही सत्तावीसमी, वखतावर

नर जेह रे। कहे 'जिनहरष' जिहां तिहां, सुखीया थाये तेह रे, पर० ॥१४॥ सर्व गाथा ४५९

दूहा—कुमरभणी क्रितधनकीयो, चाल्यो सीखकरेह। भरुअच्छ नयरे आवीयो, सुखसुं तिहां रहेह १ इण अवसर हिवे तिण नगर, धवलसेठ धनवंत। पूरे प्रवहण पांचसे, खरी धरी मनखंत २ सुभट सहस दस राखीया, चोकी पहोरा काज। नृपआदेस लेई करी, सुभ महूरत दिन साज ॥३॥ बलिबाकुल देई करी, वाहण पूर्या जाम। ठाम थकी नवि चालते, धवल चिंतातुर ताम ४

ढाल २८ मी. "चरण करण धर मुनिवर वंदीये" एहनी—सेठे जई पूछी सीकोतरी, ते कहे नर बलवंतो जी। बलि आपे तो तुझ वाहण चले, बत्तीस लक्षण (गुण)वंतो जी, से०॥१॥ सांभलि सेठ खुसी मनमां थयो, वीनवीयो जई रायो जी। स्वामी! एक पुरुष मुझ दीजिये, बलि काजे सुख थायो जी, से०॥२॥ राय कहे जे परदेसी हुवे, नर एकलडो अनाथो जी। ते लेजे माहरी छे आगन्या, अवर म लाए हाथो जी, से० ॥ ३ ॥ सुभट धवलना

श्री पाल राजा का रास



एक तरफ भरूचके राजसैनिक और दूसरी तरफ धवल शेठके सुभट खडे हैं, बीचमें खडे हुए श्रीपालजी वीरताके साथ दोनोंसे लड रहे हैं



(पत्रांक ६७)

AMRUT SAGAR PRESS, BOMBAY 3

फिरता जोवता, दीठो तिहां श्रीपालो जी। जाण्युं नर ए परदेसी सहा, लक्षण अंग विसालोजी, से० ॥ ४ ॥ सुभट कहे सांभले परदेसीया!, आव्यो ताहरो कालो जी। धवल सेठ हणस्ये वलि कारणे, रूठो जम विकरालो जी, से० ॥५॥ मूंछे वल घाली सीपो(श्रीपाल)कहे, सुभट! सुणज्यो वातो जी। धवल तणो वलि द्यो चामुंडने, तेहने करीये घातो जी, से० ॥ ६ ॥ सीह तणी वलि कदे न सांभली, सीपो किम वलि दीजे रे। धमधमीयो रीसे थयो रातडो, कुमर खराखरि खीजे रे, से० ॥ ७ ॥ अविचार्युं बोलो छो एहवुं, लहिस्यो फल ततकालो जी। आवी सुभटे कुमरने वींटीयो, मद माता मछरालो जी, से० ॥ ८ ॥ धवल कहे खंडो खंड कीजिये, एहने एहीज दंडो जी। वरसे तीर सडासड अति घणा, तोमर खडग विहंडो जी, से० ॥ ९ ॥ नालगोला गडडे गयणंगणे, मोगर गुरज अपारो जी। धसे हसे पोरस अंग ऊलसे, इम वाहे हथीयारो जी, से० ॥ १० ॥ इणपरि जुद्ध थयो अति आकरो, धवल अने श्रीपालो जी।

कहे'जिनहरष' पूरी थई एतले, अठावीसमी ढालो जी, से० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ४७४ ॥

दूहा—शस्त्र न लागे कुमरने, जडीतणे परभाव। पिण कुमरे सहुना कीया, नासा केस अभाव १ प्राण हण्या नहीं केहना, दया तणो भंडार। धवल विचारे चित्तमां, देखी सकति अपार २ बल-छोडी जोडी करकमल, धवल कहे ग्रहि पाय। स्वामी! वाहण किम चले, ते कहो कोई उपाय ३ कुमर चलावुं हूं कहे, जो द्ये लाख दिनार। आरत मीटी आपणी, सेठ भण्यो हांकार ४ धवल सहित वाहण चढी, नवपद जपि थई चाक। सीहतणि परि गाजतो, सीपे मेल्ही हाक ५

ढाल २९ मी. "श्रेणिक मन अचरिज थयो" एहनी— तत खिण प्रवहण चालीया, वाज्या भूंगल भेरी रे। ताल नगारा वाजीया, महिमा थई अधिकेरी रे, तत० ॥ १ ॥ लाख दीनार देई कहे, तुम्हे पिण ओलग सारो रे। वरसे स्युं लेस्यो तुम्हे, कीजे तेह विचारो रे, तत० ॥ २ ॥ सुभट सहू ल्ये जेटलो, तास जमल मुझ दीजे रे। विषमी करसुं चाकरी, माहरो मुजरो

॥ ६८ ॥

लीजे रे, तत० ॥ ३ ॥ सेठ कहे खप अम्ह नथी, वेठो भाडो देई रे। भरीये दरीये चालिया, मनमें हरप धरेई रे, तत० ॥ ४ ॥ रतन दीप भणी मूंकीया, आया वव्वर कूले रे । जल इंधण लेवा भणी, उतरीया तट मूले रे, तत० ॥ ५ ॥ वव्वर राये मोकल्या, दाण लेवाने काजे रे । सेठ गिणे नहीं तेहने, सुहड तणे वल गाजे रे, तत० ॥ ६ ॥ वव्वरपतिने वीनव्यो, आवी लागत मांगे रे । सेठ सुरीते द्ये नहीं, क्रोधागनि तव जागे रे, तत० ॥ ७ ॥ वव्वरपति सुहडां भणी, हलकार्या जुध मंड्यो रे । सेठ सुहड नासी गया, कायर थया वल छंड्यो रे, तत० ॥ ८ ॥ वव्वरपतिनी जय थई, धवल सेठ वंधाणा रे । कुमर कहे सहु ताहरा, किहां गया ओलगाणा रे, तत० ॥ ९ ॥ हूं छोडावूं तुझ भणी, तो मुझने स्युं आपे रे। अरध माल वाहण तणो, हाथोहाथे थापे रे, तत० ॥ १० ॥ वोल वंध लेई करी, विचे परमेसर दीधो रे। ढाल थई उगणत्रीसमी, कहे 'जिनहरष' इम कीधो रे, तत० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ४९० ॥

दूहा– तव धणु तूण धरी करी, केडे धस्यो कुमार। बोलाव्यो महाकालने, जाइस किहां? गमार! १ कायर जीपी गरजीयो, पिण माहरो बल जोइ। नासि म जाइस रांक ज्यूं, जो तूं क्षत्री होइ २ वयण सुणी पाछो वल्यो, मनमां नाण्यो बीह। बापूकार्यां किम रहे?, साहसीक नरसीह ३ कहे वयण इम कुमरने, रे रे भोला बाल!। मुझसुं जो कांकल करिस, पामिस मरण अकाल ४ कांइ मरे रे बालुया!, परकज्जे वेकाम। कुमर कहे मांटी अछे, तो कर मुझसुं संग्राम ५

ढाल ३० मी. "चढ्यो रण झूझवा चंडप्रद्योत नृप" एहनी– आवीयो ताम करि जोर बल फोरतो, बब्बराधीस मन रीस आणी। सुभट थट विकट साथे करी आपणा, रोस चढीयो वदे असुभ वाणी, आ०॥१॥ आवरे मूढ! जो रूढ मेल्हे नहीं, आज मृगराज सूतो जगाड्यो। धरणि धूजावतो सांमुहो आवतो, छोह धरि लोह सुहडे उडाड्यो, आ०॥२॥ धरणि धडधडीय गडगडिय दम्मांम धुनि, दहदिसे परिवर्या सबल सूरा। तुरंग भल पाखर्या शस्त्र

वाण वरसे घणा सुहड हाथां तणा, हाथे धर्या, नाचता माचता रण सनूरा, आ० ॥ ३ ॥ भाट भड उछली सयल खांडां तणी, कुमरने जे प्रथम गयण रवि रयणि अंधार कीधो । गाजतो गाज आवाज करतो । घाव दीधो, आ० ॥ ४ ॥ झूझतो सत्रु दल सूड करतो प्रबल, केवि केवी हण्या सीस दूरे लुण्या, अंग उछरंग धरि जंग फिरतो, आ० ॥ ५ ॥ अधिक वाचाल मछराल श्रीपाल इम, घाव घमसाण हेराण कीधा । घाव ठामे रुहिर बिंब धारा पडे, अरितणा जीव कण काढि लीधा, आ० ॥ ६ ॥ इम लड्यो आथड्यो कुमर अरि सैन्यसुं, बब्बरा-धीश ततकाल बांध्यो । बंदि करी आपणा साथमें आणीयो, सांमुहो किणही नावि तीर सांध्यो, आ० ॥ ७ ॥ धवल छोडावीयो कुमर बंधण थकी, कोप करी खडग धरी राय केडे । मारवा संचर्यो सेठ वार्यो कुमर, बांधीयो मारतां सुजस फेडे, आ० ॥ ८ ॥ राय महाकालने अभय देई करी, सहस दस धवलना सुहड सूरा । जेह नाठा हुता कुजस आवीखता, वृत्ति छेदी कीया

सहू दूरा, आ० ॥ ९ ॥ कुमर राख्या सहू वृत्ति देई बहू, अढीसे पोतनो माल लीधो। एतले ए थई त्रीसमी ढाल तिम, काम 'जिनहरष' ए कुमर कीधो, आ० ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ ५०५ ॥

दूहा—बब्बरनृप आदरकरी, कहे कुमरने एम। पावन मुझ पुर कीजिये, जिम वाधे मन प्रेम १ कुमर सकल परिवारसुं, पहुंतो नगर मझार। प्रेम प्रीति हितसुं मिल्या, बांधी प्रीति अपार २ करजोडी राजा कहे, मुझ कन्या गुणवंत। मदनसेना नामे निपुण, परणो साहसवंत ! ॥३॥ परदेशी नवि ओलखे, न्याति पांति कुल सील। अणजाण्यो परणावतां, थास्ये तुम्हची हील ४ नृप भाषे आकारथी, में जाण्यो कुल सुद्ध। तिण परणावूं दीकरी, थाये केम विरुद्ध ? ॥५॥

ढाल ३१ मी. "मुखने मन कलडे" एहनी— परणी तिहां नृप कन्याजी सुखने कारणे, एतो मदनसेना कृतपुन्याजी सुख०। मणि माणिक सोवन दीधाजी सुख०, प्रीति राखण कुमरे लीधाजी सुख० ॥ १ ॥ नाटकना नव नव वृंदाजी सुख०, आप्या घरि अधिक आणंदाजी

सुख० । भलि भांते कुमर चलावेजी सुख०, नृप साथे थई वोलावेजी सुख० ॥ २ ॥ हिवे
प्रवहण जलनिधि चाल्याजी सुख०, कांई रतन दीप भणी हाल्याजी सुख० । वाहण जई दीप
उतरीयाजी सुख०, सहु लोक वंदर संचरीयाजी सुख० ॥ ३ ॥ भला डेरा ताणी उतंगाजी
सुख०, तिहां कुमर रहे सुख संगाजी सुख० । इणि अवसर एक नर आयोजी सुख०,
आदर देई वोलायोजी सुख० ॥ ४ ॥ किहांथी आया ? किहां जासो ? जी सुख०, कोई दीठो
अवल तमासोजी सुख० । ते पुरुष कहे तिण ठामेजी सुख०, नयरी रत्नसंचया नामेजी
सुख० ॥ ५ ॥ विद्याधर छे तिहां राजाजी सुख०, कांई कनककेतु दिवाजाजी सुख० । कनकमाला
तसु राणीजी सुख०, मयणमंजूषा कन्या जाणीजी सुख० ॥ ६ ॥ सकल कला गुण ज्ञाताजी
सुख०, जाणे सेहत्थे (स्वहाथे) घडी विधाताजी सुख० । तिहां ऋषभदेवनो देहरोजी सुख०,
जाणे भूमि रमणि सिर सेहरोजी सुख० ॥ ७ ॥ विद्याधर राय सदाईजी सुख०, पूजे निज तन

मन लाईजी सुख० । नृप कन्या पूजा बणावेजी सुख०, सहु देखीने सुख पावेजी सुख० ॥ ८ ॥ इक दिन नृप पूजा दीठीजी सुख०, राजाने लागे मीठीजी सुख० । ए सरिखो वर कोई जोऊंजी सुख०, तेहने ए कन्या ढोऊंजी सुख० ॥ ९ ॥ इक दिन जिन पूजी कुमरीजी सुख०, गंभाराथी नीसरी कुमरीजी सुख०। ततखिण ते बार जडाणाजी सुख०,सहु लोक थया हैराणाजी सुख० ॥ १० ॥ कुमरी करे आतम निंदाजी सुख०, धिग धिग हूं पापिणी मंदाजी सुख०। मुझमें कोई दूषण दीसेजी सुख०, आसातना विसवा वीसेजी सुख० ११ इम दुख करि कन्या रोवेजी सुख०, नृप कुमरी सनमुख जोवेजी सुख० । राजा कहे सांभल बाईजी सुख०, तूं चिंता म करिस कांईजी सुख० १२ इहां दूषण तुझ नवि कोईजी सुख०,आसातना तुझथी नवि होईजी सुख० । एकत्रीसमी ढाल थई पूरीजी सुख०, 'जिनहरष !' कथा छे अधूरीजी सुख० १३

दूहा– रायकहे सांभल सुता !, इहां दूषणछे मुज्झ । जिनगृहमां मनमांधरी, चिंता वरनी







श्रीपालजी रत्नद्वीपमें आये और समुद्र के तटपर उतारा किया, जिनदास श्रावकने आकर ऋषभदेव स्वामीके मंदिरका गंभारा जो कि एक मास हुए देवप्रभावसे बंध पडा है उसको उघाडनेके लिये श्रीपालजीको प्रार्थना करी, इस लिये श्रीपालजी अपने कुछ परिवार सहित जिनदास श्रावकके साथ मंदिर जा कर, स्नानादि पूर्वक पवित्र वस्त्र पहनके पूजाकी सामग्री सहित "निसिहीए" करते हुए मंदिरमें प्रवेश करते हैं, श्रीपाल-जीकी नजर गभारेपर पडतेही देवप्रभावसे गभारा एकदम खुल जाता है और सबको प्रभुप्रतिमाके दर्शन होते हैं।

(पत्रांक ७५)

तुज्झ१ सावद्य ए आसातना, तेह तणा फल जाणि । वार जडाणा ए सही, तेतले थई सुरवाणि
२ दोस न कोई कुमरीयह, नरवर दोस न कोइ । जिण कारण जिणहर जडिउ, तं निसुणो सहु
कोइ ३ जसु नर दिठ्ठहि होइस्ये, जिणहरु मुक्क दुवार। सोइज मयणमंजूसियह,होएसी भरतार४
सिरि रिसहेसर ओलगणि, हूं चक्केसरी देवी। मासऽभिंभतरे तसु नरह,आणेसु निश्चय लेवी ५
राजलोक सहु हरखीया, गया सहु कोई गेह । दिन दिन आवी देहरे, लोग राय निरखेह ६

ढाल ३२ मी. "मोरो मन मोह्यो इण डूंगरे" एहनी– आज दिन मासनो छेहलो, जो हिवे तुझथकी वार रे। ऊघडे तों मिले देवनी, वाणी साची निरधार रे, आ० ॥१॥ कुमर असवार थई तिहां गयो, साथे परिवार अपार रे। आवीया लोक नृप सुता, हरख धरि मनह मझार रे, आ० ॥ २॥ आवतां तुरत जिनगृह तणा, ऊघड्या झटकि किमाड रे । कुमर जिनराय जुहारीया, भगति बहु भांति दिखाड रे, आ० ॥ ३॥ राय मन लाइ देखी रह्यो, नृप सुता थई

॥ ७५ ॥

वसि प्रेम रे । देवी दाखित नर ए सही, एह अमूलिक हेम रे, आ० ॥ ४ ॥ राय पूछे कहो निजचरी, ठामने नाम कुण गाम रे। कुमर चिंते मुख आपणे, किम कहुं वात निज नाम रे, आ० ॥५॥ चैत्य जुहारिवा आवीया, तेतले चारण साध रे। देव जुहारि बेठा तिहां, मुनिवर चित्त समाध रे, आ० ॥६॥ धरम देसणा नृप सांभली, नवपदनो अधिकार रे। एहथी वंछित पामीये, जेम श्रीपाल कुमार रे, आ० ॥ ७ ॥ कवण श्रीपाल? नरवर कहे, एह बेठो तुम्ह पास रे। चरित्र सहु पूछीयां कुमरना, मुनि कह्या धरिय उलास रे, आ० ॥८॥ राय कन्या वर ए हुसे, लेस्ये निज बापनो राज रे। देव तणी गति पामस्ये, वली लहिस्ये सिवराज रे, आ० ॥ ९ ॥ इम कही मुनिवर पांगर्या, नृप सुता कुमरने दीध रे। पाणिग्रहण करी तिहां रहे, सहु मन-वंछित सीध रे, आ०॥१०॥इक दिन कुमर राजा बिन्हे, जिनवर भगति उदार रे। रंगमें भंग आव्यो तिहां, तेतले नगर तलार रे, आ० ॥ ११ ॥ ते कहे स्वामी! अवधारीये, वणिक इक

कपटनो गेह रे। आण भांगी प्रभु! तुम्ह तणी, दाण चोरी पड्यो तेह रे, आं०॥१२॥ तेहने दंड स्यूं आपीये ?, राय कहे हरो प्राण रे। एतले ढाल बत्रीसमी, थई 'जिनहरष!' प्रमाण रे, आ० १३

दूहा—कुमरकहे किमदीजिये, जिनमंदिरे आदेस। प्राणहरण पातिक वरण, कुगति हरण सुविसेस १ बंधन छोडावी करी, तेडाव्यो नृप पास। धवल सेठ साक्षात ए, ऐ ऐ!! लोभ विलास २ छोडाव्यो तिहां सेठने, कीधो तसु उपगार। पुन्य पसाये भोगवे, दिन दिन सुख श्रीकार ३ कुमर चलाऊ हिव थयो, राय जणावी वात। बेटी कुमर चलावीये, प्रवहण सजी विख्यात ४ मणि माणिक मोती घणा, आप्यो माल अपार। राय वोलावी कुमरने, घरे आव्यो सुविचार ५

ढाल ३३ मी. देशी "कंत! तमाकू परिहरो" एहनी—कुमर सेठ एक वाहणे, बीजा बीजे पोत मोरा लाल!। बे रमणी जाणे पदमणी, हुइ रहीयो उद्योत मो०, कु० ॥१॥ धवल अधम देखी करी, चिंते चित्त मझार मो०। ए रिद्धि ए नारी लही, अपछरने आकार मो०, कु०

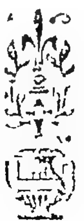
॥ २ ॥ विरह वियोगे आकुलो, अंतर व्याप्यो दुख मो० । नयणे नाठी नींदडी, भागी त्रिसने भूख मो०, कु० ॥३॥ च्यारे मित्र तेडी कहे, देखो एहनी रिद्धि मो० । ए सुंदर दोइ सुंदरी, इण पामी नव निद्धि मो०, कु० ॥ ४ ॥ गुपत वात तुमे राखिज्यो, किणहि म कहिस्यो गूज्झ मो० । एहने नांखी जलधिमें, ए नारी द्यो मूज्झ मो०, कु० ॥ ५ ॥ त्रण जण सेठ भणी कहे, ए स्युं बोल्या ? बोल मो० । पर उपगारी एहना, गुणनो नहीं कोई मोल मो०, कु० ॥ ६ ॥ वाहण चलाव्या ताहरा, कीधो तुझ उपगार मो० । विद्याधर महाकालथी, छोडाव्यो तिणवार मो०, कु० ॥७॥ ते गुण तुझने वीसर्या, इण ऊपरि धर्यो द्रोह मो० । दुरजन तुझ सरिखो न को, मित्रनो न गण्यो(नाण्यो)मोह मो०, कु० ॥ ८ ॥ यतः, दुहा–"मैला वांका चालता, विषमय भीषण देह । खीर पावंतां पिण डसे, सही दुजीहा तेह ॥१॥ मुह कडूआ अतिनीरसा, छांडे पूरव नेह । मलिन सभाव धरे सदा, खल जाणीजे तेह ॥२॥ सविस

डसे विरसा भसे, फिरता सूंघे देह । अवसर ताके आपणो, स्वान समा खल तेह ॥ ३ ॥
धीठा पिण मीठा मुखे, परिणामे दुख हेत । महुरा परि ते छांडीये, दुख रंजन दोष समेत ॥४॥"
ढाल—कृत(घ्न)घन तूं महापातकी, तुझने पडो धिक्कार मो० । इम कही त्रण ऊठी गया, एक
रह्यो तिणवार मो०, कु०॥९॥ ते कहे स्वामी ! सुणो, एहसुं केही वात ? मो० । गुण अवगुण नवि
जाणीये, कलीये नहीं जसु धात मो०, कु०॥१०॥ हूं सोखी छुं ताहरो, अवर न सोखी कोइ मो० ।
काम करिस हूं(सहू) ताहरो, जे जे मुझथी होइ मो०, कु० ॥११॥ भाग्य तुमारो सेठजी !,
बुद्धि माहरी जाण मो० । थास्ये ढाल तेत्रीसमी, कहे 'जिनहरष' कल्याण मो०, कु० ॥ १२ ॥

दूहा—धवलकहे धीरजधरी, तूं मुझवाल्हो मित्र । तुझथी सहु सारुं हुस्ये, ताहरी बुद्धि विचित्र
१ तेह कुबुद्धि इम कहे, धवल भणी तिणि वार । करज्यो प्रीति विशेषथी, सीपा साथे विचार २
मीठे वयणे रींझवी, उपजावो विसवास । जिम तिम दुसमण मारीये, थई तेहना दास ३

कपट प्रीति कीजे प्रथम, दीजे निज विसवास। अवसर पामी शत्रुनो, ततखिण कीजे नास ४
बुद्धि सीखवी धवलने, तिण पापी मतिहीण। रलीयायत धवलो थयो, जांण्यो एह प्रवीण ५

ढाल ३४ मी. मारू रागे "जीरावलपुर सांमीस लहीये रे" एहनी—धवल करे हिवे केलि अहोनिसि कुमरसुं रे, मनमें कपट धरंत। हसतो रे हसतो रमतो वयण कहे इसुं रे ॥ १ ॥ तुझ मुख देखी माहरी आंखडीयां ठरे रे, हीयडो हरख भराय। वाल्हा! रे वाल्हा! तुझ विण माहरे किम सरे रे ॥२॥ तुझसुं लागी प्रीति अधिक मन माहरे रे, विण दीठां न सुहाय। माहरुं रे माहरुं मनडुं वस थयुं ताहरे रे ॥ ३ ॥ भद्रक कुमर खरो करी जांण्यो तेहने रे, भेला रहे निसदीस। कारज रे कारज थाये जेहसुं जेहने रे ॥ ४ ॥ निसि भर सेठ कहे भाई! सुणो माहरा रे, आवो दिखालुं ख्याल। जलमां रे जलमां जलमाणस जाइ तियां रे ॥५॥ सरल सभावी आव्यो तुरत कुमर तिहां रे, सेठ कहे इणि डोर। चढीने रे चढिने



जलचर जीवोंके कुतूहल देखनेके लिये जहाजके किनारे बंधी हुई मंचिका पर श्रीपालजीको खडे कर के धवल शेठ जहाजमें आ जाता है उसका दुर्बुद्धि मित्र मंचिकाके बंधन काट देता है, जिससे श्रीपालजी समुद्रमे गिरजाते है. गिरतेही नवपदजीका स्मरण करते हैं, उस प्रभावसे और जलतारिणी औषधीके प्रभावसे एक मगरमच्छकी पीठ पर स्थिर हो जाते है, सिद्धचक्रका अधिष्ठाता देव आकर सहाय करता है।

(पत्रांक ८१)

जोवो आवीने इहां रे ॥ ६ ॥ जोवंतां पापी कापी ते दोरडी रे, जलधि पड्यो श्रीपाल। पडतां रे पडतां नवपद जपीयो तिण घडी रे ॥७॥ मगरमच्छ पूठे ते ध्यानथी रे, जलतारणी परमाण। जलना रे जलना संकट न हुवे तेहथी रे ॥ ८ ॥ मच्छ तणे पूठे वेसी ते गयो रे, कुंकण तट मनरंग। चंपा रे चंपा वृक्ष तले सोई रह्यो रे ॥ ९ ॥ पाखति सुभट घणा देखे जागे तवे रे, विनय करी कहे तेह। अमने रे अमने वसुपाल नृप मूंक्या अछे रे ॥ १० ॥ तुरी पलाणो चावक हाथे संग्रहो रे, चढि चाल्यो श्रीपाल। वसुपाल रे वसुपाल राजा आव्यो सांमुहो रे ॥ ११ ॥ आसन वेसण देई कुमर भणी कहे रे, अम्ह घरे जोसी एक। तेहने रे तेहने पूछ्यो कन्या वर कुण लहे रे ॥ १२ ॥ मदनमंजरी बेटी मुझने वालही रे, ए सरिखो वर जोड़। तो मुझ रे तो मुझ मन आस्या पूगे सही रे ॥ १३ ॥ ढाल थई एतले पूरी चोत्रीसमी रे, कहे 'जिनहरप' निहाल। चिंता रे चिंता कुमर तणी सघली गमी रे ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ५८२

॥ ८१ ॥

गयो नाह नगीनो ॥४॥ हीयडाना दुख किण आगे, कहीये कोई दुख्ख न भागे । मनमोहन नाह मिलावे, मुह मांगी वधाई पावे ॥ ५ ॥ दूहा–पावे अवला दुख घणो, वाल्हेसर करि सार । किण सारू मेल्ही गया, एकलडी निरधार ॥ ६ ॥ चाल–निरधार कहो किम कीजे, प्रीतम विण केम रहीजे । दरीयो लागे दुखदाई, उदयागत अधम कमाई ॥ ७ ॥ परभव केई पातक कीधा, परतिख तेहना फल लीधा । निरदोस पराई जाई, छोडंतां महिर न आई ॥ ८ ॥ दूहा–महिर न आवी प्रीतमा !, हेज नहीं मनमांय । जो मनमां एहवुं हतुं, तो चउरी चढीयो कांय ॥ ९ ॥ चाल–चवरी अमची तूं चढीयो, दक्षिण कर करसुं पकडीयो । तें वोल दीयो वीसारी, परणी छोडी निरधारी ॥१०॥ वाट जोस्ये कमला मायडी, आव्या छो विचमें छांडी । अम्हने इहां आणी नांखी, झूरे पंख विणि जिम पंखी ॥ ११ ॥ दूहा–पंखी जिम विण पंखडी, फोरी न सके प्राण । प्रीतम दरीयामें पड्यो, कीजे किसो

॥ ८३ ॥

दूहा—सुदि दसमी वैसाखनी,पहुर पाछिले जोइ। सायर तटे चंपातले, सूतो ते वर होइ १
वयण मिल्यो जोसी तणो, परणो कन्या एह। लगन देई वसुपाल नृप, परणाव्यो ससनेह।२।
राय कहे कोई काज ल्यो, राखो माहरो मान। थईयायत कामो लीयो, राय अपावे पान ॥ ३ ॥
धवल कुमरने नांखिने, माया मांडी भूर। रोवे पीटे सडसडे, मनमां वाध्यो नूर ॥ ४ ॥ सीपा
नारी भणी कह्यो,तुम्ह पति थयो जलपात। जोर नहीं जगदीससुं, पिण मित्र विना न सुहात ५

ढाल ३५ मी. यत्तिनी, राग सोरठ—पिऊ पिऊ करी मयणा रोवे,जूथ भ्रष्ट मृगी परि जोवे।
सांभल प्रीतम ! गुणवंता, अमची कुण करसे चिंता ॥ १ ॥ अधविचि छोडी गयो अम्हने,
करुणा नावी कांइ तुम्हने। अम्हे अबलाने एकलडी, परमेसर अम्हने विछडी ॥२॥ दूहा—
विछडी देवे अम्हभणी, छोडी पिउ निरधार। दुखसायरमांहे पडी, किम पामूं हिवे पार ॥३॥
चाल—पामूं किणपरि दुखपार, प्रीतम पाखे किरतार। त्रोडी गयो नाह नवीनो, हा हा ! !

गयो नाह नगीनो ॥४॥ हीयडाना दुख किण आगे, कहीये कोई दुख्ख न भागे । मनमोहन नाह मिलावे, मुह मांगी वधाई पावे ॥ ५ ॥ दूहा—पावे अवला दुख घणो, वाल्हेसर करि सार । किण सारू मेल्ही गया, एकलडी निरधार ॥ ६ ॥ चाल—निरधार कहो किम कीजे, प्रीतम विण केम रहीजे । दरीयो लागे दुखदाई, उदयागत अधम कमाई ॥ ७ ॥ परभव केई पातक कीधा, परतिख तेहना फल लीधा । निरदोस पराई जाई, छोडंतां महिर न आई ॥ ८ ॥ दूहा—महिर न आवी प्रीतमा !, हेज नहीं मनमांय । जो मनमां एहवुं हतुं, तो चडरी चढीयो कांय ॥ ९ ॥ चाल—चवरी अमची तूं चढीयो, दक्षिण कर करसुं पकडीयो । तें वोल दीयो वीसारी, परणी छोडी निरधारी ॥१०॥ वाट जोस्ये कमला मायडी, आव्या छो विचमें छांडी । अम्हने इहां आणी नांखी, झूरे पंख विणि जिम पंखी ॥ ११ ॥ दूहा—पंखी जिम विण पंखडी, फोरी न सके प्राण । प्रीतम दरीयामें पड्यो, कीजे किसो

विन्नाण ॥१२॥ चाल–हिवे नाण विन्नाण न सूजे, छाती धडहड इम धूजे। अम्हथी दादुर गुण जाण, पाणी सरिसा जसु प्राण ॥ १३ ॥ पीहर तो परतटे रहीया, प्रीतम विरहागनि दहीया। प्रमदा इणिपरि विलवंती, दुख रोई राति गलंती ॥१४॥ दूहा–राति गलंती तिमरडी, पाहण फट्टइ जेण। पिण हीयडो फाटो नहीं, थयो कठिन विरहेण १५ चाल–प्रिय विरह वियोगे पीडी, वलि सेठे कुद्रिष्टे भीडी। पामे नहीं किमही थाग, निज प्रीतमसुं बहु राग १६ सतीयां निज सील सखाई, तेहने तो चिंत न कांई। 'जिनहरख!' देवी वरदाई, पेंत्रीसमी ढाल सुहाई १७

दूहा–इम विलवंती सुंदरी, रोवंती न रहाय। धवल अधरमी तिण समे, भासे पासे आय ॥१॥ हे सुंदरी! तुम्हे सांभलो, म करो मनमें खेद। हूं तुम्हने सारीपरे, राखिस घणे उमेद ॥२॥ विधिविलसित अहिलो नहीं, नहीं केहनो जोर। पिण मुझ वयण म लोपसो, तुमने करूं निहोर ३ वयण सुणी मयणा बिन्हे, जाण्युं एहना काम। सायरमां पिउ नांखीयो, रही अबोली ताम ४

ढाल ३८मी. देशी "वाणिणि वाउली रे, जसोदा फौजां पाछी वालि" एहनी— इण अवसर गयणंगणे रे, मिलीयो घनघोर अंधार, देवी चक्केसरी रे। मयणानी वाहरे आई, धाई वाहर आई धाइने, लागी नहीं कांई वार दे०। पवन चिहुं दिसि ऊपड्या, सायर कल्लोल अपार दे० ॥ १ ॥ जलनिधिना जल ऊछल्या रे, ऊधाण चढ्या असमान दे०। वाहण लागा डोलिवा, जाणे चंचल पींपल पान दे० ॥ २ ॥ वीज झलामल झलहले रे, वीहावती बाल गोपाल दे०। घोर घटा करि ऊंनम्यो, जलधर वरसे असराल दे० ॥३॥ लोल कल्लोल हिलोलतो रे, वाजे दधि गाजे पूर दे०। लोक सोक भय ऊपनो, कायर थयां सूर विनूर दे० ॥ ४ ॥ खांडा हत्थउ भैरवो रे, कर डमरूने डाक दे०। तिण अवसर प्रगट्यो तिहां, आव्यो मारंतो हाक दे० ॥५॥ माणिभद्र वीजो वली रे, पूरणभद्र कपिल सरीर दे०। पिंगल चोथो दाखीयो, सिद्धचक्रना च्यारे वीर दे० ॥६॥ मोगर हाथे साहिया रे, अन्याई करे चकचूर दे०। सेवक श्रीजिन-

रायना, प्रगट्या जाणे अंकूर दे०॥७॥ कुमुद अंजण बली वामणो रे, पुष्पदंत चोथो सुर नाम दे०। दंड धरा अति आकरा, पडीहार च्यारे अभिराम दे०॥८॥ हाथे चक्र भमाडती रे, झलकंत अत्यंत उद्योत दे०। वयण इसा मुख भाषती, प्रगटी चक्केसरिनी जोत दे० ॥ ९ ॥ रे रे ! वीर! एहने ग्रहो रे, दुरबुद्धि प्रथम इणे दीध दे०। ए पापी हणवो सही, अनरथ जिणे एहवो कीध दे० ॥१०॥ वीरे झाली बांधीयो रे, अवलंब्यो कूवा थंभ दे०। ऊंधे मुख दुखीयो कीयो, हणीयो फल पाम्यो दंभ दे०॥११॥ भये चकित धवलो भणे रे, तुम्ह सरणे मयणा माय ! दे०। राख राख मारण थकी, में झाल्या ताहरा पाय दे०॥१२॥ निज गुण साम्हो जोइज्यो रे, माहरा अवगुण म निहाल दे०। उत्तम गुणकारी हुवे, 'जिनहरख!' छत्रीसमी ढाल दे० ॥ १३ ॥

दूहा—ताम चक्केसरि इम भणे, तूं रे पापिष्ट! अनिष्ट। में तुझ मूंक्यो जीवतो, मयणा सरणे प्रविष्ट ॥ १ ॥ दोइ मयणा कर जोडिने, भाषे विनय वसेण। सार करी माता ! तुम्हे, विसमे



श्रीपालजीकी दोनों स्त्रीयोंके ध्यानबलसे समुद्रमें एकदम तोफान उठता है, चक्रेश्वरी आदि देवगण आके प्रगट होते हैं, दुर्बुद्धि मित्रको क्षेत्रपाल शिक्षा देता है, धवलशेठ श्रीपालजीकी दोनों स्त्रीयोंका शरण लेता है, जिससे चक्रेश्वरी देवी उसको जीवता छोडती है, दोनों स्त्रीयें अपने शील रक्षणके लिये चक्रेश्वरीसे प्रार्थना कर रही हैं।

(पत्रांक ८६)

अवसर एण ॥ २ ॥ देवीवाक्यं–वच्छा ! वल्लह तुम तणो, गिरूई रिद्धि समेउ । मास- ऽभिंतर निच्छइण, मिलस्ये धरो म खेउ ॥ ३ ॥ एम भणेविणु(कहिने) चक्कहरि, परिमल गुणाहि विसाल । मयणह कंठे पखिवे, सुरतरु कुसुमह माल ॥ ४ ॥ तुम्हह दुष्ट न देखस्ये, मालह तणे प्रमाण । एम भणेविणु (भणिने) चक्कहरि, देवि गई नियठाण ॥ ५ ॥

ढाल ३७मी. "ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं" एहनी–हिवे वाहण कुंकण जई, ऊतरीया जाम । धवलो भलो लेई भेटणो, भेट्यो राजा ताम, हि० ॥ १ ॥ राय खुसी थई सेठने, दिवरावे पान । थईयायतने ओलख्यो, थयो हीयडे हेरान, हि० ॥ २ ॥ ए नीकल्यो किम जीवतो, वैरी विकराल । वली मुझथी अधिको थयो, हीयडे ऊठी झाल, हि० ॥ ३ ॥ कोई उपाय करूं हिवे, जिम रूसे राय । एहने जीव रहित करे, जिम भावठ (कष्ट) टलि जाय, हि० ॥४॥ डुंब कुटुंब आव्यो तिहां, सेठे आदर दीध । काम कहो करिसुं अम्हे, सवालाख धन लीध, हि०॥५॥

राय जमाई जो हणे, धन द्यूं सवा कोडि । डूंब भणे ए सोहिलुं, काम करसुं दोडि, हि० ॥६॥ रावले डूंब जई करी, गाया भला गीत। वली विशेषे ते दिने, रीझाव्यो राय चीत, हि० ॥७॥ नृप तूठो बीडा दीये, गायन न लीयंत। राय जमाई सेहत्थे, लीउं जो दीयंत, हि० ॥८॥ हुकम दीयो श्रीपालने, वसुपाल नरिंद। बीडा देवाने गयो, नवि जाणे फंद, हि० ॥ ९ ॥ गायन सहु ऊठी करी, सीपा कंठ विलग्ग। एक भणे पुत्र! ओलख्यो, इम रोवा लग्ग, हि०॥१०॥ एक कहे भाइ! मिल्यो, बहु दिवसे आज। नारि थई इक डूंबणी, बेठी करी लाज, हि०॥११॥ माय थई माया करे, रहे रहे हिवे पूत!। झाली बांह बेसारीयो, चलीयो घर सूत, हि० ॥ १२ ॥ राजा अचरिज पामीयो, जोवो दैव सरूप। ढाल थई सेंत्रीसमी, 'जिनहरष' अनूप, हि० ॥१३॥

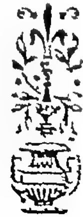
दूहा—कोप चढ्यो राजा कहे, बांभण डाभुं आज। ए कन्या वर दाखव्यो, गमी सहूमें लाज १
वली नृप पूछे कुमरने, दाखवीये निज वंस। निज जीभे सीपो कहे, कुल कीजे न प्रसंस ॥ २ ॥

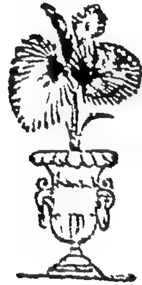
चतुरंगी सेना सजो, मंडावो भारत्थ । तिण वेला तुम्हे जाणिज्यो, कुल लहिस्ये मुझ हत्थ ॥ ३ ॥ अथवा प्रवहण मांहि छे, दोइ नारी गुणवंति । कुल कहिस्ये ते माहरो, मिटस्ये मननी भ्रांति ॥४॥ भूपति तेडी नारि बे, मूंकी पुरुष प्रधान। आवी हीयडे ऊमही, पूछे तव राजान ५

ढाल ३८ मी. देशी "कोइलो परवत धूंधलो रे लो" एहनी– वोली तव विद्याधरी रे लो, अंगदेस भूपाल रे राजेसर !। सिंहरथ राय कमला तणो रे लो, ए नंदन श्रीपाल रे नरेसर !, वो०॥१॥ पूरव वात सहू कही रे लो, एहनी छूं बे अम्हे नार रे रा०। नृप सुणि अचरिज पामीयो रे लो, पाम्यो चित्त चमकार रे न०, वो० ॥ २ ॥ ततखिण बांध्यां डूंबडा रे लो, दीधी मार अपार रे रा० । हुकम कीयो हणवा तणो रे लो, गायन बोल्या तिण वार रे न०, वो०॥३॥ वांक अम्हारो को नथी रे लो, सगपण पिण नहीं कोइ रे रा० । धवल अछे एक वाणीयो रे लो, पापीमां धूरि होइ रे न०, वो० ॥ ४ ॥ धन आपी अम्हने घणो रे लो, एह कराव्यो काज रे

रा० । खोटो बोलीजे किसुं रे लो, तुम्ह आगले महाराज! रे न०, बो० ॥ ५ ॥ राय भर्यों रीसे घणूं रे लो, पाठवीया निज दूत रे रा० । धवल भणी बांधी करी रे लो, लेवा तुरत पहूत रे न०, बो० ॥ ६ ॥ बांह अपूठी बांधिने रे लो, लाया वेग तलार रे रा० । वाहो (मारो) बार म लाविसो रे लो, धवल तणो सिरधार रे न०, बो० ॥ ७ ॥ मारंतो छोडावीयो रे लो, करुणा करी श्रीपाल रे रा० । वछीयायत ए वाणीयो रे लो, हणीये किम ? भूपाल ! रे न०, बो० ॥ ८ ॥ बंधनथी छोडावीयो रे लो, दिवराव्यो सनमान रे रा० । सापुरुस रीस धरे नहीं रे लो, वलि न करे अभिमान रे न०, बो० ॥ ९ ॥ त्रिहुं मयणासुं भोगवे रे लो, सुख गमतां निसदीस रे रा० । कुमर प्रताप निहालिने रे लो, सेठ धरे मन रीस रे न०, बो० ॥ १० ॥ कुमर सूतो भूमि सातमी रे लो, वली मांड्यो मन द्रोह रे रा० । निसिभर बांधी डोरडी रे लो, मूंकी चंदन गोह रे न०, बो० ॥ ११ ॥ हणवा कुमर भणी चढ्यो रे लो, पालीकर संबाहि रे रा० । पाली सहित

॥ ९० ॥







ठाणा नगरीमें अपने महलकी तसावीं मजलपर श्रीपालजी अकेले सो रहे थे. इधर धवलशेठ मौका पाके महलकी पूंठमें गया और चंदनगोहके पगमें रस्सी (डोरी) बांधकर उसको उपर चढाइ, जब कि वह चंदनगोह सातवीं मजलपर जाके स्थिर हो गइ तब कमरमें तलवार बांधकर श्रीपालजी को मारनेके लिये खुद धवलशेठ रस्सी पकडकर उपर चढने लगा, पापका घडा भर जानेके कारण आधे भागसे रस्सी टूट गइ, नीचे पडते हुए हृदयमें तलवार घुस जानेसे मर कर नरकमें गया, सवेरे नगरके लोक एकत्र होकर विविध बातें करने लगे, श्रीपालजीभी हकीकत सुनके सज्जनताके कारण आके उदास हुए पासमें बैठे है।

(पत्रांक ९१)

AMRUT SAGAR PRESS BOMBAY 3

पाछो पड्यो रे लो, खूती हीयडा मांहि रे न०, वो० ॥ १२ ॥ ततखिण प्राण तज्या तिहां रे लो, धवल गयो जम लोक रे रा० । देखी सहु कहे एहवो रे लो, पातिक न हुवे फोक रे न०, वो० ॥१३॥ माठी करणीथी इणे रे लो, फल पाम्या ततकाल रे रा० । कहे 'जिनहरष' भले भलो रे लो, कह्यो अडत्रीसमी ढाल रे न०, वो० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ६५८ ॥

दूहा—क्रोध लोभ श्रीपालना, मनमां नहीं लिगार । प्रेतकार्य करि धवलनो, कीधो इम उपगार ॥१॥ तेडीने आसासना, सेठपुत्रने दीध । पिता तणो धन आपीयो, लोकांमें जस लीध ॥ २ ॥ कोसंबी संप्रेडीयो, उत्तमनी ए रीति । खीरनीर जिम सापुरुस, पाले पूरी प्रीति ॥ ३ ॥

ढाल ३९मी. देशी "नणदल ! हे नणदल !, चूडले जोवन झिल रहियो" एहनी—साजन ! हो साजन !, इक दिन रयवाडी गयो, सीपो मनमें रंग । साजन ! सेवक साथि लेई करी, बेसी चपल तुरंग ॥ १ ॥ सा० पुन्य कथा तुम्हे सांभलो, पुन्य कीयां आणंद । सा० कष्ट टले

ततखिण प्राण तज्या तिहां
पाछो पड्यो रे लो, खूती हीयडा मांहि रे न०, वो० ॥ १२ ॥ पातिक न हुवे फोक रे
रे लो, धवल गयो जम लोक रे रा०। देखी सहु कहे एहवो रे लो, कहे 'जिनहरष'
न०, वो० ॥१३॥ माठी करणीथी इणे रे लो, फल पाम्या ततकाल रे रा० । सर्व गाथा ६५८ ॥
भले भलो रे लो, कह्यो अडत्रीसमी ढाल रे न०, वो ० ॥ १४ ॥

दूहा—क्रोध लोभ श्रीपालना, मनमां नहीं लिगार। प्रेतकार्य करि धवलनो, कीधो इम
उपगार ॥१॥ तेडीने आसासना, सेठपुत्रने दीध। पिता तणो धन आपीयो, लोकांमें जस लीध
॥ २ ॥ कोसंबी संप्रेडीयो, उत्तमनी ए रीति । खीरनीर जिम सापुरुस, पाले पूरी प्रीति ॥ ३ ॥

ढाल ३९मी. देशी "नणदल ! हे नणदल !, चूडले जोवन झिल रहियो" एहनी— साजन !
हो साजन !, इक दिन रयवाडी गयो, सीपो मनमें रंग। साजन ! सेवक साथि लेई करी, बेसी
चपल तुरंग ॥ १ ॥ सा० पुन्य कथा तुम्हे सांभलो, पुन्य कीयां आणंद । सा० कष्ट टले

संपति मिले, जिम श्रीपाल नरिंद, सा० पु० ॥ २ ॥ सा० आगलि वनमां ऊतर्यों, दीठो सारथवाह। सा० पूछ्यो कुमर किहां थकी, आव्या किण पुरमांह, सा० पु० ॥ ३ ॥ सा० अचरिज कोई निहालीयो, कांई अपूरव वात। सा० तेह कहे कांतिथकी, आव्यो सुण वडगात !, सा० पु० ॥ ४ ॥ सा० इहां थकी सो जोयणे, कुंडल नगर वसंत । सा० मकरकेतु राय रागिनी, कपूरतिलका गुणवंत, सा० पु० ॥ ५ ॥ सा० गुणसुंदरी तेहनी सुता, विद्या रूप प्रसाद । सा० परणे नर ते मुझ भणी, जीपे वीणा नाद, सा० पु० ॥ ६ ॥ सा० नरपति नंदन बहु मिल्या, सीखे वीणा चाल । सा० वात इसी तिण नर कही, घर पहुंतो श्रीपाल, सा० पु० ॥ ७ ॥ सा० ते अचरिज जोवा भणी, लागी मनमें खंत । सा० भाव धरी नवपद जपे, तन मन करी एकंत, सा० पु० ॥ ८ ॥ सा० नवपद भगत प्रत्यक्ष थयो, श्रीविमलेसर यक्ष । सा० तूठो सीपाने कहे, मांग मांग वर दक्ष !, सा० पु० ॥ ९ ॥ सा० गुण रंज्यो

सीपा भणी, आले निरमल हार। सा० पहिर्यो कंठे मोहन करे, जाये जिहां जाण हार, सा० पु०
॥ १० ॥ सा० हार तणी महिमा कही, सुर पहुंतो निज ठाण । सा० कुमर गयो कुंडलपुरे,
पहिरी हार सुजाण, सा० पु० ॥११॥ सा० रूप रच्यो वामन तणो, गयो अखाडा साज। सा०
भणिवा पाठक! तुम्ह कने, हूं आव्यो छूं आज, सा० पु० ॥ १२ ॥ सा० वीणा कला मुझ
सीखवो, मुझने पिण छे हूंस। सा० राजकुमरीने रींझवूं, नांखुं मगज विधूंस, सा० पु० ॥१३॥
सा० नृप नंदन हड हड हस्या, वोल्यो वामण साच। सा० हूंस करे वरवा तणी, किहां
कंचण किहां काच, सा० पु० ॥ १४ ॥ सा० राय कुमर आवो मिली, माहरे पासे आज। सा०
राजकुमरि तेड्या सहू, नाद परीक्षा काज, सा० पु० ॥१५॥ सा० वामण पिण साथे गयो, राज-
कुमरि आवास। सा० ढाल ए उगणचालीसमी, कही 'जिनहरष' उल्लास, सा० पु० ॥ १६ ॥

दूहा—वीणासुर सहुए कर्यों, तंतउतार्या राग। पिण किणहीना नादसुं, कुमरीचित्त न लाग

॥ १ ॥ वीणा मांगी वामणे, आपे कुमरी अचंभ । आरंभ कीधो नादनो, थंभ्या सहु जिम थंभ ॥२॥ सहु को देखे वामणो, नृपकन्या श्रीपाल । कुमरी वर वरवा भणी, कंठ ठवी वरमाल ॥३॥ रूप अनूप कीयो प्रगट, चंपापति तिण वार । मकरकेतु मन हरखसुं, परणावीयो कुमार ॥ ४ ॥ आप्या कंचण मणि रयण, आप्या वर आवास । कुमर तिहां सुख भोगवे, वारू लीलविलास ५

ढाल ४०मी. देशी "प्यारो प्यारो करती" एहनी—एक दिन रमवा नीकलीयो, वाटे एक पंथी मिलीयो। कुमरे परदेसी कलीयो, पूछे अचरिज अटकलीयो हो लाल ॥१॥ कहो पंथी! किहां जासो ?, किहांथी आया मुझ भासो । दीठो कोई तुम्हे अवल तमासो, मुझ आगलि तेह प्रकासो हो लाल, क० ॥२॥ पंथी कहे चतुर सुजाण !, कुंडनपुर नयर मंडाण । आव्यो तिहांथी सुप्रमाण, जाइस हूं पुर पैठाण हो लाल, क० ॥३॥ कणयापुरमांहे आयो, राजा विजयसेन कहायो । राणी कनकमाला मन भायो, जिणे पुन्य थकी सुख पायो हो लाल, क० ॥४॥ त्रैलोक्य-

श्री
पा
ल
रा
जा
का
रा
स

कुंडलपुर नगरमें वीणानादके वादमें जीतजानेपर गुणसुंदरी राजपुत्रीके साथ होता हुआ श्रीपालजी का विवाह दृश्य।



मुंदरी तसु बेटी, जाणे रूप कला गुण पेटी। पासे रहे सुंदर चेंटी, मननी आरति जिणे मेटी हो लाल, क० ॥५॥ कन्या थई जोवनवंती, दीठी वापे मलपंती। वर जोग्य थई गुणवंती, सरिखे पूगे मन खंती हो लाल, क० ॥ ६ ॥ सयंवर मंडप मंडाउं, सहू देसाधिप तेडाउं। इण सरिखो जो वर पाउं, तो बेटीने परणाउं हो लाल, क०॥७॥इम चिंतवि चित्त मझारा, मंडप रचीया विस्तारा। जगमांहे नर सिरदारा,आव्या लेई परिवारा हो लाल,क०॥८॥ बत्रीस जोयण इहांथी थाये, काल्हे वरिस्ये मनभाये। सीपो सांभलि तिहां जाये, पंखी जिम गयण पुलाये हो लाल,क०॥९॥ कणयापुर मांहे आयो,खुंधानो(कुब्ज)रूप बणायो। अचरिज देखण उमाह्यो, देखी मंडप सुखपायो हो लाल, क० ॥१०॥ प्रतिहार न द्ये पेसेवा, हथसंकलो दीयो देखेवा। आयो 'जिनहरख' वरेवा, चालीसमी ढाल कहेवा हो लाल, क० ॥ ११ ॥ सर्व ६९३

दूहा—पूठभाग उंचो घणो, उर सांकडो प्रदेस। उंची नीची नासिका, माथे कपिला केस

॥१॥ पूठे हूबड कूबडो, मोटो माथो जास। दांत गदहडा सारिखा, तेहवा दांतऊजास ॥२॥ कोटगली वांकी नली, पिंजर नयन विसात । लाल पडे होठ लडवडे, इसो बणायो गात ॥३॥ राजहंस सम राजवी, बेठा करे कलोल । काग सरीखो कूबडो, आवी उभो लोल ॥४॥

ढाल ४१ मी. देशी "श्रीचंद्रप्रभु प्राहुणो रे" एहनी– कहो खूंधा! नरपति कहे रे, किम ऊभा ? इहां आज रे। जिणे कारणे बेठा तुम्हे रे, ऊभो छूं तिणे काज रे, क० ॥१॥ हड हड हसीया राजवी रे, रूप बण्यो वाह वाह रे !!। तुझ सरिखो वर किहां मिले रे, एहवां राजवीयां मांह रे, क० ॥ २ ॥ कन्या नरवाहन चढी रे, स्वयंवर कीधो प्रवेस रे। ढोल दमामा वाजीया रे, सखर बणाव्या वेस रे, क० ॥३॥ श्रीपाल रूप मूलगो रे, देखे कन्या तेह रे। प्रमुदित चित्त थयो घणो रे, लागो निविड सनेह रे, क० ॥४॥ तीखे नयणे ताडिने रे, जोवे वारंवार रे । चुंबक लोह तणी परे रे, मन मिलीयो तिणवार रे, क० ॥ ५ ॥ प्रतीहारी आवी हिवे रे,

…राजकुमरी करि साथ रे, क० ॥६॥ लाल छडी ले हाथ रे । स्वयंवर विचमें मालहती रे, संभलावे सुविसेस रे, राजवीयांने ओलखे रे, जाणे देस विदेस रे। वंस तणी बिरुदावली रे, थांभा पूतलीने मुखे रे, क०॥७॥ छोडि चली सहु राजवी रे, जिम भाद्रवडे(भाद्रवे)छाण रे। देवतणी थई वाण रे, क० ॥ ८ ॥ तथाहि–“यदि धन्यासि विज्ञासि, जानासि च गुणांतरं। तदेनं कुब्जकाकारं,वृणु वत्से! नरोत्तमं॥१॥” देव तणी वाणी सुणी रे, कुब्ज गले वरमाल रे। घाली कन्याये वर्यो रे, मूंकी सहु भूपाल रे, क० ॥ ९ ॥ धडहडीया कोपे करी रे, मानी नर मूंछाल रे। कहता रे रे!! कूवडा! रे, मेल्हे परि वरमाल रे, क०॥१०॥ मूंक्यां मूंकां जीवतो रे, नहीं तो मूंकां जमलोक रे। राजसुताने कारणे रे, कांइ मरे तूं फोक रे, क०॥११॥ कांइ अदेखा राजवी! रे, कांइ वडो करो रोस रे । रूप न पाम्यो जो तुम्हे रे, तो केहनो कहो दोस रे, क० ॥१२॥ नाक तणा मलनी परे रे, तुम्हने तज्या इणे बाल रे। आदरमान देई घणो रे,

मुझ कंठे ठवी वरमाल रे, क० ॥१३॥ भाग्य विना नवि पामीये रे, रायसुता सुकुमाल रे। कहे 'जिनहरष' सषी (लखी) जिस्यो रे, इकतालीसमी ढाल रे, क० ॥१४॥ सर्व गाथा ७११॥

दूहा—एहवा वयण सुणी करी, भड भडीया भूपाल। मारो मारो कूबडो, पाडी ल्यो वरमाल १ इम कही ऊठ्या मारवा, खूंधे देखाड्या हाथ। कायर थई नासी गया, मांडे कुण भारथ २ खूंध पराक्रम देखिने, विंजयसेन राजान। तव बोल्यो वछ! आपणो, प्रगटो रूप बलवान ३ रूप कीयो निज मूलगो, जाणे अभिनव काम। राजा रलीयायत थयो, कुमरी सम वर पाम ४ परणावी नृप अंगजा, उच्छव करी अपार। सुंदर मंदिर आपीया, रयण कणय सिणगार ५ सीपो वर सुंदर प्रवर, त्रैलोक्यसुंदरी नार। जोडी जोडी सारिखी, हूंस हुइ किरतार ॥६॥

ढाल ४२ मी. देशी "वाल्हं रे सवायो वयर हूं माहरो रे" एहनी—रायसभाये आव्यो चर एकदा रे, कहे निसुणो श्रीपाल!। देवक पट्टण धण कंचण भर्यों रे, राय तिहां धरापाल, रा०

॥ १ ॥ गुणमाला गुणमाला रागिणी रे, तेहने पुत्री रे एक । शृंगारसुंदरी जाणे सुरसुंदरी रे, जाणे विनय विवेक, रा० ॥२॥ श्रीजिन सासनना प्रवचन तणो रे, जाणे सयल विचार । पंच सखी छे ते पिण तेहवी रे, मांहो मांहे प्यार, रा० ॥ ३ ॥ प्रथम पंडिता १ बीजी नाम विचक्षणा २ रे, प्रगुणा ३ निपुणा ४ छेक। तिम दक्षा ५ जाणो सखी पांचमी रे, तन जूआ मन एक, रा० ॥ ४ ॥ पांच सखी आगल कहे कुमरी रे, जे नर जिनमत जाण। ते वर वरवो आपणने सखी! रे, श्रीजिन आण प्रमाण, रा० ॥५॥ जेह समस्या रे मननी पुरिस्ये रे, ते आपण भरतार । पांचे सहाए रे समस्या पद कर्या रे, जिनमत जाणणहार, रा० ॥ ६ ॥ एहवी वाणी रे सांभलि राजवी रे, आव्या पंडित जाण। अवर समस्या रे पूरवे ते सह्रू रे, पिण मन भाव अयाण, रा० ॥ ७ ॥ इम ते कुमरी रे रहे छे परखती रे, पिण न मिले संकेत। कुमर सुणीने रे मनमांहे धर्युं रे, कुमरी वरिवा हेत, रा० ॥८॥ हार प्रभावे रे

आव्यो पाटणे रे, पहूंतो कन्या आवास। सुंदर सहजे रे रूप सुहामणो रे, निरखी हरखी उलास, रा० ॥९॥ कुमरे पूछ्यो रे चित्त समस्या कहो रे, निज मन धारी जेह। कुमरी केरी रे प्रेरी पंडिता रे, तव बोली गुण गेह, रा० ॥१०॥ समस्या पदं "मन वांछित फल होइ ॥१॥" सखीमुखे ते रे एणे जो कही रे, तो सेमुख (स्वमुखे) कुण काम। हार ठवीने रे कंठे पूतली रे, मुख बोलावे ताम, रा० ॥११॥ ए किम बोले रे पत्थर पूतली रे, अचरिज लहे नृपबाल। ढाल थई ए बेतालीसमी रे, कहे 'जिनहरष' रसाल, रा० ॥ १२ ॥ पुत्तली वचनं यथा–

दूहा–अरिहंताइ सुनवह पद, निय मन धरे जे कोइ। निश्चय ते नर नारियह, मनवांछित फल होइ ॥ १ ॥ अथ विचक्षणा पठति–"अवर म झंखो आल॥ २ ॥" पुत्तलिका कथयति–अरिहंत देव सुसाहू गुरु, धम्म तु दया विसाल। मंतुत्तम नवकार पर, अवर म झंखो आल ॥ २ ॥ प्रगुणा पठति–"करहु सफल अप्पाण ॥ ३ ॥" पुत्तलिका भणति–

आराहो धुरि देवगुरु, द्यो सुपत्ते दाण । तव संयम उवयारडो, करहु सफल अप्पाण ॥ ३ ॥ निपुणा पठति– "जित्तो लिख्यो निलाडि ॥४॥" पुत्तलिका वदति–रे मन ! अप्पा खंच करि, चिंत्ता जाल म पाडि । फल तित्तो ही पामीये, जित्तो लिख्यो निलाडि ॥ ४ ॥ ततो दक्षा पठति–" तसु तिहुअण जण दास ॥५॥" पुत्तलिका जल्पति– अत्थि भवंतर संचियो, पुन्न समग्गल जास । तसु वल तसु मइ तसु सिरि य, तसु तिहुअण जण दास ॥ ५ ॥ कुमर समस्या पूरवी, हरखी कुमरी चित्त । ए वर मुझ पुन्ये मिल्यो, पूरव भवनो मित्त ॥ ६ ॥

ढाल ४३ मी. देशी "मोती द्योने हमारो, राजिंदा ! मोती द्योने" एहनी– राजा सुणि रींझ्यो चतुराई, ए वर सरिखो मिलीयो बाई । जोइज्यो पुन्याई तणा फल, जोइज्यो पुन्याई, ए आंकणी ॥१॥ पुन्याईए आवी मिलीयो, जाणे अकाले आंबो फलीयो जो०, । पंच सखी साथे नृपवाला, सीपा कंठे ठवी वरमाला जो० ॥२॥ राजा परणावी निज कन्या, लोक सहू भाखे ए

धन्या जो० । पंच प्रकार विषय सुख विलसे, पुन्यथकी आस्या सहु फलसे जो०॥३॥ भाट भणे आसीस भली परे, चिरंजीवो महाराय कुमर वर जो० । अचरिज एक अपूरव दीठो, कोल्लागपुर रिद्धि समृद्धि अनीठो जो० ॥४॥ राय पुरंदर जाण पुरंदर, राणी विजयादे अति सुंदर जो० । बेटी गुणपेटी जयसुंदरी, रूपे अभिनव रति मति मंदिर जो० ॥ ५ ॥ कुमरी प्रतिज्ञा करी रहि थिरता, राधावेध साधे सोई भरता जो० । बाप कन्याने काजे तेडाव्या, दिसि दिसिना देसाधिप आव्या जो० ॥ ६ ॥ पिण ते किण ही वेध न साध्यो, कुमरी मन उच्छाह न वाध्यो जो० । भाट भणी बहु दान देईने, कुमर चल्यो निज हार लेईने जो० ॥७॥ कोल्लागपुर ऊडीने आयो, राधावेध सझी सुख पायो जो० । जयसुंदरि कन्या वर वरीयो, राये वीवाह सबल आचरीयो जो० ॥ ८ ॥ दोइ जण झीले सुख सायरमें, सरिखी जोडि मिली निज करमें जो० । तिण अवसर मामो तेडावे, नर मेल्हीने खबर करावे जो० ॥ ९ ॥ कुमरे

पिण निज पुरुष पठाया, नारी तेडण सैन्य बुलाया जो० । बंधु सहित सहु सुंदरि आई,
सेना बहुत मिली मनभाई जो०॥१०॥ हयदल गयदल पयदल मिलीयो, चालंतां अहिपति
सलसलीयो जो० । सात सायरनो जल झलफलीयो, जाये किणही नहीं वल कलीयो जो०
॥११॥स्थानापुरी नयरी ऊतरीयो, मातुल निरखी हरख मन धरीयो जो० । मामे करि अभिषेक
सुदिवसे, राजा पद दीधो मन हरसे जो० ॥१२॥ पुन्य पसाये लह्या सुख ताजा, श्री श्रीपाल
थया महाराजा जो० । तेंतालीसमी ढाल वखाणी, कहे 'जिनहरष' वखत नीसाणी जो० ॥१३॥

दूहा–दस दिसि केरा राजवी, आवी लागा पाय। हय गय कंचण मणि रयण, लेई भेट्यो
राय १ हिवे श्रीपाल नरेस वर, लेई सैन्य अपार। चाल्यो उज्जेणी भणी, मिलवा जननी नार २
विचि सोपारे पाटणे,जई दीधो मेल्हाण(डेरो)। पर दल आव्यो जाणिने, राय मेल्यो दीवाण ३
श्री श्रीपाल नरिंदने, आवी लागो पाय। कर जोडीने वीनवे, स्वामी ! करो पसाय ॥ ४ ॥

महासेन नृप कुमरी, डसीयो अंग भुयंग । तिलकसुंदरी विषभरी, तिण दुख राय भयंग ५
समसाणे ते ले गया, दुख पीडित भूपाल। तुम्ह मिलिवा तिण वासते, नाव्यो अहो कृपाल! ६

ढाल ४४ मी. देशी "परदेशी यार! मेरी अंखीयां लगी" एहनी– परउपगारी साहसधीर, समसाणे पहुंतो वडवीर । उपगारी लाल ! ताके पाय नमीजे, पाय नमीजे ताकी सेवा कीजे उ० । ए आंकणी । नयणे मुझ देखालो बाल, ए जीवाडिस हूं ततकाल, उ० ॥१॥ दीठी कन्या मृतक समान, महामंत्रनो कीधो ध्यान, उ० । कुमरी कंठे ठवीयो हार, ततखिण बेठी थइ तिणवार, उ० ॥ २ ॥ विष ऊतरीयो निर्विष प्राण, वाज्या हरष तणा नीसाण, उ० । राजा महासेन हरख्यो अपार, भेट करे मणि रयण भंडार, उ० ॥ ३ ॥ परणावी निज कन्या तेह, तिलकसुंदरी घणे सनेह, उ० । देव तणी परे विलसे भोग, पाम्या पुन्यतणे संयोग, उ० ॥ ४ ॥ आणो करि चाल्यो श्रीपाल, कटक सुभट दल बहुल विसाल, उ० । सैन्य चढाई

कीधी भूपाल, चडत नगारा थइ करनाल, उ० ॥ ५ ॥ देस देसना राये संजुत्त, चलतां मालवमांहे पहुत्त, उ० । उज्जेणी आयो श्रीपाल, चर मुख सांभलीयो भूपाल, उ० ॥ ६ ॥ त्रिण कण कापड जल मांहे लीध, गढ रोहो मालव पति कीध, उ० । सायर वींटी लंका जेम, उज्जेणी वींटी रह्यो तेम, उ० ॥ ७ ॥ चिंतातुर नगरीना लोक, अधिक उदासी रहे ससोक, उ०। राति पडी तव थयो उजमाल, चाल्यो माय मिलण श्रीपाल, उ० ॥ ८ ॥ समरे निसिपति जेम चकोर, मेहागम जिम चाहे मोर, उ०। मधुकर आवे मालति दाइ, मयणासुंदरी तिम अधिक सुहाइ, उ० ॥ ९ ॥ सहु अंतेउर तेडी साथ, निर्भय थई पहूंतो घर नरनाथ, उ०। उलसी मयणासुंदरीनी माइ! उघाडो मंदिर बार, तुम्ह सेवक जिम करे जुहार, उ० ॥ १० ॥ झटकि उघाड्यां घरना बार, मिलीया माय सुत देह, बाइ! तुम्ह सुत सादज एह, उ० । झटकि उघाड्यां घरना बार, मिलीया माय सुत विरह निवार, उ० ॥ ११ ॥ लागी वहू सहू सासू पाय, मयणासुं सगली मिली आय, उ० ।

चुम्मालीसमी ढाले थयो सुख्ख, कहे 'जिनहरष' टल्यां सहु दुख्ख, उ० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ७६५

दूहा—राति रही निय मंदिरे, जाया जणणी लेय। आयो दिन अणऊगते, निय दल मांहि वलेय ॥ १ ॥ प्रात थयो ऊगो दिवस, भाट भणे कल्याण। सेनानी तेडाविने, भासे इणपरि वाण ॥ २ ॥ दूत मोकली वेगसुं, राय करावो जाण। कंध कुहाडे आय मिले, जो राखे निज प्राण ॥ ३ ॥ तो लसकर पाछो वले, रहे ताहरी माम। आण न माने माहरी, तो कर मुझसुं संग्राम ॥ ४ ॥ सेनानी चर मोकल्यो, आव्यो जिहां भूपाल। अम्ह स्वामी बलीयो हठी, परतिख वयरी काल ॥ ५ ॥ कंध कुहाडो करि मिले, तो पाछो वले कटक्क। नहीं तो गढ ढंढोलस्ये, लेस्ये नगर झटक्क ६

ढाल ४५ मी. देशी "बे बे मुनिवर विहरण पांगुर्या रे" एहनी—दूत वयण सुणि उज्झेणी धणी रे, मनमां कीधो एह विचार रे। सबलांसुं बल मांडीने वृथा रे, कोण करावे लोक संहार रे, दू० ॥ १ ॥ कंध कुहाडो करि अवनीपती रे, सनमुख आवीने ततकाल रे। चतुर समयनो

दू० ॥२॥ चंपापति तव आवीयो सामुहो रे,
जाण प्रवीण ते रे, भेट्यो महाराजा श्रीपाल रे, दू० ॥३॥
सुसराने दीधो सनमान रे। कंध कुहाडो दूर नखावीयो रे, वे वेठा पासे राजान रे,
संतोप्यो सनमान्यो वहु परे रे, मालवपति चिंते मनमांइ रे। पार न दीसे एहनी रिद्धिनो
रे, एहसुं सरभर कहो किम थाइ रे, दू० ॥४॥ तात! तुम्हे वर मुझ दीधो हुतो रे, ते पर-
तिख जोइज्यो ए आज रे। कंध कुहाडो जेणे नखावीयो रे, ओलखिज्यो उंबर महाराज रे,
दू०॥५॥ मालवपति मनमां विस्मय थयो रे, वपु बपु जोइज्यो अचरिज एह रे। पुन्य सरिखो
जगमें को नहीं रे, एहने फलीयो पुन्य अछेह रे, दू०॥६॥ सीपो मयणा निरखी हरखीया रे,
मिलवा आव्या लोक अपार रे। सोहगसुंदरीने रूपसुंदरी रे, मिलिवा आव्यो सहु परिवार
रे, दू० ॥ ७ ॥ श्री श्रीपाल नरेसर तिणि समे रे, दीधो नाटकनो आदेस रे। नाटक वृंद
बुलावो माहरो रे, जोवे सहु नर नारि नरेस रे, दू० ॥८॥ नाटक आव्यो तिहां मिलि नाचवा रे,

पहिरी सुंदर चरणा चीर रे। कसमसता कंचू हीये कस्या रे, सोहे भूषण सयल सरीर रे, दू० ॥९॥ एक नारी लाजे साजे नहीं रे, ते विण न पडे नाटक रंग रे। मांहो मांहे अबला हाकिने रे, ऊठाडी तेहने मन भंग रे, दू० ॥१०॥ नाटकिणी पेठी ते नाचिवा रे, जोवा मिलीया राणो राण रे। दूहो एक कह्यो तिण अवसरे रे, मनमोहन मुखे मधुरी वाण रे, दू० ॥११॥ दूहो— "किहां मालव किहां शंखपुर, किहां बब्बर किहां नट्ट। सुरसुंदरी नचावीये, दैवे दल्या मरट्ट १" जणणी बाप श्रवणे दूहो सुणी रे, कुमरी नाचंती नयणे दीठ रे। नाटकणी थइ ए सुरसुंदरी रे, स्युं कीधो ए दैवे धीठ रे, दू० ॥ १२ ॥ सहू को देखी मन विस्मय थया रे, है है !!! जोवो एहना कर्म रे। ढाल थई ए पेंतालीसमी रे, कहे 'जिनहरष' खरो जिन धर्म रे, दू० ॥१३॥

दूहा—सभा मांहि जई कुमरीने, राणी कंठ विलग्ग। वात असंभव देखिने, दुख भरि रोवा लग्ग १ राय सुताने पूछीयो, ए स्यो तुझ सरूप। जोई परणाव्यो हुतो, तुझ मनमान्यो भूप २

वलतूं सुरसुंदरी कहे, पिता ! सुणो मुझ वात । परणी चाली कंतसुं, संखपुर नगर दिखात ३
उतरीया तिहां जई करी, रह्या वगडे बहु दीह । साथ सहू घर मोकल्यो, बेठा रह्या अबीह ४ मारो
मारो करती तिहां, आवी धाड अपार । नासिगयो मुझ नाहलो, मुझ मेल्ही निरधार ५ तिहां
झाली मुझ कोलीए, वेची जई नेपाल । मोल देई मालण ग्रही, तिणे वेची ततकाल ६ इम
वेचाती अनुक्रमे, एक विणजारे लीध । बब्बर देसे जाइने, गणिकाने घरे दीध ७ गणिका
नाटक सीखव्यो, हूं थई निपुण प्रवीण । नाटकणी मांहि सिरे, कला ग्रही अकुलीण ८

ढाल ४६ मी. देशी "मोरा साहिब हो" एहनी–हिवे बब्बर हो. नायक महाकाल कि,
नाटकनो रसीयो सही । वेश्याने हो. घरे नाटक साथ कि, तेडी तिणे सहू संग्रही । हि० ॥१॥
दिन दिन प्रति हो. नाटक नवरंग कि, राय करावे नवनवा । परणावी हो. कन्या निज भूप
कि, मयणसेना सुख आलवा । हि० ॥ २ ॥ धण कंचन हो. भूषण बहु दीध कि, मयणा पति

श्रीपालने। दीधा वली हो. नव नाटक वृंद कि, साथे मुझ निहालिने। हि० ॥३॥ में कीधा हो. नाटक बहुवार कि, मयणा पति आगे खडी। इहां देखी हो. माय बाप कुटंब कि, लज्जा दुख सायर पडी। हि०॥ ४ ॥ परणावी हो. आडंबर भूर कि, मान घणो मुझ बापनो। सुख सघलां हो. फीटी थयां दुख्ख कि, फल पाम्यो में पापनो। हि०॥५॥ मुझ बहिनी हो. मयणा धन धन्न कि, ए सरिखी जग को नही। दुख मिटीया हो. सुख पाम्या एह कि, सील फल्यो एहने सही। हि०॥६॥ कुल खंपणि हो. हूं थई कुलमांहि कि, सहु पापिणिमांहि पापिणी। में सेव्यो हो. बहु भांति कुसील कि, लही कमाई आपणी। हि० ॥ ७॥ सी दाखूं हो. मुझ कर्मनी वात कि, तुम्ह आगलि हिवे हूं कहु। पातकना हो. पुन्यना माइ बाप! कि, परतिख फल देखो सहु। हि० ॥ ८ ॥ श्रीपाले हो. अरिदमण कुमार कि, तेडाव्यो आदर करी। धण कंचण हो. आपी भरपूर कि, आपी वली सुरसुंदरी। हि० ॥ ९ ॥ सुरसुंदरी हो. अरि-

॥११०॥

दमण कुमार कि, समकित पाम्या निरमलो। पूरवली हो. परे थाप्यो राय कि, मतिसागर
मति ऊजलो। हि०॥१०॥ जे हुंता हो. कोढी सय सात कि, रोग गमी ठाकुर कीया। मोटानो
हो. जोवो उपगार कि, निज सरिखा करि थापीया। हि० ॥ ११ ॥ नव राणी हो. पटराणी
कीध कि, शृंगारसुंदरीनी सखी। पांचे वली हो. चवदे ए नारि कि, विलसे अपछर
सारिखी। हि०॥१२॥ नीसाणे हो. हिवे चलीयो राय कि, चंपा ऊपरि चालीयो। 'जिनहरषे'
हो. एतलो अधिकार कि, ढाल छेंतालीसमी कीयो। हि० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ८०५ ॥

दूहा—कटक सुभटना थट गरट, मिलीया एका एक। सुसरा साला मावला, रणवावला अनेक १
रण रसीया कसीया जरद, पहिर्या टोप किरीट। बगतर पहिर्या लोहमय, जाणे काला कीट ॥२
पाखरीया हय वर प्रघल, मद झरता गजराज। गयणंगण छायो गिरद, गोला नाल अवाज ३
इम चलतो चंपापुरी, आव्यो नृप श्रीपाल। भडयुद्धे नासंतां ग्रह्यो, अजितसेन ततकाल ॥४॥

राज लीयो निज भुजबले, बेठो पिता तखत्त। पामी अनुपम संपदा, मोटो जास वखत्त ॥ ५ ॥ लज्ञाणो राजा घणुं, मन धरतो विखवाद। नासंतां माहरो थयो, लोकां विचे अपवाद ॥ ६ ॥ अजितसेन मन चिंतवे, हूं हुओ द्रोही अपार। राज लीयो भत्रीजनो, चिंतवीयो अपकार ॥ ७ ॥ गोत्र द्रोहथी जस नहीं, नृपद्रोह नीति विणास । बाल द्रोहथी गति नहीं, त्रिण्हे कर्यां अभ्यास ॥८॥ हिवे दीक्षा जो आदरूं, पाळूं संयम सुद्ध। तो छूटूं ए पापथी, त्रूटे करम विरुद्ध ॥९॥ इम सुभ भाव विचारतां, चढतां मन परिणाम। ज्ञानावरणी कर्मनो, क्षयोपसम थयो ताम १०

ढाल ४७ मी. देशी हींडोलणानी— सुभ भावना मने भावतां. जातीसमरण उतपन्न, दैव वसे लीयो संजम. विशुद्ध जाणी रतन्न। सुमति सूधी गुपति पाले. दोष टाले दुष्ट, क्षमा सागर नमत नागर. चतुर चारित्र करे पुष्ट ॥ १ ॥ धन धन्न माई !. जे तजे इण परि क्रोध ॥ ए आंकणी ॥ महाज्ञानी महाध्यानी. अभयदानी जेह, भविकने उपगार करता. चरण करण गुण गेह । विच-

अजितसेन राजासे विजय प्राप्त करके अपने पिताकी राजधानी चंपा नगरीमें श्रीपालजी अपने सैनिकों सहित प्रवेश कर रहे हैं।



(पत्रांक ११२)



अवधिज्ञानी अजितसेन राजऋषि श्रीपालजी व मयणासुंदरी को धर्मोपदेश देते हुए पूर्वभवका स्वरूप सुना रहे हैं।

(पत्रांक ११३)

रता भूलोक ऊपरि. अजितसेन मुणिंद, आवीया चंपा नयरि अनुक्रमे. लोकने थयो आणंद, आवीयो आडंबरे करि. भाव ध० ॥ २ ॥ श्रीपाल सांभली सुगुरु आगम. वांदवा मनरंग, भगति अभंग । प्रदक्षिणा त्रिण्हे देइ वंदी. बेठो आगलि राय, देसना इक चित्त निसुणे. भापे मुनि निरमाय, ध०॥३॥ दोहिलो मानव भव चतुर गति. मांहि भमतां एह, देस आरज सुकुल उतपत्ति. सुगुरु संग लहेह । तत्त्वरुचि पिण दोहिली तिम. श्रवण आगम वाणि, धर्म उद्यम छोडि आलस. मानव करे सुख हाणि, ध० ॥४॥ धर्मनो संयोग पामी. कीजीये जिनधर्म, राज्य लीला सकल संपति. धर्मथी सिवसर्म । देसना मुनिराय दीधी. सांभली चितलाय, राय हिवे श्रीपाल पूछे. कहो ज्ञानी मुनिराय!, ध०॥५॥ किणे करमे बालरोगी?. हुवो किम नीरोग?, रिद्धि पामी एतली किम?. डूंबनो संयोग । केम सायर पड्यो कुसले. नीकल्यो कहो केम?, नारि परण्यो एह सुंदरि. ज्ञानी पूछयो मुनि एम, ध० ॥ ६ ॥ मुनि

रता भूलोक ऊपरि. अजितसेन मुणिंद, आवीया चंपा नयरि अनुक्रमे. लोकने थयो आणंद,
ध० ॥ २ ॥ श्रीपाल सांभली सुगुरु आगम. वांदवा मनरंग, आवीयो आडंबरे करि. भाव
भगति अभंग । प्रदक्षिणा त्रिण्हे देइ वंदी. बेठो आगलि राय, देसना इक चित्त निसुणे.
भापे मुनि निरमाय, ध०॥३॥ दोहिलो मानव भव चतुर गति. मांहि भमतां एह, देस आरज
सुकुल उतपत्ति. सुगुरु संग लहेह । तत्त्वरुचि पिण दोहिली तिम. श्रवण आगम वाणि,
धर्मनो संयोग पामी. कीजीये
धर्म उद्यम छोडि आलस. मानव करे सुख हाणि, ध० ॥४॥ धर्मनो संयोग पामी. कीजीये
जिनधर्म, राज्य लीला सकल संपति. धर्मथी सिवसर्म । देसना मुनिराय दीधी. सांभली
चितलाय, राय हिवे श्रीपाल पूछे. कहो ज्ञानी मुनिराय!, ध०॥५॥ किणे करमे बालरोगी ?.
हुवो किम नीरोग ?, रिद्धि पामी एतली किम ?. डूंबनो संयोग । केम सायर पड्यो कुसले.
नीकल्यो कहो केम ?, नारि परण्यो एह सुंदरि. ज्ञानी पूछ्यो मुनि एम, ध० ॥ ६ ॥ मुनि

कहे सांभल तूं नरेसर!. चतुर गति संसार, जीव कर्में लहे सुख दुख. जाणिजे निरधार । करे जेहवा कर्म प्राणी. तेहवा फलअंत, तिणे तूं हिवे ताहरा नृप!. सांभल कर्म वृतंत, ध० ॥ ७ ॥ इणे भरते हिरण्यपुर वर. सिरीकंत नरेस, श्रीमती राणी जग वखाणी. दया पाले विसेस । राय आखेटक निरंतर. भमे हणिवा जीव, नारि कहे प्रिय! जीव हणतां. पामीये दुख्ख अतीव, ध० ॥ ८ ॥ बीहता नासे त्रिणा मुखे ल्ये. क्षत्रि न हणे तास, वारीयो पिण कह्यो न करे. व्यसन लागो जास। उलंठ लेई सातसे. इक दिन आहेडे जाय, गहन वनमें निजरे पडीयो. खीणकाया मुनिराय, ध०॥९॥ हाथ ओघो देखी राजा. कहे चामर धार, कोई कोढी एह दीसे. सहु कह्यो तिणवार। यष्टि मुष्टि करिय ताड्यो. सातसे उलंठ, साधुने इम कष्ट दीधो. चीकणी बांधी गंठ, ध० ॥१०॥ मुनि भणी उपसर्ग करीने. मृग हणी सुख पाय, सात सयां वंठ उलंठ साथे. आवीयो घरे राय । वली इक दिन गयो मृगया. एकलो

नरनाह, नदीतटे इक साधु दीठो. नाखीयो सलिल अगाह, ध०॥११॥ नदीमांहे देखि दुखियो. थयो करुणावंत, नदीजलथी काढीयो मुनि. सुमतिवंत महंत। कह्यो निजकृत नारि आगे. रागिनी कहे एम, अवर जीव न पीडीये तो. पीडीये मुनिवर केम ?, ध० ॥१२॥ साधु हीला हानि थाये. हास्य रोगी जाणि, निंदा थकी वध बंधना वलि. ताडणादि पिछाणि। इम सुणी कांइक हीये आयो. धर्मनो परिणाम, ढाल सेंतालीसमी ए थई. 'जिनहरष' तमाम, ध०॥१३॥

दूहा–दिवस कितलेके गये, गोखे बेठो भूप। मल भूषित कृशकाय मुनि, दीठो एहवो रूप ॥१॥ सीख वयण गयो वीसरी, सेवकने कहे राय। नगर विटाल्यो डूंबडे, काढो परो धकाय २ तिणे पुरुषे तिमहीज कर्यो, श्रीमति राणी दीठ। कोप करी राजा प्रते, निभ्रंछे धिग धीठ ॥३॥ साधु भणी किम निंदीये, जे गिरुआ गुणवंत। तारे आपण आतमा, परने पिण तारंत ॥ ४ ॥

ढाल ४८ मी. देशी "धन धन श्रीरिषिराज अनाथी" एहनी– राणीने ओलंभे लाज्यो, ए में

सहुये नरसुर भवकरी, भोगवि अनुपम सुख्ख। नवमे भववलतांसही, लहिस्यो अविचलसुख्ख ३

ढाल ४९ मी. देशी "इम धन्नो धणने परचावे" एहनी-इण परे सुगुरु तणी सुणि वाणी, हरख्या राजा राणी रे। आराधे ऊलट मन आणी, सिद्धचक्र गुण खाणी रे, इ० ॥१॥ श्रीनवकार गुणे सुभ भावे, जिनवर पूजा रचावे रे। जैन धरमसुं निज चित्त लावे, जीर्णोद्धार करावे रे, इ० ॥ २ ॥ सामायिक पोषध व्रत पाले, कुमति कदाग्रह टाले रे। श्रीजिनवर मारग उजवाले, पापथकी मन वाले रे, इ० ॥ ३ ॥ इण परि सिद्धचक्र आराधी, चढती सुरगति बांधी रे। इण भव पिण एहवी रिद्धि लाधी, कीरति त्रिभुवन वाधी रे, इ० ॥४॥ राजा राणी माइ संजुत्ता, समकित गुण सुभ चित्ता रे। आयु पूरण करि सुरगति पत्ता, पाम्या भोग समत्ता रे, इ० ॥५॥ तिहां थकी चवि नर भव पामी, होस्ये सुर सुख कामी रे। च्यार वार इम सुर नर नामी, नवमे सहु सिद्धि गामी रे, इ० ॥६॥ धन धन जगमें श्रीपाल नरिंदा, मयणासुंदरी सुख कंदा रे। पाली

जिनवर आण अमंदा, काप्या भव भवना फंदा रे, इ० ॥७॥ इम श्रीपाल चरित्र मनरागे,
श्रेणिक नरवर आगे रे। कह्यो गोयम गणहर वडभागे, सांभलतां मति जागे रे, इ०॥८॥ तथा–
श्रीवीर वांदी श्रेणिक राय, नवपद महिमा सुणी हरखाय रे। आतम नवपद जाणो राय, तस
ध्याने ते स्वरूपी थाय रे ॥ १ ॥ एथी देवपाल पुंडरिक गणधर, पाम्या भवनो पार रे।
परदेशी राजा सुर अवतार, एम तार्या बहु नर नार रे ॥२॥ उक्तं च–"श्रीसिद्धचक्र आराधो,
मनवांछित कारज साधो रे, भवियां! श्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी। पद पहेले अरिहंत ध्यावो,
जेम अरिहंत पदवी पावो रे, भ० श्री० ॥ २ ॥ पद दूजे सिद्ध मनावो, जेम सिद्ध सरूपी होइ
जावो रे, भ० श्री० ॥ ३ ॥ सूरि त्रीजे गुणवंता, जसना एक जग जयवंता रे, भ० श्री० ॥ ४ ॥
चोथे पदे उवज्झाया, जेणे मारग आण बताया रे, भ० श्री० ॥ ५ ॥ साधु सकल गुण धारी,
पद पंचमे जग हितकारी रे, भ० श्री० ॥ ६ ॥ दरिसण पद छठ्ठे वंदो, जेम कीरति होय

॥११९॥

चिरनंदो रे, भ० श्री० ॥७॥ ज्ञान पद सातमे दाख्यो, चारित्र पद आठमें भाख्यो रे, भ० श्री० ॥८॥ तप पद नवमे साख्यो, जेम वीरजीने वचने राख्यो रे, भ० श्री० ॥९॥ श्रीपालने मयणा लीधो, नवमे भवे कारज सीधो रे, भ० श्री० ॥१०॥ नवपद महिमा जाणी, 'जिनचंद्र' हीये मन आणी रे, भ० श्री० ॥११॥" इम जाणी नवपदसुं राता, सिद्धचक्र जे ध्याता रे। नृप श्रीपाल तणी परे माता, रहे सदा सुख साता रे, इ० ॥९॥ संवत सतरेसे चालीसे, चैत्रादिक सुजगीसे रे। सातम सोमवार सुभ दिवसे, पाटण विसवा वीसे रे, इ० ॥ १० ॥ श्रीखरतर-गच्छ महिमा धारी, जिनचंदसूरि जय कारी रे। शांतिहरष वाचक सुखकारी, तास सीस सुविचारी रे, इ० ॥ ११ ॥ कहे 'जिनहरष' भविक नर सुणिज्यो, नवपद महिमा थुणिज्यो रे। उगुणपचासे ढाले गुणिज्यो, निज पातक वन लुणिज्यो रे, इ० १२सर्व गाथा ८६१

॥ इति श्रीसिद्धचक्र महिमोपरि श्री श्रीपाल महाराजाका रास समाप्त मंगलं भवतु ॥

नवपद ओली करण विधि यंत्र—

दिन क्रम	पदोंके नाम गुणणा	नवकरवाली	का०४ *	वर्ण	आहार
१	ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं	२०-१२†	१२	श्वेत	चॉवल
२	ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं	२०-८	८	लाल	गहुं
३	ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं	२०-३६	३६	पीलो	चणा
४	ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं	२०-२५	२५	नीलो	मूंग
५	ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं	२०-२७	२७	कालो	उडद
६	ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स	२०-५	६७	श्वेत	चॉवल
७	ॐ ह्रीं नमो नाणस्स	२०-५	५५	,,	,,
८	ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स	२०-१०	७०	,,	,,
९	ॐ ह्रीं नमो तवस्स	२०-२	५०	,,	,,

* १ [illegible] २, खमासमणोंकी ३, प्रदक्षिणाकी तथा ४ साथियोंकी संख्या।
† इन दिनोंमें तेरह हजार गुणना होता है।

नवपद ओलिकी विधि—

नवपद ओलीकी तपस्या शुभ मुहूर्त्तमें विधिपूर्वक गुरुमुखसे उच्चरे, बाद आसोज तथा चैत्रकी सुदि ७ से, जो कोइ तिथि तूटी होय तो ६ से ओर जो वधी होय तो ८ से पूनमतक ९ आंबिल पूरे करने, वर्षमें दो वखत करते साढेच्यार वर्षमें ९ ओली पूरी करनी; ओलीके दिनोंमें हमेशां नीचे लिखे मुजब कार्य करने—

१ सांझ सवेर दोनों वखत राइदेवसी प्रतिक्रमण, तथा पडिलेहण, एवं राइ आलोयणा पूर्वक द्वादशावर्तविधिसे गुरुवंदन करके गुरुमुखसे पच्चक्खाण करे।

२ नव मंदिरोंमें या नव प्रतिमाओंके आगे रोज नवपदके नव चैत्यवंदन करे।

३ त्रिकाल देवपूजा तथा दुपहरको[1] आठ थुइसे देववंदन करे।

1 यद्यपि रत्नसागरमे दोप्रतिक्रमणोंके शिवाय तीन वखत ८थुइसे देववदन करना लिखाहै, परतु ऐसे करनेसे पाच वखत देववंदन हो जाते हैं, शास्त्रोंमें पाच देववंदन नहीं लिखे, राइ देवसी प्रतिक्रमणके दो और एक दुपहरका ऐसे तिन ही लिखे है।

४ जिस पदके जितने गुणहो उतने साथिये करना, उतने खमासमणे तथा प्रदक्षिणा देना, उतने ही लोगस्सका काउस्सग्ग करना, एक एक प्रदक्षिणा तथा खमासमणा देके एक एक गुणका नमस्कार कहे ।

५ पदके गुणोंकी संख्यानुसार यंत्रमें लिखे मुजब अथवा हर एक पदका २००० दो हजार गुणणा (माला फेरना) करे ।

६ विधिपूर्वक पच्चक्खाण पारके एक उन्हा पाणी और एक खानेकी वस्तु, ऐसे दो द्रव्योंसे [1]आंबिल करे, बाद इरियावही-पडिकमके जयउ सामिय चैत्यवंदन करे ।

पडिलेहण विधि–[2]खमा० इरियावही, खमा० 'इच्छा०संदि०भ०! पडिलेहण [3]संदिसाउं !, इच्छं' खमा० 'इच्छा० संदि०! भ० ! [4]पडिलेहण करुं !, इच्छं' कहके खमा० देके मुहपत्ती पडिलेहे, इसीतरह २ खमा०देके 'अंगपडिलेहण संदिसाहुं !' तथा 'अंगपडिलेहण करुं !, इच्छं, कहके खमा० देके मुहपत्ती तथा कंदोरा धोतीया पडिलेहे, खमा० 'इच्छकारि भगवन् ! पसाओ करी पडिलेहणा

---

१ आवश्यक टीका निशीथ चूर्णि प्रत्याख्यानस्वरूपगाथा आदि प्राचीन शास्त्रकारोंने आविलमें एक अन्न और दूसरा पानी इन दो चीजोंके शिवाय तीसरी कोइ चीज लेना नहीं लिखा, देखो "दोहिं दव्वेहिं अंबिलं" निशीथ चूर्णि, तथा "जावइयं उवजुज्जइ, तावइयं भायणे गहेऊणं । जलनिब्बुड्डं काउं, भुत्तवं एस इत्थ विही ॥ १ ॥" अर्थ-जितना (अहार) चाहिये उतना भाजनमें लेकर पानीमें डुबाके खाना, यह आविलमें (आहारका) विधिहै (प्रत्याख्यानस्वरूपगाथा), इससे यह बात स्पष्टहै कि–आविलका पचक्खाण करके विविध वस्तुए खाना शास्त्र समत नहींहै, नवाग टीकाकार श्रीअभयदेवसूरिजी महाराज अनुत्तरोपपातिक-दशागकी टीकामें साफ लिखतेहैं कि–"आयंबिलं ति-शुद्धौदनादि" अर्थात्–जिसमें नमक (मीठा) वगेरह कुछभी न पडाहो वैसा शुद्ध ओदन (चॉवल) आदि आहार आविलके लायकहै । २ साझको–खमा० 'इच्छा० सदि० भ० ! वहुपडिपुन्ना पोरिसी' कहके । ३ साझको 'करु' । ४ साझको 'पोसहसाला प्रमार्जूं ?' कहे ।

खमा० 'इच्छा० संदि० भ०! उपधिमुहपत्ती पडिलेहुं?, इच्छं' कहके खमा० देके मुह-पडिलेहणेजी' कहके थापनाचार्य पडिलेहे, खमा० 'इच्छा० संदि० भ०! ओहि पडिलेहण संदिसाहुं?, इच्छं' खमा० 'इच्छा० संदि० भ०! ओहि पडिलेहण करुं?, इच्छं' कहके बाकी रहे सब कपडे पडिलेहे, काजा निकालके जयणासे परठे, खमा०देके इरियावही पडिक्कमे। खमा० 'इच्छा० संदि० भ०! चैत्यवंदन करुं?, इच्छं' कहके चैत्यवंदन तथा नमुत्थुणं कहे, खमा०

देववंदन विधि—खमा० देके 'इच्छा० संदि० भ०! चैत्यवंदन करुं?, इच्छं' कहके चैत्यवंदन कहे, बाद जं किंचि० नमुत्थुणं, अरिहंत-देके इरियावही, खमा० 'इच्छा० संदि० भ०! चैत्यवंदन करुं?, इच्छं' कहके चैत्यवंदन कहे, बाद जं किंचि० नमुत्थुणं कहके वैसे ही च्यार थुइसे देव वांदे, चेइआणं आदि कहते हुए देवसी पडिक्कमणेकी तरह च्यार थुइसे देव वांदे, फिर बैठकर नमुत्थुणं कहके वैसे ही च्यार थुइसे देव वांदे, बाद बैठकर नमुत्थुणं—जावंति चेइयाइं०—जावंत केवि साहू०—नमोऽर्हत्० कहके स्तवन तथा जय वीयराय कहे, बाद नमुत्थुणं कहके खमा० देके अविधि आशातना खमावे।

पच्चक्खाण पारण विधि—खमा० देके इरियावही पडिक्कमे, खमा० 'इच्छा० संदि० भग०! पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं?, इच्छं' कहके खमा० देके मुहपत्ती पडिलेहे, खमा० देके 'इच्छा० संदि० भ०! पच्चक्खाण पारुं?, यथा शक्ति' खमा० 'इच्छा० संदि० भ०! पच्चक्खाण पार्युं?, तहत्ति' कहके मुट्ठी बंध करके भूमि उपर स्थापे, बाद भावनागाथा आतीहो तो एक नवकार गिणके भावनागाथा बोले उपर १ नवकार गिणे, नहीं तो ३ नवकार गिणे, बाद खमा० देके चैत्यवंदन जय वीयराय तक करे, फिर २ खमा० पूर्वक सज्झायके आदेश मांगके आठ नवकारकी सज्झाय करे।

१ चैत्यवंदन न कहके सीधा ही नमुत्थुणं कहनेकाभी विधि है। २ चैत्यवंदन तथा सज्झाय करे बाद मुहपत्ती पडिलेहण आदि करनेकाभी विधि है।

पहले दिन अरिहंत पद आराधन विधि–सवेरे राइ प्रतिक्रमण, अरिहंत पद आराधन काउस्सग्ग १२ लोगस्सका तथा गुणणा माला २० या १२, सवेरकी पडिलेहण, गुरुवंदन, पच्चक्खाण, वासक्षेपपूजा, नव मंदिरादिमें नवपदके नव चैत्यवंदन करे।

अरिहंत पद चैत्यवंदन–जय जय श्रीअरिहंत भानु, भवि कमल विकाशी। लोकालोक अरूपि रूपि, समस्त वस्तु प्रकाशी ।१। समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल राशी। शुक्ल चरम शुचि पादसे, भयो वर अविनाशी । २ । अंतरंग रिपु गण हणीए, हुए अप्पा अरिहंत। तसु पद पंकजमें रहत, 'हीरधर्म' नित संत । ३ ।

स्तवन–"पूजो मनरली, हांहो दादा कुशलसूरिंद पू०" ए देशी–श्रीतेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं भंजे श्रीअरिहंत, मन! मानले। अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन, मन० ॥ १ ॥ बादर काये मन वच भोग, तनु तनुसे फुन दृढ योग, मन०। सूक्षम कायते मन वच रोक, निजविर्ये ताकुं कर फोक, मन० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने वाक्य प्रचार, मन०। आदि समय रह्यो पनक सुजीव, सूक्षम लह्यो तिण जोग अतीव, मन० ॥३॥ एसा योगथी समय एक, हीनासंख गुणो करी छेक, मन०। समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध, मन० ॥ ४ ॥ वेद समे अनाहारता पाय, 'कुशल' कहे ते श्रीजिनराय, मन०। तेरमे गुणमें गुण समे देव, आपो सा जगकूं नितमेव, मन० ॥ ५ ॥

थुइ–सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक सरूपो जी; केवल ज्ञानकी ज्योति प्रकाशक, अनंत गुणे करी पूरो जी। त्रीजे भव थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरो जी; बारे गुणां करी एहवा अरिहंत, आराधो गुण भूरो जी ॥ १ ॥

सिद्ध पद चैत्यवंदन–श्रीशैलेशी पूर्वप्रांत, तनु हीन तिभागी। पुव पओग पसंगसे, ऊरध गति जागी ॥ १ ॥ समय एकमें

लोक प्रांत, गये निगुण नीरागी। चेतन भूपे आतमरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसण नाणथी ए, रूपातीत स्वभाव। सिद्ध भये तसु 'हीरधर्म', वंद धरी शुभभाव ॥ ३ ॥

स्तवन–"थांरे महेलां ऊपर मेह झबूके वीजली, म्हारा लाल! झबूके०" ए देशी–अट्ट वरस नग मास, हीना कोडी पूर्वमें; म्हारालाल! हीना०। उत्कृष्टे करे वास, सयोगी धाममें; म्हारा० स० ॥ अजोगीके अंत, तजे भव भव्यता; म्हारा० त०। शैलेशी लहे स्पष्ट, दले गुणश्रेणिता; म्हारा० द० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल, रहे ते योगमें; म्हारा० र०। तेरस प्रकृतिनो अंत, करीने अंतमें; म्हारा० क० ॥ गमन करे नग रज्जसे, अक्रिय होयने; म्हारा० अ०। पुव्व पओग पसंग, स्वभाव अबंधने; म्हारा० स्व० ॥ २ ॥ इग्गु गुण नव परिमाण, जोजन लक्षे कही; म्हारा० जो०। वर्त्तुल विशदाभास, नीरालंबन सही; म्हारा० नी० ॥ मध्ये जोजन अट्ट, घनाकृति अंतमें; म्हारा० घ०। मक्षी पक्षथी हीन, भणी सिद्धांतमें; म्हारा० भ० ॥ ३ ॥ ततुपब्भारा नाम, शिलासे जोजने; म्हारा० शि०। लघु अंगुल बत्तीस, प्रमाण अवगाहना; म्हारा० प्र० ॥ वृद्ध धनु शत पंच, गुणांसे हीनता; म्हारा० गु०। मिलिया एककमेंऽनंत, आबाधा नालही; म्हारा० आ० ॥ ४ ॥ अट्ट प्राण धरि रम्य, सिरि ही जो सही; म्हारा० सि०। बीजो पद श्रीसिद्ध धरो मन गेहमें; म्हारा० ध० ॥ 'कुशल' भये जग जीव, मिलेगा तेहमें; म्हारा० मि० ॥ ५ ॥

थुइ–अट्ट करमकुं दमन करीने, गमन कियो शिववासी जी; अव्याबाध सादि अनादि, चिदानंद चिदरासी जी। परमातम पद पूरण विलासी, अघ घन दाघ विनासी जी; अनंत चतुष्टय शिवपद ध्यावो, केवलज्ञानी भासी जी ॥ १ ॥

आचार्य पद चैत्यवंदन–जिनपद कुलमुख रस अनिल, मित रस गुण धारी। प्रबल घन मोहकी, जिण तें चमुहारी ॥ १ ॥

ऋज्वादिक जिनराज गीत, नय तन विस्तारी । भवकूपे पापे पडत, जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारज पद सार । तिनकुं वंदे'हीरधर्म', अठोत्तर सो वार ॥ ३ ॥

स्तवन–"नणदल ! बींदली ल्ये" ए देशी–खंती खडगथी जेणें, हण्यो क्रोध सुभट सम देणे हो; गणपति गुणपेखी । मान महागिरि वयरे, अतिसोभन मद्दव वयरे हो; गण० ॥ १ ॥ दंभ रूप विषवेली, वर अज्जव कीले ठेली हो; गण० । मूर्च्छा वेलथी भरीयो, लोह सागर मुत्ते तरीयो हो; गण० ॥ २ ॥ मदन नाग मद हीनो, दम शम मंत्रे कीनो हो; गण० । मोह महा मल्ल ताड्यो, पुण वैराग मुग्गरे पाड्यो हो; गण० ॥ ३ ॥ दोषगयंद वस कीनो, धरी उपशम अंकुश लीनो हो; गण० ॥ अंतरंग रिपु भेद्या, सुरवर पिण जिण निषेध्या हो; गण० ॥ ४ ॥ रस कृति गुणथी लीनो, सूत्र अर्थे आगम पीनो हो; गण० । आचारज पद एहवो, धरी जीव! 'कुशल'ता सेवो हो; गण० ॥ ५ ॥

थुइ–पंचाचारकुं पाले उजवाले, दोष रहित गुण धारी जी; गुण छत्तीसे आगम धारी, द्वादश अंग विचारी जी । प्रबल सबल घन मोह हरणकुं, अनिल समो गुण वाणी जी; क्षमा सहित जे संजम पाले, आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥

उपाध्याय पद चैत्यवंदन–धन धन श्रीउवज्झाय राय, शठता घन भंजन। जिनवर दर्शित द्वादशांग, धर कृत जनरंजन ॥१॥ गुण वण भंजन मण गयंद, सुयश्रणि किय गंजण । कुणालंध लोय लोयणे, जत्थ य सुयमंजण ॥ २ ॥ महाप्राणमें जिन लह्योए, आगमसे पद तुर्य । तिनपे अहनिश 'हीरधर्म', वंदे पाठकवर्य ॥ ३ ॥

स्तवन–"सांवलिया ! अलगा रहोने" एदेशी–हुयने हुयने हुयने, दूरी हुयने; चेतन भॉखे शठने, दूरी हुयने । तूं मुझ

पाम मयुं आवे ?, दू०; तुझने कुण वतलावे ?, दू० ॥ ए आंकणी ॥ तो संगे निज पंचेंद्रीनो, रचना चरम भूलाणो । नाणावरणी
रमय उपशमसे, भावेंद्री मंडाणो; दू० ॥ १ ॥ द्रव्ये ते परजासे कीना, जाती नाम व्यपदेश । एवं तो गो तुरग गजादिक, किण
कर्मे उपदेश; दू० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुझकुं शंका, तेरे संगे लागी । नीलवरणकी समतासेती, में भयो तोसुं रागी; दू०
॥ ३ ॥ उप कहिये ढूंणीयो भवियानो, अधियां लाभत आय । आधीनां मन पीडा नामे, मायो येन विलाय; दू० ॥ ४ ॥
आधिक्ये स्मरीये वर आगम, सूत्रसे ते उवज्झाय । तत्सेवाते हणि सठताकुं, चेतन ! 'कुशल'ता थाय; दू० ॥ ५ ॥

गुरु–अंग इग्यारे चउदे पूरव, गुण पचवीसना धारी जी; सूत्र अरथ धर पाठक कहिये, जोग समाधि विचारी जी । तपगुण
सूत्र आगम पूरा, नय निक्षेपे तारी जी; मुनि गुण धारी बुध विस्तारी, पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥

साधुपद चैत्यवंदन–दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी । धर्म शुक्ल शुचि चक्रसे, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुण
पमत्त अपमत्तते, भवे अंतरजामी । मानस इंद्रिय दमनभूत, शम दम अभिरामी ॥ २ ॥ चारु तिघन गुणगण भर्योए, पंचम पद
मुनिराज । तत्पद पंकज नमतहं, 'हीरधर्म'के काज ॥ ३ ॥

स्तवन–"मालन मालन मती कहो" ए देशी–निःकपाया जग जन कहे, धारे चउ गति वसनसे रोष हो; मुणिंदजी ! । राग हीण
भय तूं करे, साहिबा ! शिव रमणीसे हेत हो मुणिंदजी ! ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहे, साहिबा ! छठे पूरव कोड हो; मु० । शत
सां गम आगम करे, साहिबा ! लघुकाले गुण आदि हो; मु० ॥ २ ॥ स्त्यानर्द्धी निद्रा उदे, पामे कर्म निकंद हो; मु० । प्रचला
निद्रामें रही, साहिबा ! बारम गुणनो वास हो; मु० ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख करे, साहिबा ! जो गुण संख्यातीत हो;

मु० । तो पिण तिण जगमें लही, साहिबा ! त्रिक घन गुणनी ख्यात हो; मु० ॥ ४ ॥ रयण त्रयसे शिवपथें, साहिबा ! साधन परवर जीव हो; मु० । साधु हवइ तसु धर्ममें, साहिबा ! 'कुशल' भवतु जगतीव हो; मु० ॥ ५ ॥

थुइ–सुमति गुपति कर संजम पाले, दोष बयांलिस टाले जी; षट्काया गोकुल रखवाले, नवविध ब्रह्मव्रत पाले जी । पंच महाव्रत सुधा पाले, धर्म सुकल उजवाले जी; क्षपक श्रेणि करी कर्म खपावे, दमपद गुण उपजावे जी ॥ १ ॥

दर्शनपद चैत्यवंदन–हुय पुग्गल परिअट्ट, अद्धपरिमित संसार । गंठि भेद तव करी लहे, सव गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायिक वेदक शशि असंख, उवसम पणवार । विना जेण चारित्र नाण, नहीं हुवे शिवदातार ॥ २ ॥ श्रीदेव गुरु धर्मनीए, रुचि लच्छन अभिराम । दर्शनकुं गणि 'हीरधर्म', अहनिश करत प्रणाम ॥ ३ ॥

स्तवन–"रामचंद्रके बाग, आंबो मोहि रह्यो री" एदेशी–देव श्रीजिनराज, गुरु ते साधु भण्यो री। धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधिलाभके काज, सप्तम नरक भलो री । तेण विना सुरलोक, ताते आधिक बुरो री ॥ २ ॥ मिथ्या तापे तप्त, बोधही छाँह लहे री । उपशम क्षायिक वेदक, ईश्वर तीन कह्यो री ॥ ३ ॥ भवसागर है अपार, फुन अस्ताघ कह्यो री । जसु लाभे ते होय, गोसपद मात्र खरो री ॥४॥ यदभावे अप्रमाण, नाण चारित्त भलो री। बोध धर्ममें जीव, लाभें 'कुशल' कलो री ॥५॥

थुइ–जिण पण्णत्त तत्त सुधा सरधे, समकित गुण उजवाले जी; भेद छेद करी आतम निरखी, पशु टाली सुर पा(था)वे जी । प्रत्याख्याने सम तुल्य भाँख्यो, गणधर अरिहंत सूरा जी; ए दर्शन पद नितनित वंदो, भवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥

ज्ञान पद चैत्यवंदन–क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदिम नाण । भाव मिलापसे जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥

मन-गुण पज्जव ओहि दोय, मण लोचन नाण । लोकालोक सरूप जाण, इक केवल भाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथीए, चेतन नाण प्रकाश । सप्तम पदमें 'हीरधर्म', नित चाहत अवकाश ॥ ३ ॥

स्तवन-"म्हारे अति उच्छरंगे" ए देशी-जिनवर भाषित आगम भणिया, तत्त्व यथास्थिति गमिया जी; म्हारे जगजन तारू । ते उत्तम वर नाण कहिये, भविजन अहनिशि चाहे जी; म्हारे जगजन तारू ॥ १ ॥ भक्ष्याभक्ष्य कुपंथ सुपंथा, पेयापेय अग्रंथा जी; म्हारे० । देव कुदेव अहित हित धारी, जाणे जेण विचारी जी; म्हारे० ॥ २ ॥ श्रुत मति दोय छे इंद्री सारू, तेणे परोक्ष विचारू जी; म्हारे० । ओहि मण केवल है वारु, जीव परतक्ष सुधारू जी, म्हारे० ॥ ३ ॥ अज्ञवि जस्स बले जग जाणे, लोकादिक अनुमाने जी; म्हारे० । त्रिभुवन पूजे जासु पसाये, धारी शुभ अध्यवसाये जी; म्हारे० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणकुं विलसे जी; म्हारे० । सप्तम पदमें भविजन हरखे, निशदिन 'कुशल'ता निरखे जी; म्हारे० ॥ ५ ॥

थुई-मति श्रुत इंद्रि जनित कहिये, लहिये गुण गंभीरो जी; आतमधारी गणधर विचारी, द्वादश अंग विस्तारो जी । अवधि मनपर्यव केवल, प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी; ए पांच ज्ञानकुं वंदो पूजो, भविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥

चारित्र पद चैत्यवंदन-जस्स पसाये साहु पाय, जुग जुग समितेंद । नमन करे शुभ भाव लाय, फुण नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपे धुरि अरिहंतराय, करी कर्म निकंद । समिति पंच तिगुप्ति युत, देवे सुक्ख अमंद ॥ २ ॥ इपु कृति मान कषायथीए, रहित लेश शुचिवंत । जीव चरित्रकुं 'हीरधर्म', नमन करत नितसंत ॥ ३ ॥

स्तवन-निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाभास निस्संग; सुज्ञानी ! सांभलो । मूर्ती हीन चेतन करे, रूपी पुदगल रंग; सुज्ञानी !

सांभलो ॥ १ ॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण भाव; सु० । कृत्वा जोग सुधामता, लब्धासंख स्वभाव; सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोगमें, वृद्धि लहे जुगमान; सु० । मध्ये वसु समये लहे, अंते द्वौ ते जाण; सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानस मुखा, कारण रम्य वलेण; सु० । आशा घस्र प्रकारता, सप्त प्राभृतका तेण; सु० ॥ ४ ॥ तद्रोधन रूपी भलो, चेतन संयम धाम; सु० । कर घन मिल पद धर्ममें, 'कुशल' भवतु अभिराम; सु० ॥ ५ ॥

थुइ–करम अपचय दूर खपावे, आतम ध्यान लगावे जी; बारे भावना सूधी भावे, सागर पार उतारे जी । षटखंड राजकुं दूर तजीने, चक्री संजम धारे जी; एहवो चारित्र पद नित वंदो, आतम गुण हितकारे जी ॥ १ ॥

तप पद चैत्यवंदन–श्रीऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण । विहि अंतैरपि बाह्य मध्य, द्वादश परिमाण ॥ १ ॥ वसु कर मित आमोसही, आदिक लब्धि निदान । भेदे समता युत खिणे, द्दग्घन कर्म विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतप पद भलोए, इच्छा-रोध सरूप । वंदनसे नित 'हीरधर्म !', दूर भवतु भवकूप ॥ ३ ॥

स्तवन–बारस भेद भण्या जिनराजे, बाह्य मध्य तणा जग काजे रे; शिवपद श्रेणि । तिण भव सिद्धि तणा वर ज्ञाता, जिनवर पिण तपना कर्ता रे; शिवपद श्रेणि ॥ १ ॥ समता सहिते जिन ते भारी, भली कर्म चमु पिण हारी रे; शिव० । जीव कनकसे कर्म कचोरा, दहे तप पावकका जोरा रे; शिव० ॥ २ ॥ तप तरुवरना कुसुम है ऋद्धि, देवनरना फल ते सिद्धी रे, शिव० ! पाप सकल है तमनी रासी, तप भानुसे जाये नासी रे; शिव० ॥ ३ ॥ जस्स पसाये लहिये चारू, लब्धि सगली जगहित कारू रे;

कीना रे; शिव० ॥ ४ ॥ इच्छा रोधन रूपी कहिये, तप पदही चेतन
शिव० । अतिदुष्कर पुण साध्यता हीना, काम ताते वारू कीना रे; शिव० ॥ ५ ॥
वदिये रे; शिव० । पाठक 'हीरधर्म' कृपासे, नवपद 'कुशला'कुं भासे रे; शिव० ॥ ५ ॥

थुइ—इच्छा रोधन तपते भॉख्यो, आगम तेहनो साखी जी; द्रव्य भावसे द्वादश दाखी, जोग समाधि राखी जी । चेतन निजगुण परिणति पेखे, तेहिज तप गुण दाखी जी; लब्धि सकलनो कारण देखी, 'ईश्वर'सेमुख भॉखी जी ॥ १ ॥

बादमें अष्टद्रव्यसे जिनपूजा स्नात्रादि करके १२ साथिये करे, १२ प्रदक्षिणा तथा खमासमणे देता हुआ आगे लिखे नमस्कार बोले.

अरिहंत पदके १२ गुणोंके खमासमण— नमस्कार—

१ अशोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
४ चामर युग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
५ स्वर्ण सिंहासन प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
६ भामंडल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
७ दुंदुभि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
८ छत्र त्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
१० पूजातिशय संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
११ वचनातिशय संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
१२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।

मध्याह्नमें ८ थुइसे देववंदन, पच्चक्खाण पारना, आंबिल करना, फिर चैत्यवंदन, तीजे पहोरकी पडिलेहण, संध्याको देवदर्शन आरति, देवसी प्रतिक्रमण करे बाद राइसंथारा पोरिसी भणाके सोवे ।

पहले दिनकी तरहही आगेके आठों दिन प्रतिक्रमण पडिलेहण तथा नव मंदिरादिमें नवपदके नव चैत्यवंदनादि विधि करना, फक्त जिस दिन जो पद होवे उस पदके जितने खमासमणे हो उतने लोग्गस्सका काउस्सग्ग करना. उतनी प्रदक्षिणा तथा खमासमणे देना, इतनाही फरक है, इसलिये आगेके दिनोंकी विस्तृत विधि न लिखके केवल खमासमणे दीठ कहनेके नमस्कार ही लिखते हैं—

सिद्ध पदके ८ गुणोंके खमासमण–नमस्कार—

१ अनंत ज्ञान संयुताय श्रीसिद्धाय नमः । २ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसिद्धाय नमः ।
३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसिद्धाय नमः । ४ अनंत चारित्र गुण संयुताय श्रीसिद्धाय नमः ।
५ अक्षय स्थिति गुण संयुताय श्रीसिद्धाय नमः । ६ अरूपि निरंजन गुण संयुताय श्रीसिद्धाय नमः ।
७ अगरुलघु गुण संयुताय श्रीसिद्धाय नमः । ८ अनंत वीर्य गुण संयुताय श्रीसिद्धाय नमः ।

आचार्यके ३६ गुणोंके खमासमण–नमस्कार—

१ प्रतिरूप गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः । २ सूर्यवत्तेजस्वि गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
३ युगप्रधानागम गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः । ४ मधुरवाक्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
५ गांभीर्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः । ६ धैर्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
७ उपदेश गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः । ८ अपरिश्रावी गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
९ सौम्य प्रकृति गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः । १० शील गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।

११ अविग्रह गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
१२ अविकथक गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
१३ अचपल गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
१४ प्रसन्न वदन गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
१५ क्षमा गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
१६ मृदु गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
१७ ऋजु गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
१८ सर्वसंग मुक्ति गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
१९ द्वादशविध तपो गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
२० सप्तदशविध संयम गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
२१ सत्यव्रत गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
२२ शौच गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
२३ अकिंचन गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
२४ ब्रह्मचर्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
२५ अनित्य भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः ।
२६ अशरण भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः ।
२७ संसारस्वरूप भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः ।
२८ एकत्व भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः ।
२९ अन्यत्व भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः ।
३० अशुचि भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः ।
३१ आश्रव भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः ।
३२ संवर भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः
३३ निर्जरा भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः ।
३४ लोकस्वरूप भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः ।
३५ बोधिदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः ।
३६ धर्मदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआचार्याय नमः ।

उपाध्याय पदके २५ गुणोंके खमासमण-नमस्कार—

१ श्रीआचारांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। २ श्रीसूयगडांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
३ श्रीठाणांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। ४ श्रीसमवायांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
५ श्रीभगवती सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। ६ श्रीज्ञाताधर्मकथांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
७ श्रीउपासकदशांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय०। ८ श्रीअंतगडदशांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः
९ श्रीअणुत्तरोववाइयदशांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपा० १० श्रीप्रश्नव्याकरणांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय०
११ श्रीविपाक सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। १२ श्रीउत्पादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
१३ श्रीअग्रायणीपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। १४ श्रीवीर्यप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः
१५ अस्तिप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। १६ ज्ञानप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः
१७ सत्यप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। १८ आत्मप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
१९ कर्मप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। २० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
२१ विद्याप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। २२ अविंध्य(कल्याण)प्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्या०
२३ प्राणा(वाय)यामप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपा०। २४ क्रियाविशालपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
२५ लोकबिंदुसार पूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।

साधु पदके २७ गुणोंके खमासमण-नमस्कार—

१ प्राणातिपात विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
२ मृषावाद विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
३ अदत्तादान विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
४ मैथुन विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
५ परिग्रह विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
६ रात्रि भोजन विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१० वाउकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१३ एकेंद्रिय जीव रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१४ बेइंद्रिय जीव रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१५ तेइंद्रिय जीव रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१६ चउरिंद्रिय जीव रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१७ पंचेंद्रिय जीव रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१८ लोभ निग्रह कारकाय श्रीसाधवे नमः ।
१९ क्षमा गुण युक्ताय श्रीसाधवे नमः ।
२० शुभ भावना भावकाय श्रीसाधवे नमः ।
२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसाधवे नमः ।
२२ संयम योग युक्ताय श्रीसाधवे नमः ।
२३ मनोगुप्ति संयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ।
२४ वचन गुप्ति संयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ।

२५ कायगुप्ति संयुक्ताय श्रीसाधवे नमः । २६ शीतादि द्वाविंशति परीषह सहन तत्पराय श्रीसाधवे नमः ।
२७ मरणांत उपसर्ग सहन तत्पराय श्रीसाधवे नमः ।

दर्शन पदके ६७ गुणोंके खमासमण–नमस्कार—

१ परमार्थ संस्तवरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । २ परमार्थ ज्ञातृ सेवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । ४ कुदर्शन वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
५ शुश्रूषारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । ६ धर्मरागरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
७ वैयावृत्यरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । ८ अर्हद्विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
९ सिद्ध विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । १० चैत्य विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
११ श्रुत विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । १२ धर्म विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
१३ साधुवर्ग विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । १४ आचार्य विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
१५ उपाध्याय विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । १६ प्रवचन विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
१७ दर्शन विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । १८ "संसारे जिनः सार" इति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
१९ "संसारे जिनमतं सारं" इति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । २० संसारे जिनमतस्थित साध्वादिसारं इति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शना०
२१ शंका दूषण रहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः । २२ कांक्षा दूषण रहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

२३ विचिकित्सा दूषण रहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२४ कुदृष्टि प्रशंसा दूषण रहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२६ प्रवचन प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२७ धर्मकथा प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२८ वादि प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२९ नैमित्तिक प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३० तपस्वि प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३१ प्रज्ञप्त्यादि विद्याभृत्प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३२ चूर्णांजनादि सिद्ध प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३३ कवि प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३४ जिनशासने कौशल्य भूपणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३५ प्रभावना भूपणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३६ तीर्थसेवा भूपणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३७ धैर्य भूपणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३८ जिनशासने भक्तिभूपणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३९ उपशम गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४० संवेग गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४३ आस्तिक्य गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४४ परतीर्थिकादि वंदन वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४५ परतीर्थिकादि नमस्कार वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४६ परतीर्थिकादि आलाप वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४७ परतीर्थिकादि संलाप वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४८ परतीर्थिकादि आसनादि दान वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४९ परतीर्थिकादि गंधपुष्पादि प्रेपणवर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः।
५० राजाभियोगाकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

५१ गणाभियोगाकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

५२ बलाभियोगाकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

५३ सुराभियोगाकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

५४ कांतारवृत्त्याकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

५५ गुरुनिग्रहाकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

५६ सम्यक्त्वं चारित्र धर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः।

५७ सम्यक्त्वं चारित्र धर्मपुरस्य द्वारमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शना०

५८ सम्यक्त्वं चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय०

५९ सम्यक्त्वं चारित्र धर्मस्याधारमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय०

६० सम्यक्त्वं चारित्र धर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय०

६१ सम्यक्त्वं चारित्र धर्मस्य निधिसन्निभमिति चिंतनरूप श्रीस०

६२ अस्ति जीव इति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

६३ स च जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय० ।

६४ स च जीवः कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्०न० ।

६५ स च जीवः कर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीस०

६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय०

६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

ज्ञान पदके ५१ गुणों (भेदों)के खमासमण—नमस्कार—

१ स्पर्शनेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।

२ रसनेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।

३ घ्राणेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।

४ श्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।

५ स्पर्शनेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।

६ रसनेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।

७ घ्राणेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।

८ चक्षुरिंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।

९ श्रोत्रेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
११ स्पर्शनेंद्रिय ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१३ घ्राणेंद्रिय ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१५ श्रोत्रेंद्रिय ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१७ स्पर्शनेंद्रिय अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१९ घ्राणेंद्रिय अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२१ श्रोत्रेंद्रिय अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२३ स्पर्शनेंद्रिय धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२५ घ्राणेंद्रिय धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२७ श्रोत्रेंद्रिय धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२९ श्रीअक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
३१ श्रीसंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
३३ श्रीसम्यक् श्रुतज्ञानाय नमः ।
३५ श्रीसादि श्रुतज्ञानाय नमः ।

१० मनो अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१२ रसनेंद्रिय ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१४ चक्षुरिंद्रिय ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१६ मन ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१८ रसनेंद्रिय अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२० चक्षुरिंद्रिय अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२२ मन अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२४ रसनेंद्रिय धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२६ चक्षुरिंद्रिय धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२८ मनो धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
३० श्रीअनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
३२ श्रीअसंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
३४ श्रीमिथ्या श्रुतज्ञानाय नमः ।
३६ श्रीअनादि श्रुतज्ञानाय नमः ।

३७ श्रीसपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः । ३८ श्रीअपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः ।
३९ श्रीगमिक श्रुतज्ञानाय नमः । ४० श्रीअगमिक श्रुतज्ञानाय नमः
४१ श्रीअंगप्रविष्ट श्रुतज्ञानाय नमः । ४२ श्रीअनंगप्रविष्ट श्रुत ज्ञानाय नमः ।
४३ श्रीअनुगामि अवधिज्ञानाय नमः । ४४ श्रीअननुगामि अवधिज्ञानाय नमः ।
४५ श्रीवर्द्धमान अवधिज्ञानाय नमः । ४६ श्रीहीयमान अवधिज्ञानाय नमः ।
४७ श्रीप्रतिपाति अवधिज्ञानाय नमः । ४८ श्रीअप्रतिपाति अवधिज्ञानाय नमः ।
४९ श्रीऋजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः । ५० श्रीविपुलमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ।
५१ लोकालोक प्रकाशकाय श्रीकेवलज्ञानाय नमः ।

चारित्र पदके ७० गुणों (भेदों) के खमासमण—नमस्कार—

१ प्राणातिपात विरमणरूप श्रीचारित्राय नमः । २ मृषावाद विरमणरूप श्रीचारित्राय नमः ।
३ अदत्तादान विरमणरूप श्रीचारित्राय नमः । ४ मैथुन विरमणरूप श्रीचारित्राय नमः ।
५ परिग्रह विरमणरूप श्रीचारित्राय नमः । ६ क्षमा धर्मरूप श्रीचारित्राय नमः ।
७ आर्जव धर्मरूप श्रीचारित्राय नमः । ८ मृदुता धर्मरूप श्रीचारित्राय नमः ।
९ मुक्ति धर्मरूप श्रीचारित्राय नमः । १० तपो धर्मरूप श्रीचारित्राय नमः ।

११ संयम धर्मरूप श्रीचारित्राय नमः ।
१३ शौच धर्मरूप श्रीचारित्राय नमः ।
१५ ब्रह्मचर्य धर्मरूप श्रीचारित्राय नमः ।
१७ उदक रक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
१९ वाउ रक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
२१ बेइंद्रिय रक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
२३ चौरिंद्रिय रक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
२५ अजीव रक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
२७ उपेक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
२९ प्रमार्जन संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
३१ वाक्संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
३३ आचार्य वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः ।
३५ तपस्वि वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः ।
३७ ग्लान साधु वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः ।

१२ सत्य धर्मरूप श्रीचारित्राय नमः ।
१४ अकिंचन धर्मरूप श्रीचारित्राय नमः ।
१६ पृथ्वी रक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
१८ तेउ रक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
२० वनस्पति रक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
२२ तेइंद्रिय रक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
२४ पंचेंद्रिय रक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
२६ प्रेक्षा संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
२८ अतिरिक्त वस्त्रभक्तादि परठवण संयमरूप श्रीचारि०
३० मनः संयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
३२ कायसंयमरूप श्रीचारित्राय नमः ।
३४ उपाध्याय वैयावृत्य रूप श्रीचारित्राय नमः ।
३६ लघुशिष्यादि वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः ।
३८ साधु वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः ।

३९ श्रमणोपासक वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः । ४० संघ वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः ।
४१ कुल वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः । ४२ गण वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः ।
४३ पशुपंडगादिरहितवसतिवसनब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः। ४४ स्त्रीहास्यादि विकथा वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः ।
४५ स्त्रीआसन वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः । ४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः ।
४७ कुड्यंतरस्थित स्त्रीहावभाव सुणन वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारि० ४८ पूर्वभुक्त स्त्रीसंभोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः।
४९ अतिसरस आहार वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः । ५० अतिआहार वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः ।
५१ अंगविभूषा वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः । ५२ अनशन तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
५३ ऊनोदरी तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ५४ वृत्तिसंक्षेप तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
५५ रसत्याग तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ५६ कायकिलेस तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
५७ संलेषणा तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ५८ प्रायश्चित्त तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
५९ विनय तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ६० वेयावच्च तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
६१ सज्झाय तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ६२ ध्यान तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
६३ कायोत्सर्ग तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ६४ अनंत ज्ञान संयुक्त श्रीचारित्राय नमः ।
६५ अनंत दर्शन संयुक्त श्रीचारित्राय नमः । ६६ अनंत चारित्र संयुक्त श्रीचारित्राय नमः ।

६७ क्रोधनिग्रह करणरूप श्रीचारित्राय नमः ।
६८ माननिग्रह करणरूप श्रीचारित्राय नमः ।
६९ माया निग्रह करणरूप श्रीचारित्राय नमः ।
७० लोभनिग्रह करणरूप श्रीचारित्राय नमः

तप पदके ५० गुणों (भेदों)के खमासमण-नमस्कार—

१ यावत्कथिक तपसे नमः ।
२ इत्वरिक तपसे नमः ।
३ बाह्य ऊनोदरी तपसे नमः ।
४ अभ्यंतर ऊनोदरी तपसे नमः ।
५ द्रव्यतः वृत्तिसंक्षेप तपसे नमः ।
६ क्षेत्रतः वृत्तिसंक्षेप तपसे नमः ।
७ कालतः वृत्तिसंक्षेप तपसे नमः ।
८ भावतः वृत्तिसंक्षेप तपसे नमः ।
९ कायकिलेस तपसे नमः ।
१० रसत्याग तपसे नमः ।
११ इंद्रिय कषाय योग विषयक संलीनता तपसे नमः ।
१२ स्त्री पशु पंडकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीनता तपसे नमः।
१३ आलोयण प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१४ पडिक्कमण प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१६ विवेक प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१७ उत्सर्ग प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१८ तपः प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१९ छेद प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
२० मूल प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
२१ अनवस्थित प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
२२ पारंचिय प्रायश्चित्त तपसे नमः ।

२३ ज्ञानविनयरूप तपसे नमः ।
२४ दर्शन विनयरूप तपसे नमः ।
२५ चारित्र विनयरूप तपसे नमः ।
२६ गुर्वादिकं प्रति (शुभ मनः प्रवृत्ति) विनयरूप तपसे नमः ।
२७ गुर्वादिकं प्रति (शुभ वचन प्रवृत्ति) विनयरूप तपसे नमः ।
२८ गुर्वादिकं प्रति (शुभ काय प्रवृत्ति) विनयरूप तपसे नमः ।
२९ औपचारिक विनयरूप तपसे नमः ।
३० आचार्य वेयावच्च तपसे नमः ।
३१ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नमः ।
३२ साधु वेयावच्च तपसे नमः ।
३३ तपस्वि वेयावच्च तपसे नमः ।
३४ लघु शिष्यादि वेयावच्च तपसे नमः ।
३५ गिलाण साधु वेयावच्च तपसे नमः ।
३६ श्रमणोपासक वेयावच्च तपसे नमः ।
३७ संघ वेयावच्च तपसे नमः ।
३८ कुल वेयावच्च तपसे नमः ।
३९ गण वेयावच्च तपसे नमः ।
४० वायणा तपसे नमः ।
४१ पृच्छना तपसे नमः ।
४२ परावर्त्तना तपसे नमः ।
४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ।
४४ धर्मकथा तपसे नमः ।
४५ आर्त्तध्यान निवृत्ति तपसे नमः ।
४६ रौद्रध्यान निवृत्ति तपसे नमः ।
४७ धर्मध्यान चिंतन तपसे नमः ।
४८ शुक्लध्यान चिंतन तपसे नमः ।
४९ बाह्य उपसर्ग सहनरूप तपसे नमः ।
५० अभ्यंतर उपसर्ग सहनरूप तपसे नमः ।